



SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

गोपाद्रो

29वां अंक : 2023-24



कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-प्रथम)
मध्य प्रदेश, ग्वालियर

बेहट : तानसेन की जन्म स्थली



अकबर के नौ रत्नों में गिने जाने वाले सुर सम्राट तानसेन का जन्म मध्य प्रदेश के ग्वालियर से 45 किलोमीटर दूर बेहट गांव में श्री मकरंद पांडे के यहां हुआ था। तानसेन का असली नाम तनसुख उर्फ त्रिलोचन था, लेकिन गांव के साथी उन्हें तन्ना के नाम से भी बुलाते थे जो कालांतर में तानसेन के नाम से प्रचलित हो गया। तानसेन को बचपन से ही संगीत का बेहद शौक था। ऐसा कहा जाता है कि तानसेन बचपन से बकरियां चराते थे और रोज बकरी का दूध झिलमिल नदी के किनारे बने भगवान भोलेनाथ के मंदिर पर चढ़ाते थे और इसी मंदिर पर बैठकर वह स्वर साधना करते थे। एक बार तानसेन भगवान शिव पर दूध चढ़ाना भूल गए, लेकिन जब शाम को खाना खाते समय उन्हें याद आया तो अपना खाना छोड़कर सीधे दूध चढ़ाने के लिए मंदिर की ओर निकल पड़े। उस समय झमाझम बारिश हो रही थी और भीगते हुए जब वह मंदिर पहुंचे तो प्रसन्न होकर भगवान भोलेनाथ ने उन्हें दर्शन दिए और संगीत साधना का आशीर्वाद दिया।

मान्यता है कि भगवान भोलेनाथ के आशीर्वाद के बाद तानसेन ने अपनी संगीत साधना के दौरान ऐसा आलाप लगाया कि उसके प्रभाव से यह मंदिर ही टेढ़ा हो गया। शिवजी का यह मंदिर आज भी वैसा ही है और एक तरफ झुका हुआ है। इसके बाद उनकी संगीत की ख्याति लगातार बढ़ती गई। उनके पिता तानसेन को लेकर ग्वालियर में मोहम्मद गौस के पास पहुंचे, उन्हें पूरा हाल बताया तो उन्होंने उसे वहीं रखकर संगीत की शिक्षा देना शुरू कर दी। बाद में उन्होंने वृंदावन में हरिदास महाराज से शास्त्रीय संगीत के गुर सीखे। इसके बाद तानसेन ने राजा मानसिंह के दरबार के मुख्य संगीतज्ञ बैजू बावरा से भी शिक्षा ली और धीरे-धीरे तानसेन पूरी दुनिया में स्वर सम्राट के रूप में विख्यात हो गए। कहते हैं कि जब तानसेन संगीत की आलाप लगाते थे उस दौरान भरी गर्मी में भी बारिश होने लगती थी और पशु एवं पक्षी उनके संगीत को सुनने के लिए उनके पास बैठ जाया करते थे।



SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

गोपाद्री

29वां अंक : 2023-24

संरक्षक

प्रिया पारिख
महालेखाकार



प्रकाशक

डॉ. दीन दयाल वर्मा
वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)



संपादक

स्वर्णलता गुप्ता
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
हिंदी कक्ष

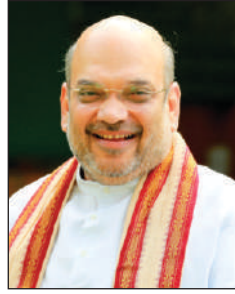
संजीव कुमार झांजी
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
हिंदी कक्ष

विजय सिंह मीना
वरिष्ठ लेखापरीक्षक
हिंदी कक्ष

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक के हैं, उनसे कार्यालय अथवा संपादक मंडल की सहमति आवश्यक नहीं है।
अपना लेख एवं सुझाव वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी, हिंदी कक्ष, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-प्रथम) मध्य प्रदेश, ऑडिट भवन,
झाँसी रोड, ग्वालियर - 474002 को भेजें।

अनुक्रमणिका

क्र.	रचना/लेख/व्यंग्य	रचनाकार/लेखक	पृष्ठ संख्या
1.	संदेश	-	
2.	प्रकाशकीय	-	
3.	संपादकीय	-	
4.	जिम्मेदारी-एक एहसास	धनंजय कुमार	01
5.	अंतर्द्वंद्व	मनोज कुमार सिंह श्योरान	04
6.	वृद्धाश्रम : नया चलन	स्वर्णलता गुप्ता	05
7.	मेरा शहर अजनबी हो गया	अखिलेश चंद्र वाजपेयी	08
8.	नशा : खुशी या खुदकुशी	अर्चना मानव	09
9.	बैजाबाई : एक कुशल प्रशासक एवं राजनीतिज्ञ	सारिका शर्मा	10
10.	हे भगवान! मुझे मेरा बचपन लौटा दे	विजय सिंह मीना	12
11.	कार्यालय में हिंदी भाषा में होने वाली स्वाभाविक त्रुटियां	निधि गौतम	13
12.	स्वतंत्रता सेनानियों का राजभाषा हिंदी में योगदान	विजय सिंह मीना	15
13.	वो मजदूर की बेटी	स्वर्णलता गुप्ता	18
14.	पचमढ़ी : सतपुड़ा की रानी	माधवी मुजुमदार	19
15.	आओ थोड़ा मनन करें	विजय सुगंधी	21
16.	कश्मीर की यात्रा	शाहमीर खान	22
17.	नारी	शिवानी गुप्ता	25
18.	मेरी अंडमान यात्रा	अशोक कुमार यादव	26
19.	मेरा पहला स्कूल	निधि गौतम	29
20.	किस्सा-ए-कचहरी	अंशुमान अग्निहोत्री	30
21.	आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस : सही या गलत	अमित कुमार	31
22.	अभिलाषा	नीतू दीक्षित	32
23.	मेरी अविस्मरणीय रेल यात्रा	अभिषेक त्रिपाठी	33
24.	जनसंख्या नियंत्रण : एक जन अभियान	विद्यानंद वर्मा	37
25.	हर स्त्री एक बहती नदी सी है	ज्योति जौहरी	39
26.	ये कहाँ आ गए हम...	अर्चना मानव	40
27.	लेखापरीक्षा इकाइयों (ऑडिट यूनिवर्स) को वन आई.ए.ए.डी. वन सिस्टम (ओ.आई.ओ.एस.) में संग्रहित करना	सिद्धांत दिवाकर	44
28.	वास्तविकता की ध्वनि	अखिलेश चंद्र वाजपेयी	47
29.	हम क्या हो गए हैं	मदन गोपाल शर्मा	48
30.	कार्यालयीन गतिविधियां		49
31.	कार्यालय में नियुक्तियां/सेवानिवृत्तियां		50
32.	संयुक्त हिंदी पखवाड़ा 2023 के अंतर्गत आयोजित प्रतियोगिताओं के परिणाम		52
32.	आपके अभिमत... आपके पत्र...		53



गृह मंत्री एवं
सहकारिता मंत्री
भारत सरकार

संदेश

प्रिय देशवासियो!

आप सब को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

भारत भाषिक विविधता का देश रहा है। दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र की भाषिक विविधता को एकता के सूत्र में पिरोने का नाम 'हिंदी' है। हिंदी भाषा अपनी प्रवृत्ति से ही इतनी जनतांत्रिक रही है कि इसने भारतीय भाषाओं और बोलियों के साथ-साथ कई वैश्विक भाषाओं को यथोचित सम्मान देते हुए उनकी शब्दावलियों, पदों, वाक्य विन्यासों और वैयाकरणिक नियमों को आत्मसात किया है।

हिंदी भाषा ने स्वतंत्रता आन्दोलन के मुश्किल दिनों में देश को एकता के सूत्र में बाँधने का अभूतपूर्व कार्य किया। अनेक भाषाओं और बोलियों में बँटे देश में ऐक्य भावना से पूरब से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक स्वतंत्रता की लड़ाई को आगे बढ़ाने में संवाद भाषा हिंदी की महत्वपूर्ण भूमिका रही। इसीलिए, लोकमान्य तिलक हों, महात्मा गांधी हों, लाला लाजपत राय हों, नेताजी सुभाषचंद्र बोस हों, राजगोपालाचारी हों; हिंदी के शुरुआती पैरवीकारों में बहुसंख्यक उन प्रदेशों के लोग थे, जिनकी मातृभाषाएँ हिंदी नहीं थीं।

किसी भी देश की मौलिक सोच और सृजनात्मक अभिव्यक्ति सही मायनों में सिर्फ उस देश की अपनी भाषा में ही की जा सकती है। प्रसिद्ध साहित्यकार भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने लिखा है कि, "निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति कौ मूल।" यानि कि, अपनी भाषा की उन्नति ही सभी प्रकार की उन्नति का मूल है। राष्ट्र की पहचान इस बात से भी होती है कि उसने अपनी भाषा को किस सीमा तक मजबूत, व्यापक एवं समृद्ध बनाया है। यही कारण है कि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद संविधान निर्माताओं ने अनुच्छेद 343 द्वारा संघ की राजभाषा के रूप में हिंदी और लिपि के रूप में देवनागरी को अपनाया।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारतीय भाषाओं को राष्ट्रीय से वैश्विक मंचों तक यथोचित सम्मान मिला है। हमारी सभी भारतीय भाषाएँ और बोलियाँ हमारी सांस्कृतिक धरोहर हैं।

अपनी भाषा में सुनी हुई अवांछनीय बातें भी बहुत बुरी नहीं लगती। कवि **विद्यापति** की शब्दावली में कहूँ तो '**देसिल बयना सब जन मिट्ठा**' यानि देशी भाषा सभी जनों को मीठी लगती है। गृह मंत्रालय का राजभाषा विभाग निरंतर प्रयत्नशील है कि शहद सामान मीठी भारतीय भाषाओं को आधुनिक तकनीक के माध्यम से अत्याधुनिक और वैज्ञानिक प्रयोग के अनुकूल उपयोगी बनाया जा सके।

सरकार और जनता के बीच भारतीय भाषाओं में संवाद स्थापित कर जनकल्याणकारी योजनाओं को प्रभावी तौर पर लागू किया जा सकता है। दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र जन-जन तक उनकी ही भाषा में उनके हित की बात पहुँचाकर आदर्श लोकतंत्र के निर्माण का सबसे अच्छा उदाहरण हो सकता है। राजभाषा विभाग ने इसी उद्देश्य से राजभाषा हिंदी के प्रयोग को सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से सहज बनाने की दिशा में काम करते हुए स्मृति आधारित अनुवाद प्रणाली 'कंठस्थ' का निर्माण और विकास किया है। फिजी में संपन्न 'विश्व हिंदी सम्मेलन' में 'न्यूरल मशीन ट्रांसलेशन' के साथ इसके नए वर्जन (कंठस्थ 2.0) के मोबाइल ऐप का भी लोकार्पण किया गया है।

राजभाषा विभाग की एक नई पहल 'हिंदी शब्द सिंधु' शब्दकोश का निर्माण है। इस शब्दकोश में संविधान की 8वीं अनुसूची में अधिसूचित भारतीय भाषाओं के शब्दों को शामिल कर इसे निरंतर समृद्ध किया जा रहा है। साथ ही, विभाग ने 'लीला हिंदी प्रवाह' मोबाइल ऐप भी तैयार किया है, जिसे अपनाकर विभिन्न भाषा-भाषी 14 भारतीय भाषाओं के माध्यम से अपनी-अपनी मातृभाषाओं से स्तरीय हिंदी निःशुल्क सीख सकते हैं।

भाषा परिवर्तन का सिद्धांत यह कहता है कि भाषा जटिलता से सरलता की ओर जाती है। मेरे विचार से हिंदी के सरल और सुस्पष्ट शब्दों को कार्यालयी कामकाज में प्रयोग में लाना चाहिए। टिप्पणी, पत्राचार, ई-मेल, विज्ञप्ति आदि के लिए आम बोलचाल के शब्दों व वाक्यों के प्रयोग से हिंदी के प्रयोग का चलन बढ़ेगा।

हमारे लिए हिंदी का प्रश्न सिर्फ एक भाषा का प्रश्न नहीं, बल्कि राष्ट्रीय स्वाभिमान व सांस्कृतिक गौरव का विषय है। मुझे विश्वास है कि राजभाषा विभाग के उपरोक्त प्रयासों से सभी मातृभाषाओं को आत्मसात करते हुए लोकसम्मत भाषा हिंदी विज्ञानसम्मत व तकनीकसम्मत होकर संपन्न राजभाषा के रूप में स्थापित होगी।

पुनश्च, आप सब को हिंदी दिवस की अनंत शुभकामनाएं।

नई दिल्ली,
14 सितंबर, 2023


(अमित शाह)



SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थं सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest



संदेश

यह अत्यंत प्रसन्नता एवं गौरव का विषय है कि कार्यालय अपनी अर्धवार्षिक हिंदी पत्रिका 'गोपाद्री' के 29वें अंक का प्रकाशन करने जा रहा है। पत्रिका का समय पर प्रकाशन सभी अधिकारियों/कर्मचारियों के सहयोग एवं योगदान का परिणाम है।

हिंदी हमारी मातृभाषा है। मातृभाषा से ही हम संस्कार एवं व्यवहार सीखते हैं एवं अपनी संस्कृति से जुड़कर अपनी धरोहर को आगे बढ़ाते हैं। हिंदी हमारी राजभाषा भी है और उसकी उन्नति ही हमारी उन्नति है। हमें हिंदी के मर्म को समझना चाहिए तथा उसकी गरिमा को प्रतिष्ठापित करना चाहिए। हिंदी में कामकाज करना हमारा संवैधानिक और नैतिक दायित्व है। दायित्व निभाने के साथ ही हमें राजभाषा हिंदी के प्रति लोगों में जागरूकता का प्रसार कर शासकीय कार्यों में इसके अधिकाधिक उपयोग की प्रेरणा देनी चाहिए।

'गोपाद्री' पत्रिका का अर्धवार्षिक प्रकाशन कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों का राजभाषा हिंदी के प्रति प्रेम एवं कर्तव्यनिष्ठा को दर्शाता है। कार्यालयीन पत्रिकाएं राजभाषा हिंदी में विशेष रुचि रखने वाले सभी कार्मिकों को राजभाषा हिंदी में उनके कौशल की प्रस्तुति करने का सर्वोत्तम साधन होती हैं। पत्रिका के प्रकाशन का उद्देश्य केवल राजभाषा के प्रचार एवं प्रसार को प्रोत्साहन देना ही नहीं, अपितु साहित्यिक सृजनशील कार्मिकों को उनकी रचनाओं की प्रस्तुति का उपयुक्त मंच भी उपलब्ध कराना है। मुझे विश्वास है कि पत्रिका में समाहित रचनाएं आपके ज्ञानकोष में वृद्धि करने के साथ ही आपके मन को साहित्य रस से आह्लादित भी करेंगी।

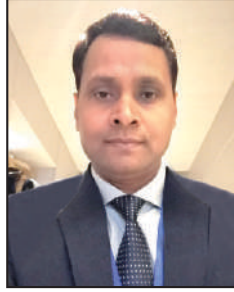
पत्रिका के सफल संपादन के लिए संपादक मंडल के साथ-साथ सभी रचनाकारों एवं प्रकाशन में योगदान देने वाले सभी कार्मिकों को मैं हृदय से धन्यवाद देती हूं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि इस पत्रिका से प्रेरित होकर अधिकाधिक पाठक हिंदी की ओर प्रवृत्त होंगे।

पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

(प्रिया पारिख)
महालेखाकार



SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थं सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest



प्रकाशकीय

इस कार्यालय की छमाही हिंदी पत्रिका 'गोपाद्री' का 29वां अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत हर्षानुभूति हो रही है। पत्रिका का प्रकाशन हिंदी के विकास एवं हिंदी के सहज प्रयोग के क्षेत्र में उल्लेखनीय कदम है। राजभाषा हिंदी के विकास हेतु पत्रिकाओं का प्रकाशन कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों का राजभाषा के प्रति लगाव तथा स्नेह प्रदर्शित करता है।

विभिन्न भाषाएं और संस्कृतियां भारत की पहचान हैं, सभी भाषाओं का अपना समृद्ध इतिहास है, परंतु पूरे राष्ट्र को एक सूत्र में पिरोने का काम हिंदी ने ही किया है। हिंदी भाषा की विशेषताओं और जनसाधारण में लोकप्रियता को ध्यान में रखते हुए भारतीय संविधान सभा द्वारा गहन विचार-विमर्श के बाद आपसी सहमति से हिंदी को भारत संघ की राजभाषा का दर्जा दिया गया तथा हिंदी संबंधित संवैधानिक प्रावधानों को 14 सितंबर 1949 को अंगीकार किया गया। अतः हिंदी का अधिकाधिक प्रचार-प्रसार करना और उसे रोजाना के व्यवहार में लाना हमारी नैतिक जिम्मेदारी है। हमारी पत्रिका 'गोपाद्री' इसी क्रम में कार्यालयीन कार्मिकों द्वारा किया गया एक सार्थक प्रयास है।

राजभाषा हिंदी हमारी राष्ट्रीय एकता, धार्मिक सहिष्णुता एवं मेल-मिलाप की भाषा है। मैं कामना करता हूं कि राजभाषा हिंदी की प्रगति के प्रति समर्पित सभी रचनाकारों का कलात्मक कौशल सदैव परिरक्षित रहे एवं अधिकारी/कर्मचारीगण 'गोपाद्री' के माध्यम से हिंदी के प्रचार-प्रसार में इसी प्रकार योगदान देते रहें। पत्रिका के सफल संपादन और आकर्षक साज-सज्जा आदि के लिए संपादक मंडल बधाई का पात्र है।

पत्रिका के स्वर्णिम भविष्य के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

(डॉ. दीन दयाल वर्मा)
वरिष्ठ उप महालेखाकार
(प्रशासन)



संपादकीय

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा—प्रथम) म.प्र. ग्वालियर की छमाही हिंदी पत्रिका 'गोपाद्री' का 29वां अंक आप सभी के समक्ष प्रस्तुत करने में मुझे अत्यंत हर्ष का अनुभव हो रहा है।

भारत विविधताओं का देश है जिसमें अनेक प्रकार की भाषाएं और संस्कृतियां विद्यमान हैं। अनेक भाषाओं रूपी मोतियों की माला में हिंदी एक धागे की तरह कार्य करती है अर्थात् सभी को जोड़ने का काम हिंदी भाषा बखूबी करती है। हिंदी हम सब की बोलचाल की भाषा है जिसके कारण हम अपने विचारों को बड़ी सहजता से सबके साथ साझा कर सकते हैं। राजभाषा हिंदी का प्रचार—प्रसार करना न केवल हम सबका परम कर्तव्य है, अपितु संवैधानिक उत्तरदायित्व भी है। कार्यालय में गोपाद्री के प्रकाशन के माध्यम से हमारा प्रयास रहता है कि कार्यालयीन कामकाज में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा मिले। 'गोपाद्री' पत्रिका रचनाकारों की लेखन—प्रतिभा को उनकी रचनाओं के माध्यम से उजागर करती है और उनकी सृजनात्मकता को मंच प्रदान करती है।

पत्रिका के इस अंक में कार्यालय के सदस्यों ने उत्साहपूर्वक अपने अनुभवों, यात्रा संस्मरणों, ज्ञानवर्धक लेखों एवं कविताओं के माध्यम से प्रशंसनीय एवं उल्लेखनीय योगदान दिया है जिससे उनके लेखन कौशल की सार्थक अभिव्यक्ति हो पाई है।

कार्यालय के सभी रचनाकारों एवं गोपाद्री परिवार को पत्रिका में सहयोग देने के लिए मैं हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ। आशा करती हूँ कि पत्रिका प्रकाशन के इस रचनात्मक कार्य में सभी कार्मिक अपना अमूल्य समय एवं श्रमदान देकर इसे समृद्ध बनाने में सदैव संपादक मंडल को सहयोग करेंगे एवं भविष्य में 'गोपाद्री' के लेखकों की लेखनी नई ऊंचाईयों को प्राप्त करेगी और राजभाषा हिंदी को उत्कर्ष के शिखर तक ले जाएगी।

मंगलकामनाओं सहित...

स्वर्णलता
(स्वर्णलता गुप्ता)

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी, हिंदी कक्ष

जिम्मेदारी-एक अहसास

धनंजय कुमार
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी



संसार के सभी मनुष्य अपनी पारिवारिक, सामाजिक एवं व्यावसायिक जिम्मेदारी का निर्वहन अपनी क्षमता एवं कार्यक्षेत्र के अनुसार करते हैं। मनुष्य में विवेक होने के कारण वह सभी जीव-जंतुओं में सर्वश्रेष्ठ है। परंतु आजकल के आपाधापी भरे संसार में विवेकहीन एवं मर्यादाहीन कार्यों को देखकर लगता है कि मनुष्य अपने विवेक को खोकर जीव-जंतुओं से भी बदतर व्यवहार करने लगा है। विवेकयुक्त एवं मर्यादापूर्ण व्यवहार को अपनाकर मनुष्य इस संसार को सुखी एवं संपन्न रखने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है। इन एहसासों (अनुभूतियों) को अग्रलिखित रूप से समझा जा सकता है।

पारिवारिक जिम्मेदारी—

सभी जीव अपनी पारिवारिक जिम्मेदारी का निर्वहन करते हैं। मनुष्य भी करता है, परंतु इसमें परिवार के सभी सदस्यों, चाहे वह बड़ा हो या छोटा, सभी को अपनी जिम्मेदारी का समुचित निर्वहन करने का प्रयास करना चाहिए। घर में मां-बाप अपनी क्षमता अनुसार अपने बच्चों को उचित शिक्षा देने के लिए भरसक प्रयास करते हैं तो बच्चों को भी अपने अभिभावक की सीमाओं को ध्यान में रखते हुए सहपाठियों एवं मित्रों की देखा-देखी अनुचित मांग नहीं रखनी चाहिए। अभिभावक को भी अन्य बच्चों से तुलना करके अपने बच्चों पर उनकी इच्छा के विरुद्ध शिक्षा या कार्य के लिए दबाव नहीं डालना चाहिए। वर्तमान समय में प्रतियोगिता की आपाधापी में कुछ बच्चे अपनी कड़ी मेहनत के बावजूद भी मनोवांछित परिणाम हासिल नहीं कर पाते हैं, तो इसके लिए माता-पिता को अपने बच्चों को प्रताड़ित या हतोत्साहित नहीं करना चाहिए।

भारतीय समाज में प्रायः यह देखा जाता है कि पुरुष घर के बाहर के कार्यों को करते हैं तथा महिलाएं घर के कार्यों को करती हैं। आज के परिवेश में जब संयुक्त परिवार का प्रचलन धीरे-धीरे कम हो रहा है तथा व्यक्ति एकल परिवार में रहने को विवश हो रहा है तो वहां पुरुषों को घर के दैनिक कार्यों में हाथ बंटाना चाहिए, बच्चों को भी घर के कार्यों को करने के लिए प्रेरित करना चाहिए ताकि आवश्यकता होने पर बच्चे स्वयं के तथा घर के कार्यों को कर सकें ताकि जब रोजगार के सिलसिले में घर से बाहर जाएं तो वे खाना बनाने, घर की साफ-सफाई करने एवं अन्य घरेलू कार्य स्वयं कर सकें तथा उन्हें किसी प्रकार की असहजता एवं असुविधा न हो। आज के संसार में सुविधाभोगी एवं आरामतलब जीवन में प्रत्येक मां-बाप अपने बच्चों को सारी सुख-सुविधा एवं ऐशो-आराम देने के प्रयास में उन्हें आत्मनिर्भर नहीं बनने देते। आवश्यकता होने पर भी उसे घर या बाहर के कार्य नहीं करने देते जिससे बच्चा आवश्यकता पड़ने पर वह कार्य करने में स्वयं को असहज एवं असहाय पाता है। बच्चों को पढ़ाई के साथ-साथ पारिवारिक एवं सामाजिक कर्तव्यों को करते रहने का व्यावहारिक ज्ञान भी देते रहना चाहिए। इस संबंध में हमें बाज पक्षी से सीख लेनी चाहिए। बाज के बच्चे जब धीरे-धीरे बड़े होने लगते हैं, तो उसकी मां अपने घोंसले जो पेड़ की ऊंची टहनियों पर होते हैं, से धीरे-धीरे तिनके हटाती है ताकि उसके बच्चे को ऊंचाई से गिरने का डर कम हो जाए, अंत में एकाएक पूरे घोंसले को हटा देती है ताकि बच्चे आकाश में उड़ सकें। हमें भी बाज

जैसे धीरे-धीरे आरामदायी सुविधाओं को कम करते रहना चाहिए ताकि हमारे बच्चे को जीवन में मुसीबत एवं कठिनाई से लड़ने का अभ्यास रहे।

सामाजिक जिम्मेदारी—

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज के सभी लोग एक दूसरे के पूरक हैं। अपने घर—परिवार के साथ—साथ आसपास के परिवेश का भी हम पर असर पड़ता है। उदाहरण के लिए यदि हमारे घर के पास कोई व्यक्ति बीमार है, लाचार है, आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं है तो उसके कष्ट एवं दुःख का असर हमारे जीवन पर भी पड़ता है।

हम सभी अपने घर को साफ—सुथरा रखना चाहते हैं, इसके लिए घर की नियमित सफाई करते हैं, गंदगी एवं कचरा घर से बाहर निकालते हैं। परंतु दुर्भाग्यवश प्रायः यह देखा जाता है कि घर की गंदगी एवं कचरा, घर के पास की गली, सड़क एवं पार्क में फेंकते हैं जबकि उस गली, सड़क एवं पार्क से हम सभी गुजरते हैं। ये हमारी नैतिक जिम्मेदारी है कि हम घर की गंदगी एवं कचरा निर्धारित स्थान, सफाईकर्मी, सफाई गाड़ी वाले को ही दें ताकि घर के साथ आस—पास का वातावरण भी साफ, स्वच्छ एवं स्वस्थ रहे।

सार्वजनिक स्थानों यथा सड़क, पार्क एवं मैदान जहां सभी लोग विभिन्न उद्देश्यों के लिए जाते हैं, उसे भी साफ एवं व्यवस्थित रखने की जिम्मेदारी हमारी है। सड़क पर चलते समय यातायात के नियमों का पालन करना चाहिए। सड़क पर गाड़ी चलाते समय हमारे कारण यातायात बाधित न हो, इसका ख्याल रखना चाहिए। जल्दी पहुंचने के कारण गलत दिशा से अपनी गाड़ी निकाल कर यातायात (ट्रैफिक) को बाधित न करें, यातायात संकेतक (ट्रैफिक सिग्नल) का अनुपालन करें। एम्बुलेंस एवं फायर बिग्रेड को शीघ्र रास्ता दें। सार्वजनिक संपत्ति यथा स्ट्रीट लाइट, पाइप लाइन, फुटपाथ, पार्क इत्यादि को किसी प्रकार का नुकसान न पहुंचाएं। यदि कहीं नुकसान हुआ है तो संबंधित कार्यालय/प्राधिकारी को सूचित कर ठीक करवाकर अपनी सामाजिक जिम्मेदारी का निर्वहन करें।

आसपास रहने वाले गरीब एवं सुविधाविहीन लोगों की सहायता करनी चाहिए। पर्व—त्यौहार में उन्हें आवश्यक सामान एवं कपड़े इत्यादि देकर उन्हें खुशी देने का प्रयास करते रहना चाहिए। कुछ स्वयंसेवी लोग एवं संस्थाएं ठंड के मौसम में गर्म कपड़े देकर उनकी सहायता करते हैं, कुछ संस्थाएं असहाय एवं बेसहारा लोगों को आवश्यक चिकित्सीय सुविधाएं एवं जरूरी सामान प्रदान करते हैं। हमारी भी नैतिक एवं सामाजिक जिम्मेदारी बनती है कि ऐसी समाजसेवी संस्थाओं/लोगों की जितना हो सके, आर्थिक मदद करें। इस संबंध में महान दार्शनिक अरस्तू का कथन हमेशा याद रखना चाहिए कि “आदर्श मनुष्य दूसरों की मदद करके सुख हासिल करता है।”

व्यावसायिक जिम्मेदारी—

हम सभी लोग अपने जीवन—यापन के लिए कोई न कोई कार्य करते हैं। कार्यालयों में कार्मिक अपने विभाग एवं कार्यालय अनुसार कार्य करते हैं, उद्यमी अपने उद्योग एवं व्यवसाय के अनुसार अपना कार्य करते हैं, किसान एवं श्रमिक अपने—अपने क्षेत्रों में कार्य करते हैं। समाज एवं राष्ट्र को उन्नत एवं विकसित बनाने में सभी व्यक्तियों का महत्वपूर्ण योगदान रहता है। हमारे देश की सीमाओं की बाहरी एवं आंतरिक सुरक्षा हमारी बहादुर सेना एवं सुरक्षा बलों के जवान करते हैं। दूसरे शब्दों में सभी लोग अपने—अपने क्षेत्रों में कार्यों के दायित्वों को पूरा कर व्यावसायिक जिम्मेदारी का निर्वहन करते हैं।

जिस क्षेत्र में हम कार्य करते हैं, उसके अनुसार हमारा दायित्व एवं कर्तव्य निर्धारित है। उसी के अनुसार जो नियम एवं अनुशासन हैं, उसका अनुपालन कर अपने समाज एवं राष्ट्र के सर्वांगीण विकास में अपना योगदान देते हैं। हमारी व्यावसायिक जिम्मेदारी है कि जहां हम कार्य करते हैं वहां के परिवेश एवं आसपास के वातावरण को अच्छा और अनुकूल रखें। कार्य के लिए निर्धारित कार्यावधि का पालन करें, कार्यालयों में स्वयं के लिए निर्धारित स्थानों/कक्षों के साथ सार्वजनिक उपयोग के स्थानों यथा गलियारा, शौचालय, सीढ़ियों, पार्को, पार्किंगों इत्यादि को गंदा न करें। यदि कहीं गंदगी या टूट-फूट दिखे तो उसे सुधरवाने हेतु संबंधित प्राधिकारियों को सूचित करें। बिजली एवं कम्प्यूटर के उपकरणों का किफायत से उपयोग करें। यह प्रयास करें कि आपके वक्तव्यों एवं कार्यों से आपके सहकर्मी को अनावश्यक परेशानी न हो। किसी कार्य के लिए आने वाले आगंतुकों को कार्य के बारे में उचित सलाह दें तथा प्रयास करें कि उनका कार्य शीघ्रता से पूर्ण हो। उनसे आत्मीयता से बात करें। उनकी समस्या एवं परेशानी को सहानुभूतिपूर्वक सुनें। अपने कार्यक्षेत्र में प्रशासक की तरह नहीं, सुविधा प्रदाता के रूप में कार्य करें। हमारा यह प्रयास होना चाहिए कि मनसा—वाचा—कर्मणा, किसी को हमारे आचार—व्यवहार से किसी प्रकार का कष्ट न हो।

उद्योगपतियों एवं उद्यमियों को चाहिए कि उनके यहां कार्य करने वाले प्रबंधकों एवं श्रमिकों को समुचित सुविधा प्रदान करें। आवश्यकता पड़ने पर उनके पारिवारिक दायित्वों को पूरा करने में आवश्यक सहयोग प्रदान करें। अपने कर्मिकों/श्रमिकों के लिए ऐसा वातावरण रखें जिसमें सभी लोग उत्साहपूर्वक अपने-अपने कार्य को कर सकें। उद्यमियों को अपने देश की जनता को ध्यान में रखते हुए अपने लाभ को इस प्रकार रखना चाहिए कि उन्हें आवश्यकतानुसार सामग्री/सामान खरीदने में ज्यादा कीमत नहीं चुकाना पड़े। इस संबंध में महान विद्वान एवं दार्शनिक चाणक्य ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'अर्थशास्त्र' में उल्लेख किया है कि उद्यमियों एवं दुकानदारों को स्थानीय उत्पादित वस्तुओं पर अपनी संपूर्ण लागत का 5 प्रतिशत तथा बाहर से आयातित वस्तुओं पर संपूर्ण लागत का 10 प्रतिशत से अधिक लाभ नहीं लेना चाहिए।

राष्ट्रभक्ति का अर्थ यह नहीं है कि हम देश की सीमाओं पर बाहरी आक्रांताओं/दुश्मनों से लड़े, बल्कि वास्तव में देश की उन्नति, शांति एवं सद्भाव बनाए रखने में अपने-अपने कार्यक्षेत्र में ईमानदारी एवं निष्ठा से योगदान देना ही असली देशभक्ति है। हम सभी को अपने-अपने पारिवारिक, सामाजिक एवं व्यावसायिक जिम्मेदारियों का निर्वहन कर अपने परिवार, समाज एवं देश को समर्थ, सशक्त एवं विकसित बनाने में अहम योगदान देना चाहिए।

अंतर्द्वंद्व

मनोज कुमार सिंह श्योरान

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी



मैं जो बनना चाहता था, नहीं बन सका
एक बच्चे के रूप में, मैंने महानता का सपना देखा,
किसी दिन दुनिया बदलने का,
अपनी एक स्थायी विरासत छोड़ने का
जिसे कोई छीन नहीं सके।
मैंने उन सभी चीजों की कल्पना की जो मैं करूंगा,
जिन स्थानों पर मैं जाऊंगा,
जिन लोगों की मैं मदद करूंगा,
और जो ज्ञान मुझे पता होगा।
लेकिन जैसे-जैसे मैं बड़ा हुआ,
मुझे यह कठिन लगने लगा,
अपने सपनों को सच्चाई में बदलने के लिए,
उठे मेरे हर कदम के साथ,
मुझे एहसास हुआ कि मैंने अपनी जवानी खो दी है।
मैं लड़खड़ा गया और रास्ता भटक गया,
और मुझे अपना रास्ता नहीं मिला,
मैंने उत्तर के लिए अपना हृदय खोजा,
लेकिन ऐसा प्रतीत हुआ कि वे सपने टिके नहीं।
मेरी उम्मीदों का बोझ,
मुझे सहना बहुत मुश्किल हो गया,
और मैंने अपने चारों ओर की दुनिया को महसूस किया,
जो मेरे वजूद से बड़ी हो चुकी थी।
फिर भी मेरे संदेह की खामोशी में,
मैंने एक चमकती हुई किरण देखी,
एक आशा जो मेरे भीतर चमक उठी,

और उसने मुझमें नई रोशनी भर दी।
मैं क्या बनना चाहता था,
हो सकता है कि मैं जो हूँ वैसा न होऊँ
लेकिन मेरी जिंदगी के सफर में,
मैं वही बन गया हूँ जो मैं हूँ।
मैं दुनिया नहीं बदल सकता,
न प्रसिद्धि के लिए विरासत छोड़ सका,
लेकिन मैं दयालु और प्यार करने वाला हो सकता हूँ
जो बिना किसी दोष के जीने का प्रयास करे।
मैंने सीखा है कि प्यार एक शक्ति है,
उनमें जो हम छोटी-छोटी चीजें करते हैं
और दयालुता वह एक शक्ति है,
जो दिल को बदल सकती है।
हालांकि मैं अपने सपनों तक नहीं पहुंच पाऊंगा,
और मैं वह न बन सकूंगा जो मैंने चाहा था,
पर मुझे दूसरों की मदद करने में खुशी मिलेगी,
और मिलेगी संतुष्टि अपनो को प्यार देने में
क्योंकि अंत में, यह प्रसिद्धि नहीं है,
न ही वह धन जो हम अर्जित करते हैं या खोते हैं,
यह तो वे लोग और वे क्षण हैं
जो हमारे जीवन को एक प्रेरणा बनाते हैं।

वृद्धाश्रम : नया चलन

स्वर्णलता गुप्ता

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी



आज के तेजी से भागते समय में भौतिकतावादी सोच और स्वार्थपरस्ती के चलते परिवारों में बड़े बुजुर्गों को वृद्धाश्रम भेजने का चलन बड़ी तेजी से बढ़ गया है जो एक सामाजिक कुरीति है। व्यवसाय/शिक्षा के चक्कर में नई पीढ़ियों के पैत्रिक स्थान से पलायन के कारण उनके अपने वृद्ध माता-पिता उपेक्षित और निराश्रित हो जाते हैं। वृद्ध माता-पिता अपने पैतृक स्थान से लगाव होने के कारण उसे छोड़ना नहीं चाहते क्योंकि वहीं रहकर उन्हें अपनी चिर-परिचित पहचान बनाए रखने का मोह रहता है। वे अपने धरोहर रूपी पुराने घर और अपने परिचितों से दूर होना नहीं चाहते परंतु वृद्धावस्था और स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं के चलते उन्हें अकेले नहीं छोड़ा जा सकता इसलिए वृद्धाश्रम (OLDAGE HOMES) भेज दिए जाते हैं और आजकल यह प्रथा बहुत तेजी से फल-फूल रही है। वृद्धाश्रम बुजुर्गों के लिए बच्चों के झूलाघर के समान विकल्प बन गये हैं। हमारी व्यस्ततम जिंदगी के कारण हमारे उपेक्षित हुए बुजुर्गों को उनके बुढ़ापे में चैन से जीने का जो हक मिलना चाहिए, वो नहीं मिल पा रहा है और वृद्धाश्रम में वो अपनों से दूर, परायों के बीच खुद को अकेला महसूस करते हैं। उपेक्षित होने के कारण हीनभावना से ग्रसित वे स्वयं की नजरों में ही खुद को बोझ महसूस करते हैं।



बचपन में एक कहावत सुनी थी कि "मूल से ज्यादा ब्याज प्यारा होता है", परंतु आज तो 'मूल' ही उनका नहीं बचा फिर 'ब्याज' की बात कौन सोचे? बीच की पीढ़ी उन्हें वृद्धाश्रम भेजकर अपने दायित्व से मुक्त हो रही है। पर क्या कभी इस पर गहनता से विचार किया जाएगा कि ये कालचक्र पुनः घूमेगा और कल वृद्धाश्रम जाने का

उनका नंबर होगा। बच्चे जो देखते हैं वही करते हैं, आज आप अपने माता पिता को वृद्धाश्रम भेज रहे हैं और अपने कर्तव्य से मुंह मोड़ रहे हैं परंतु जिनके मोह में फंसे हैं, कल वे और उनके बच्चे भी आपको वृद्धाश्रम ही भेजेंगे क्योंकि आज यही तो उन्होंने देखा है।

यदि आप स्वयं को उस स्थिति में नहीं देखना चाहते तो अपने बच्चों के मन में उन संस्कारों को विकसित कीजिए जो उन्हें अपनों के साथ रहना, उनसे प्रेम करना और उनका सम्मान करना सिखाते हैं। हमें बच्चों में उन गुणों को विकसित करना चाहिए जिनसे वो दूसरों की भावनाओं को उचित मान-सम्मान एवं महत्व देना सीख सकें, दूसरों के व्यवहार से सीख और प्रेरणा ले सकें। यदि बच्चों को प्रारंभ से ही उचित शिक्षा-दीक्षा और मार्गदर्शन दिया जाए तो उनमें उचित संस्कारों की नींव पड़ सकती है जिससे बड़े होकर वे अपने कर्तव्यों का अच्छे ढंग से निर्वहन कर सकें।

मैं भी पिछले कई सालों से ग्वालियर स्थित “नारायण वृद्धाश्रम” से जुड़ी हूँ। मेरा वहां से जुड़ना भी महज एक इत्तेफाक था। दिसंबर का महीना था। मैं सब्जी मंडी गई थी और पास में ही ये आश्रम था। कुछ बुजुर्ग बाहर की तरफ धूप सेंक रहे थे तो कुछ वृद्ध महिलाएं काम-काज में व्यस्त थीं। उन्हें देख कर उनसे मिलने की उत्सुकता में मैं उनके पास गई तो पता चला कि इस आश्रम में कई बुजुर्ग (पुरुष और महिलाएं) अपने जीवन का अंतिम चरण पूरा कर रहे हैं। कोई घर से बेदखल किया गया था, कोई अनाथ था, कोई अकेला था, कोई घरवालों द्वारा उपेक्षित सेवानिवृत्त कर्मचारी था तो कोई लंबी बीमारी के कारण घर वालों द्वारा त्याग दिया गया था। आश्रम की ट्रस्टी द्वारा वहां की कई व्यवस्थाओं को जानने का मौका मिला। ट्रस्टी द्वारा बुजुर्गों का खाने-पीने और दवाई आदि का पूरा ध्यान रखा जाता था परंतु उन बुजुर्गों के मन की स्थिति तो केवल वे ही जान सकते थे। उनकी बाहरी देखभाल और सेवाशुश्रूषा की जा सकती थी परंतु उनके दुखी अंतर्मन में चल रहे द्वन्द को केवल उनके अपने ही शांत कर सकते थे। कुछ बुजुर्ग शांत स्वभाव के थे क्योंकि उन्होंने आज के मौका परस्त जमाने की चालबाजियों से खुद को हारा हुआ मानकर अपनों को भुला दिया था। उन्होंने अपनी उम्मीदों/अपेक्षाओं को शांत कर लिया था और खुद को अकेलेपन हेतु संतुष्ट कर लिया था परंतु कुछ के मन, अपनों के प्रति नफरत और वितृष्णा से भरे हुए थे, वे अपनों के द्वारा उन्हें त्याग दिए जाने का दंश झेल नहीं पा रहे थे।

आज की पीढ़ी को जीवन चक्र नहीं भूलना चाहिए क्योंकि वृद्धावस्था नित्य निरंतर है। जो आज जवान है वो कल वृद्ध होगा ही। जो आज आप बोयेंगे वो ही कल आप काटेंगे। आज आपके बच्चे देख रहे हैं कि आप अपने वृद्ध माँ-बाप को वृद्धाश्रम में भेजकर अपनी जिम्मेदारी निभा रहे हैं तो कल उनके लिए भी आपको वृद्धाश्रम भेजना कोई मुश्किल बात न होगी। आज कई परिवारों में बूढ़े लोगों को वृद्धाश्रम जाने के लिए मजबूर कर दिया जाता है, खासकर तब जबकि उन्हें अपने परिवार से विशेष सेवा, ध्यान और प्यार की आवश्यकता होती है।

पारिवारिक उपेक्षा, बेहतर करियर अवसरों की तलाश में बच्चों के प्रवासन/पलायन, परिवारों के विघटन, शिक्षा, प्रौद्योगिकी आदि के मामले में नई पीढ़ी के साथ तालमेल न बिठा सकने के कारण वृद्ध व्यक्तियों को वृद्धाश्रम की शरण लेनी पड़ती है, जहां वे अपने जैसे अन्य लोगों के साथ रह सकते हैं। यह अत्यंत विचारणीय मुद्दा है कि जिन्होंने अपनी इच्छाओं और शौकों का दमन करके हमारी हर जरूरत को बिना कुछ परवाह किए हमें वह सब कुछ दिया जो हम चाहते थे, तो हम आत्मनिर्भर होने पर इन सब बातों और माता पिता के त्याग और बलिदानों को कैसे भूल जाते हैं? माता पिता द्वारा की जाने वाली उचित रोक-टोक भी, जो उनके भले के लिए होती है, जो उन्हें स्वच्छंद बनने से रोकती है, जो उन्हें सही-गलत में फर्क करना सिखाती है, बच्चों को एक बंधन

लगने लगती है और यही कारण है कि जब उनको अपने माता-पिता की देखभाल करने का समय वृद्धावस्था (बुढ़ापा) आता है, तो वे इसे एक बोझ के रूप में समझते हैं और बुजुर्गों को उपेक्षित करके उन्हें अवसाद की गर्त में धकेल देते हैं।

गांवों में अभी भी इतनी आत्मीयता तो बची है कि पारिवारिक वृद्धजन भले ही ठीक व्यवहार न करें तब भी परिवार उन्हें बाहर (वृद्धाश्रम) का रास्ता नहीं दिखाते, जबकि शहरों में पैसा कमाने और स्वतंत्रता पूर्वक बिना रोक-टोक जीवन जीने की महत्वाकांक्षा असीमित और अनियंत्रित हो चुकी है इसलिए आज की पीढ़ी के पास न तो बुजुर्गों की देखभाल के लिए समय ही है और न ही सेवा का भाव है। उपेक्षित वृद्धजनों की एकमात्र शरणस्थली वृद्धाश्रम ही रह जाती है, जिसमें वे अपने हमउम्र लोगों के साथ अपना समय बिताते हैं, अपने दुःख-सुख बांटते हैं, परस्पर सहयोग भावना से एक-दूसरे की भावनाओं को समझते हैं, और अपने जीवन में हुए अपने अनुभवों को एक-दूसरे के साथ बैठकर साझा करते हैं।

भारतीय जीवन मूल्यों और संस्कृति के ह्रास और पाश्चात्य संस्कृति के बढ़ते प्रभाव के कारण आज भारतीय परिवारों में आपसी विश्वास, प्रेम, सौहार्द, सामंजस्य और सेवाभाव घटता जा रहा है। भौतिकतावादी सोच सुरसा के मुंह की तरह बढ़ती जा रही है। व्यक्तिगत सुख सर्वोपरि हो गया है। स्वार्थपरता अपनी चरम सीमा पर है, रिश्तों का कोई मोल नहीं बचा है। वृद्धाश्रम की अवधारणा भारतीय संस्कृति में कहीं नहीं है। ये हमारे सामाजिक पतन का सूचक है। ये केवल पश्चिमी हवाओं का प्रभाव है कि लोग भूल गए हैं कि एक दिन वे भी वृद्ध होंगे और उन्हें भी अपने बच्चों के आश्रय की आवश्यकता होगी। अतः हमें अपनी आने वाली नई पीढ़ियों को सुसंस्कारों से पोषित करना चाहिए और उन्हें भारतीय सत्य सनातन परंपराओं से परिचित कराना चाहिए।

*“जिस चीज में आपको चुनौती मिलती है,
वही चीज आपको बदल भी सकती है”*

मेरा शहर अजनबी हो गया

अखिलेश चंद्र वाजपेयी

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी



अपने शहर से दूर जाने की,
जरूरतें थीं या मजबूरियां,
या सपने बढ़ा गई दूरियां,
अपराध बोध में गली से मुड़ा था,
जब साथ में थीं सिसकियां,
इन्हीं को मैं जीता रहा,
आज ये बिन मोल हैं,
कल तक अनमोल थीं,
लौट कर अपने शहर में यह पाया,
मेरा शहर अजनबी हो गया।

ये कोई खबर भी नहीं,
मैं इतना मशहूर भी नहीं,
बदलेगा लेकिन ऐसा भी नहीं,
कि मैं यहां बिन पहचान का हो गया,
मेरा शहर अजनबी हो गया।

क्या-क्या नहीं देखने को मिला,
ये नई हवा जो चली,
मतलबी, सबको लगी
संबंधों के आगे स्वार्थ है,
इसीलिए आंगन के दो भाग हैं,
हर उठी दीवार की अपनी कहानी,

भाई-भाई के प्रेम की न्यायिक निशानी
और तो और—
ये सब भी बदला,
चबूतरे व्यावसायिकता की भेंट चढ़ गए,
पार्क व्यवस्था के हित में गए,
पुराने खेल बस किताबों में छप गए,
मोहल्ले की चुहलबाजी न मिली,
लौट कर अपने शहर में यह पाया,
मेरा शहर अजनबी हो गया।

चौराहे पे जमघट, हुल्लड़बाजी न मिली
बेवजह बहस का मुद्दा न मिला,
सुबह की जय सियाराम न मिली,
पान की दुकान में राजनीति न दिखी,
बस खामोशी दिखी,
बस खामोशी दिखी।

सोचकर जो आया वो कुछ भी न मिला,
शहर अपना बदला-बदला सा मिला,
पहचान अपने शहर की जो बताता रहा हूं,
अब स्वयं प्रश्न चिह्न-सा हो गया हूं,
आइना था, कांच के टुकड़े-सा हो गया है,
मेरा शहर अजनबी हो गया है,
मेरा शहर अजनबी हो गया है।

नशा : खुशी या खुदकुशी

अर्चना मानव

लेखापरीक्षक



कैसी है ये कश्मकश जिंदगी और मौत में,
लोग करते हैं मदिरा पान किसी भी हालात में,
विष घुला है सजी हुई बंद बोतलों के बाजार में,
न पिएं तो जी न पाएं और पिएं तो मर ही जाएं।

जिंदगी के हर उलझे सवाल के जबाब ढूंढता है,
कर सके जो दर्द कम, युवा वो नशा ढूंढता है,
मधु के मद में डूब कर युवा हुआ नशे में चूर है,
आखिर क्यों, युवा इसका सेवन करने पर मजबूर है ?

नशा करना अपनी शानो-शौकत जो समझते हैं,
जो नशा न करे उसे निम्न कोटि का समझते हैं,
पहले इंसान नशा एक दिन या दो दिन लेता,
फिर नशा, इंसान को नशे बिना जीने नहीं देता।

इंसान आज सही और गलत में फर्क भूल गया,
मानसिक और जज्बाती तौर पर दूर चला गया,
कभी असफलता तो कभी हताशा मिटाने को,
नौजवान नशे की ओर उन्मुख हुआ।

नशे की अंधेरी गलियों में जब युवा प्रविष्ट हुआ,
तब नशे की हालत में सभी अनिष्ट हुआ,
न जाने इस नशे ने कितने घरों में आग लगाई,
कितनी औरतें जलीं और कितनी गईं जलाई।

आज युवावर्ग गुमराह है नशे के अंधकार में,
बदल गया वो, जब से है नशे के व्यापार में,
इस कदर फंस गया है वो अपने ही जाल में,
अपना ही घर बेच रहा वो नशे के बाजार में।

कोई नशे के कारण आर्थिक तंगी से जूझ रहा,
तो कोई नशे के लिए नशे में पैसे उड़ा रहा,
लिख एक गुमनाम खत अपनी ही मौत के नाम,
जो कल का भविष्य था, आज फंदे पर झूल रहा।

जम चुका है खून रगों में आज के नौजवानों में,
इंसानियत तार-तार हो तब्दील हो रही हैवानों में,
भटक गया हर इंसान जो करता इसका रसपान,
फिर भी नशे के दुष्परिणामों से हैं सभी अनजान।

युवा सब भूल गया जब लिप्त हुआ अवसादों में,
क्यों गोते खाता है जहरीले नशे के बाजारों में,
उठो युवा, जागो युवा, छोड़ो इन दुर्व्यवसनों को,
क्या धरोहर दोगे अपनी आने वाली नस्लों को ?

चंद सेकेण्ड के लिए लिया गया मजा,
जिंदगी भर के लिए बन गई है सजा,
अब तय करना है हमारी जिम्मेदारी,
नशा करना है खुशी है या खुदकुशी हमारी ?

बैजाबाई : एक कुशल प्रशासक एवं राजनीतिज्ञ

सारिका शर्मा

पर्यवेक्षक



एक महारानी — जिसे इतिहास में भुला दिया गया। महारानी बैजाबाई सिंधिया जिन्हें बाजाबाई या बाइजा बाई के नाम से भी जाना जाता है, ग्वालियर रियासत की महारानी और बैंकर थीं। महारानी बैजाबाई सिंधिया दौलतराव सिंधिया की तीसरी पत्नी थीं।

दौलतराव सिंधिया की मृत्यु के पश्चात उन्होंने ग्वालियर प्रशासन में प्रवेश किया। महारानी बैजाबाई का जन्म सन् 1784 में महाराष्ट्र के कोल्हापुर में हुआ था। उनके पिता का नाम सखाराम घटगे था जो कोल्हापुर कागल के देशमुख थे। उनकी माता का नाम सुंदरबाई था।

बैजाबाई का विवाह फरवरी 1798 में 14 वर्ष की उम्र में ग्वालियर के महाराज दौलतराव सिंधिया के साथ संपन्न हुआ। विवाहोपरांत अंग्रेज-मराठा युद्ध के दौरान वह दौलतराव के साथ युद्ध में भागीदार बनीं थीं। असाय के युद्ध में आर्थर वेलेजली (ड्यूक आफ वेलिंगट) के विरुद्ध लड़ी थी। उनके नाम से ब्रिटिश हुकूमत थर-थर कांपती थी। बैजाबाई की प्रशासनिक योग्यता के कारण दौलतराव उनसे प्रशासनिक और राजकीय मामलों में विचार-विमर्श किया करते थे।

दौलतराव और उनकी रानियों की अनेक संतानें थी परंतु उत्तराधिकार के लिये उनका कोई पुत्र नहीं था। दौलतराव की मृत्यु के पश्चात दत्तक पुत्र जनकोजी राव जिसकी उम्र 11 वर्ष थी, ने सिंहासन पर बैठ कर 6 साल रीजेंट के रूप में शासन किया क्योंकि उस समय तत्कालीन ब्रिटिश सत्ता की नीतियों के तहत देश में उत्तराधिकारी न होने पर सत्ता अधिकरण का कार्य चरम पर था।

बैजाबाई कुशल प्रशासक थीं, वह अपनी जनता से बेहद लगाव रखती थीं। उन्हें घोड़ों की अच्छी परख थी। उनकी घुड़सवारी की प्रशंसा पूरी रियासत में की जाती थी। बैजा बाई अपने कार्यकाल के दौरान बैंकर थीं। अतः उनके पास आय-व्यय के लेखा का अनुभव था। बैजाबाई ने प्रशासन में अपने रिश्तेदारों को उच्च प्रशासनिक पदों पर नियुक्त किया था। जिसमें उनके पिता सखाराम घटगे भी थे जिन्हें ग्वालियर का दीवान बनाया गया था।

बैजाबाई ने अपने प्रशासनिक जीवन के प्रारंभिक दिनों से ही ब्रिटिश विरोधी रुख अपनाया था। जब पिंडारियों के विरुद्ध अभियान चलाया था तब उनके पति दौलतराव सिंधिया ने अंग्रेजों का साथ दिया था। बैजाबाई ने अपने पति के इस फैसले का विरोध करते हुए उन्हें कायर कहा था और भर्त्सना की थी।

दरबार के कुचक्रों के कारण बैजाबाई के शासन के दौरान दत्तक पुत्र जनकोजी राव से उनके संबंध अच्छे नहीं रहे। अंग्रेज भी इस स्थिति का फायदा उठाने का प्रयास करने लगे। उन्होंने इन कठिन परिस्थितियों का डटकर सामना किया और धैर्य और कौशल से शत्रुओं के षडयंत्र और कुचेष्टाओं को विफल कर दिया। जनकोजी राव शासन पर अपना पूर्ण अधिपत्य चाह रहे थे और बैजाबाई उसे छोड़ने को तैयार नहीं थीं। अंग्रेज भी बैजाबाई के

व्यक्तित्व से परेशानी अनुभव करने लगे थे। इस टकराव के चलते जनकोजी राव द्वारा उन्हें बंदी बनाने की विफल चेष्टा की गई। अंततः उन्हें ग्वालियर छोड़ना पड़ा। इस निर्वासन काल का भी उन्होंने सकारात्मक उपयोग किया। बैजाबाई सन् 1847 से सन् 1856 के बीच उज्जैन में रहीं। महारानी बैजाबाई के परोपकार, कला और धर्म के संबंध में उनके द्वारा किए गए कार्यों के मूर्त अवशेष आज भी विद्यमान हैं। उज्जैन के द्वारिकाधीश गोपाल मंदिर में बैजाबाई की प्रतिमा विराजमान है। महारानी बैजाबाई ने शिवपुरी छतरी में राम-सीता एवं राधाकृष्ण मंदिर, भदैयाकुण्ड शिवपुरी में गोमुख एवं बारादरी का निर्माण कराया था। ग्वालियर का बैजाताल भी बैजाबाई के नाम से बनाया गया था परंतु आज भी ग्वालियर की अधिकांश जनता बैजाताल को तो जानती है परंतु महारानी बैजाबाई के बारे में कोई जानकारी नहीं रखती क्योंकि इतिहास के पन्नों में उन्हें भुला दिया गया था।

बैजाबाई अपने निर्वासन काल के पश्चात सन् 1856 में पुनः ग्वालियर लौट आयीं थीं। अंग्रेजों के विरुद्ध काल्पी की लड़ाई में मिली हार के बाद राव साहेब पेशवा, बंदा के नवाब, तात्या टोपे और अन्य प्रमुख योद्धाओं ने महारानी लक्ष्मीबाई को ग्वालियर पर अधिकार प्राप्त करने का सुझाव दिया जिससे रानी अपनी मंजिल तक पहुंचने में सफल हो सकें। तब इस प्रस्ताव का समर्थन करते हुए बैजाबाई ने सहमति जताई और स्वाधीनता संग्राम में महारानी लक्ष्मीबाई और तात्या टोपे का साथ दिया। सन् 1857 की क्रांति के समय झांसी, ग्वालियर और पेशवा की सेना संकट में थी। युद्ध की तैयारी व क्रांति ने आर्थिक स्थिति को खोखला कर दिया था। ऐसी स्थिति में रानी के इशारे पर ग्वालियर के शाही खजाने से सेना को 5-5 महीने की पगार और रसद आपूर्ति कर आर्थिक सहायता प्रदान की गई जिससे सेना में स्फूर्ति का संचार हुआ और उसने अंग्रेजी सेना के दांत खट्टे कर दिए। ग्वालियर रियासत के राजकोष के प्रधान कोषाध्यक्ष अमर चंद्र बांठीया ने महारानी बैजा बाई के इशारे पर सेना को आर्थिक सहायता प्रदान की थी इसलिए श्री अमर चंद्र बांठीया को 22 जून 1858 ई में ग्वालियर के सराफा बाजार में नीम के पेड़ पर लटका कर फांसी दे दी गई थी। सन् 1857 की क्रांति, प्रारंभ में सैनिक विद्रोह ही थी परंतु बाद में जन-आंदोलन के रूप में उभर कर सामने आई। सन् 1857 की क्रांति में बैजाबाई ने बहुत आर्थिक सहयोग किया। सन् 1857 के संग्राम में पुरुष वर्ग के बराबर ही भारत की महिलाओं की भी सशक्त भूमिका रही। उन महिलाओं में ग्वालियर रियासत की महारानी बैजाबाई भी शामिल थीं जिन्होंने तत्कालीन राजनीतिक व अपनी कूटनीति चालों से अंग्रेजों के छक्के छुड़ा दिए थे।

“निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल,
बिन निज भाषा-ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल”

-भारतेन्दु हरिश्चंद्र

हे भगवान ! मुझे मेरा बचपन लौटा दे

विजय सिंह मीना
वरिष्ठ लेखापरीक्षक



हे भगवान ! मुझे मेरा बचपन लौटा दे,
वो चवन्नी की चार टॉफी, उनका स्वाद चखा दे,
रास्तों में घूमूं बेफिक्र, वो एहसास लौटा दे,
हे भगवान ! मुझे मेरा बचपन लौटा दे ।

हे भगवान ! मुझे दादाजी के कंधों का मजा चखा दे,
दादाजी की पकड़ उंगली, वो मेला दिखा दे,
मेले के वो झूले झुला दे, मेले की चाट का स्वाद चखा दे
हे भगवान ! मुझे मेरा बचपन लौटा दे ।

हे भगवान ! मुझे मेरा बचपन लौटा दे,
सीख चुका हूं बहुत कुछ इस जिंदगी से,
अब वो बचपन के पाठ सिखा दे,
हे भगवान ! मुझे मेरा बचपन लौटा दे ।

हे भगवान ! मुझे मेरा बचपन लौटा दे,
बहुत खेल दिखा दिए इस जिंदगी ने,
अब बचपन के वे खेल खिला दे,
हे भगवान ! मुझे मेरा बचपन लौटा दे ।



हे भगवान ! मुझे मेरा बचपन लौटा दे,
झेल चुका हूं बहुत दुःख इस जिंदगी में,
हाथों से वो दुःख की लकीरें मिटा दे,
हे भगवान ! मुझे मेरा बचपन लौटा दे ।

हे भगवान ! एक गुज़ारिश है आपसे,
वो मेरा हंसता-खेलता बचपन लौटा दे,
हे भगवान ! मुझे मेरा बचपन लौटा दे ।

कार्यालय में हिंदी भाषा में होने वाली स्वाभाविक त्रुटियां

निधि गौतम
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक



किसी भी भाषा में यदि अशुद्धि हो तो वह लिखने-पढ़ने का आनंद कम कर देती है। भाषा की शुद्धता बनाए रखने से भाषा परिमार्जित होती है। विश्व स्तर पर हिंदी अपनी श्रेष्ठता साबित कर पाए, इसके लिए भाषा की शुद्धता आवश्यक है। देवनागरी लिपि संसार की अन्य लिपियों से अधिक वैज्ञानिक मानी गई है, क्योंकि इसमें सभी ध्वनियों को व्यक्त करने की क्षमता तो है ही, साथ ही एक ध्वनि को व्यक्त करने के लिए एक ही लिपि चिन्ह है। फिर भी, लोग प्रायः वर्तनी संबंधी अशुद्धियां किया करते हैं।

कार्यालय में एक अनुवादक के तौर पर मैंने बहुत बार यह देखा है कि अक्सर लोग हिंदी भाषा के लेखन में कुछ स्वाभाविक सी गलतियां कर बैठते हैं जो बहुत सामान्य हैं पर उनका निदान आवश्यक है। हिंदी भाषा लेखन शैली में कुछ सामान्य त्रुटियां जो मैंने पाई हैं, वे निम्नवत हैं:-

हिंदी व्याकरण में की गई गलतियां:-

- 'न' के स्थान पर 'ना' शब्द का प्रयोग करना, जैसे- ये कहना गलत ना होगा कि कार्यालय में पत्रिका का प्रकाशन, कार्मिकों को अपने कौशल को प्रदर्शित करने का एक बेहतरीन मंच प्रदान करता है। सही शब्द है- न।

'न' अपने आप में एक पूर्ण शब्द है, इसका अर्थ नकारात्मकता को व्यक्त करता है। जैसे - 'मुझसे यह अन्याय न सहा जाएगा'

'ना' एक प्रकार का निपात है, जिसे किसी बात पर विशेष बल देने के लिए प्रयोग किया जाता है। जैसे - 'जाओ ना, नहीं तो देर हो जाएगी।'

- 'कि' को 'की' लिखना। जैसे - उपर्युक्त विषयांतर्गत लेख है की..। सही शब्द है - कि।
- 'क्योंकि' को 'क्यूँकि' लिखना। जैसे - मुझे शाम को टहलना पसंद है क्यूँकि उस समय शरीर में एक अद्भुत ताजगी का संचार होता है। सही शब्द है - क्योंकि।
- 'पर' को 'पे' लिखना। जैसे - ट्रेन प्लेटफार्म पे आ गई थी। सही शब्द है - पर।

- 'ष' व 'श' में भ्रम होना। विषय को विशय लिखना आदि।
- अंग्रेजी के फुलस्टॉप (.) का प्रयोग करना, या स्पेस के चिह्न का प्रयोग करना। हिंदी के वाक्य को पूर्णविराम (!) से समाप्त करना उचित है।
- 'ँ' के बिन्दु के प्रयोग में गलतियां करना। यह एकवचन और बहुवचन में अंतर को खत्म कर देता है। जैसे— 'मैं' को 'मे' लिखना, 'हैं' को 'है' लिखना, 'हूँ' को 'हू' लिखना, 'उन्होंने' को 'उन्होने' लिखना आदि।
- 'उ' व 'ऊ' की मात्राओं के प्रयोग में भ्रम होना। जैसे— 'हूँ' को 'हुं' लिखना, 'स्कूल' को 'स्कुल' लिखना, 'प्रभु' को 'प्रभू' लिखना आदि।
- 'इ' व 'ई' की मात्राओं में भ्रम होना। जैसे— 'क्षेत्रीय' को 'क्षेत्रिय' लिखना आदि।
- 'श', 'ष' और 'स' की अशुद्धियां — 'श', 'ष' और 'स' भिन्न-भिन्न अक्षर हैं। इन तीनों की उच्चारण प्रक्रिया भी अलग-अलग है। इनके उच्चारण में निम्नांकित बातों की सावधानी रखी जानी चाहिए—

'ष' केवल संस्कृत शब्द में आता है। जैसे — संतोष, भाषा, पीयूष, पुरुष, शुश्रूषा आदि। यदि तत्सम शब्दों में 'श' हो, तो उसके तद्भव में 'स' होता है। जैसे — शूली-सूली, शाक-साग आदि।

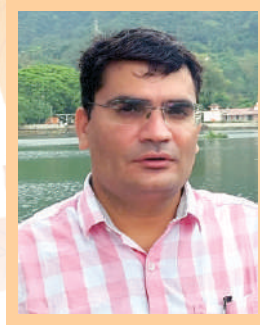
हिंदी एक अत्यंत सरल भाषा है, किंतु कोई भी भाषा सीखने से ही आती है। यह बात मन से निकाल देनी चाहिए कि हिंदी सीखने की आवश्यकता नहीं है। दोषमुक्त और अच्छी हिंदी लिखने-बोलने के लिए यह आवश्यक है कि हम शब्दों और वाक्यों का शुद्ध प्रयोग करना सीखें।

हमारे देश में हिंदी एक पुल का कार्य करती है जो विभिन्न भाषा-भाषी लोगों को जोड़ती है। कार्यालय के कामकाज में हिंदी भाषा के प्रयोग को और अधिक सुधारने एवं दस्तावेजों को त्रुटियों से बचाने के लिए हिंदी शब्दकोष का प्रयोग कर सकते हैं। हिंदी हमारी राजभाषा है तथा इसे इसके शुद्ध रूप में ही प्रयोग में लाना उचित है। भ्रम और अज्ञान के कारण भाषा में अनेकों अशुद्धियां होती हैं। कभी-कभी एक छोटी सी लकीर अथवा बिंदु, अर्थ का अनर्थ कर देता है। जैसे— पकड़ो, मत जाने दो। और पकड़ो मत, जाने दो। हिंदी के प्रयोग में प्रत्येक व्यक्ति को बोलते या लिखते समय प्रत्येक वर्ण या अक्षर की ध्वनि अथवा शब्द-ध्वनि पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

स्वतंत्रता सेनानियों का राजभाषा हिंदी में योगदान

विजय सिंह मीना

वरिष्ठ लेखापरीक्षक



आज हिंदी हमारी राष्ट्रभाषा ही नहीं वरन् राजभाषा भी है। हिंदी को एक प्रादेशिक भाषा की हैसियत से लेकर राष्ट्रभाषा के रूप में लोकप्रिय और सर्वमान्य बनने में और फिर भारत की राजभाषा बनने में कई शताब्दियां लगी हैं। राजभाषा के रूप में हिंदी को जो मान्यता दी गयी उसमें स्वतंत्रता-संग्राम के हमारे राजनेताओं की भूमिका महत्वपूर्ण रही है। यह देखकर आश्चर्य होता है कि हिंदी के विकास के लिए उन चिंतकों, मनीषियों और नेताओं ने अभूतपूर्व कार्य किया है जो अधिकतर हिंदीतर प्रदेश के थे। हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने का विचार सर्वप्रथम बंगाल में ही उदित हुआ और प्रारंभ से अंत तक इसे वहां के मूर्धन्य नेताओं का सक्रिय सहयोग प्राप्त हुआ। पूरे देश के लिए एक राष्ट्रभाषा हिंदी की कल्पना करने वालों में सबसे अग्रणी हैं बंगाल के श्री केशवचंद्र सेन, जिन्होंने सन् 1873 में अपने पत्र 'सुलभ समाचार' (बंगला) में लिखा "यदि भाषा एक न होने पर भारतवर्ष में एकता न हो तो उसका उपाय क्या है? समस्त भारतवर्ष में एक भाषा का प्रयोग करना इसका उपाय है। इस समय भारत में जितनी भी भाषाएं प्रचलित हैं, उनमें हिंदी भाषा प्रायः सर्वत्र प्रचलित है। इनके अलावा अनेक स्वतंत्रता सेनानियों ने प्रांतीयता की भावना से ऊपर उठकर मुक्त कंठ से हिंदी का समर्थन किया, जिनकी हिंदी सेवा अविस्मरणीय रहेगी।

"स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है जिसे मैं प्राप्त करके रहूंगा" का नारा देने वाले नेता बाल गंगाधर तिलक का स्वाधीनता संग्राम के इतिहास में विशिष्ट स्थान है। हिंदी का समर्थन करते हुए 'नागरी प्रचारिणी पत्रिका' में उन्होंने लिखा था "यह आंदोलन उत्तर भारत में केवल एक सर्वमान्य लिपि के प्रचार के लिए नहीं है, यह तो उस आंदोलन का एक अंग है जिसे मैं राष्ट्रीय आंदोलन कहूंगा और जिसका उद्देश्य समस्त भारत वर्ष के लिए एक राष्ट्रीय भाषा की स्थापना करना है, क्योंकि सबके लिए समान भाषा राष्ट्रीयता का महत्वपूर्ण अंग है, अतएव यदि आप किसी राष्ट्र के लोगों को एक-दूसरे के निकट लाना चाहें तो सबके लिए समान भाषा से बढ़कर सशक्त अन्य कोई बल नहीं है।"

तिलक हिंदी को राष्ट्रभाषा मानते थे और देवनागरी को हिंदी की लिपि मानते थे। तिलक ने राष्ट्रीय चेतना को प्रबल करने के लिए सन् 1903 में 'हिंदी केसरी' नामक पत्रिका का प्रकाशन भी प्रारंभ किया और इस बात का परिचय दिया कि जन साधारण तक अपने विचारों को पहुंचाने के लिए केवल हिंदी ही एक सरल और सशक्त माध्यम है। साथ ही तिलक ने अंग्रेजी के बजाय हिंदी में भाषण देने की परंपरा आरंभ कर अन्य नेताओं के समक्ष एक आदर्श प्रस्तुत किया।

महात्मा गांधी भाषा के प्रश्न को राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम के प्रश्नों में सबसे अधिक महत्वपूर्ण मानते थे। उन्होंने प्रारंभ से हिंदी को स्वतंत्रता संग्राम की भाषा बनाने के लिए अथक परिश्रम किया। सन् 1917 में उन्होंने एक परिपत्र निकाल कर हिंदी सीखने के कार्य का सूत्रपात किया। गांधीजी की प्रेरणा से सन् 1925 में कांग्रेस ने यह

प्रस्ताव पारित किया कि कांग्रेस, कांग्रेस की महासमिति और कार्यकारिणी समिति का कामकाज आमतौर पर हिंदी में चलाया जाएगा। इसी का परिणाम था कि सन् 1925 में अखिल भारतीय हिंदी साहित्य सम्मेलन का अधिवेशन भरतपुर में हुआ जिसकी अध्यक्षता गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने की और उन्होंने हिंदी में बोलकर हिंदी का प्रबल समर्थन किया।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने विभिन्न राज्यों में हिंदी-प्रचार करने के लिए नेताओं को प्रेरित किया और लोगों के अलग-अलग जत्थों को सभी राज्यों में भेजा। उन्होंने स्वयं अपने बेटे श्री देवदास गांधी को हिंदी के प्रचार के लिए भारत के दक्षिण में भेजा था।

गांधीजी के प्रयत्नों से तमिलनाडु में हिंदी के प्रति ऐसा उत्साह प्रवाहित हुआ कि प्रांत के सभी प्रभावशाली नेता हिंदी का समर्थन करने लगे। यह वह समय था जब चक्रवर्ती राजगोपालाचारी जैसे नेता हिंदी के प्रचार को अपना भरपूर सहयोग दे रहे थे।

‘पंजाब केसरी’ के नाम से प्रसिद्ध लाला लाजपतराय एक महान देशभक्त, शिक्षाशास्त्री ही नहीं, एक प्रभावशाली पत्रकार भी थे। पंजाब में हिंदी के प्रचार का पूरा श्रेय लालाजी को जाता है। जब उर्दू-हिंदी का विवाद जोरों से चल रहा था, तब लालाजी ने हिंदी का बड़ा समर्थन किया और उन्हीं के प्रयत्नों से पंजाब के शिक्षा क्षेत्र में हिंदी को स्थान मिला। उन्होंने अनेक शिक्षण संस्थाओं की स्थापना की जिनमें हिंदी का अध्ययन अनिवार्य बनाया गया। लालाजी की प्रेरणा से ही पंजाब विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में हिंदी को स्थान मिला।

स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास पुरुष के रूप में विख्यात पंडित मदनमोहन मालवीय जी का नाम हिंदी प्रचारकों में बड़े आदर और सम्मान के साथ लिया जाता है। हिंदी के प्रचार एवं प्रसार और हिंदी के स्वरूप निर्धारण दोनों ही दृष्टियों से उन्होंने हिंदी की अभूतपूर्व सेवा की। यह उन्हीं का प्रोत्साहन, समर्थन और प्रेरणा थी जिसकी बदौलत हिंदी, प्रशासन एवं राजकाज की भाषा बनी। सन् 1986 के कांग्रेस अधिवेशन में श्री मालवीय के भाषण से प्रभावित होकर कालाकांकर के राजा ने अपने हिंदी दैनिक ‘हिंदुस्तान’ का उन्हें संपादक बनाया। उसके बाद उन्होंने हिंदी साप्ताहिक ‘अभ्युदय’ प्रारंभ किया और सन् 1910 में प्रयाग से ‘मर्यादा’ नामक हिंदी पत्रिका तथा सन् 1933 में ‘सनातन धर्म’ नामक हिंदी पत्र भी प्रारंभ किया। उन्हीं की प्रेरणा से कई और हिंदी पत्रिकाओं का जन्म हुआ।

राजर्षि पुरुषोत्तम दास टण्डन की हिंदी सेवा भी अप्रतिम है। वे हिंदी साहित्य सम्मेलन के कर्तार्थ थे और उससे हिंदी प्रचार के कार्य को बड़ी गति मिली। हिंदी को आगे बढ़ाने और राष्ट्रभाषा के रूप में इसे सर्वोत्तम स्थान देने के लिए टण्डन जी ने कठिन परिश्रम किया। इन्होंने 10 अक्टूबर, 1910 को वाराणसी के नागरी प्रचारिणी सभा के प्रांगण में हिंदी साहित्य सम्मेलन की स्थापना की। फिर सन् 1918 में उन्होंने ‘हिंदी विद्यापीठ’ और सन् 1947 में ‘हिंदी रक्षक दल’ की स्थापना की। टण्डन जी हिंदी को देश की आजादी के पहले आजादी प्राप्त करने का और आजादी के बाद आजादी को बनाए रखने का साधन मानते थे। उन्होंने हिंदी भाषा को राष्ट्रभाषा का दर्जा दिलाने के लिए हरसंभव प्रयास किए। अपने अध्यक्षीय भाषण में उन्होंने बहुत ही आकर्षक ढंग से हिंदी भाषा के महत्व को बताया ताकि सबके मन में हिंदी भाषा के लिए प्रेम जाग जाए और देशभर में हिंदी का ही प्रचार-प्रसार हो। उन्होंने बहुत ही सरल ढंग से हिंदी को प्रगति के मार्ग पर लाने का प्रयास किया।

स्वतंत्रता सेनानियों में देशरत्न डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जी की हिंदी सेवा से कौन परिचित नहीं है ? भारतीय संविधान सभा के अध्यक्ष के रूप में हिंदी को उचित स्थान दिलाने का श्रेय डॉ. राजेन्द्र प्रसाद को ही है। भारत के

प्रथम राष्ट्रपति के पद से उन्होंने जो हिंदी की सेवा की, उसका विशेष महत्व है। उनके कार्यकाल में सरकारी स्तर पर हिंदी को मान्यता मिली।

“यदि भारत में प्रजा का राज चलाना है, तो वह जनता की भाषा में चलाना होगा” इन शब्दों में जनता की भाषा की वकालत करने वाले काका कालेलकर जी का नाम हिंदी भाषा के प्रचार—प्रसार और विकास में अतुलनीय योगदान देने वालों में आदर के साथ लिया जाता है। सन् 1942 में वर्धा में जब हिंदुस्तानी प्रचार सभा की स्थापना हुई तो काका साहब ने ‘हिंदुस्तानी’ के प्रचार के लिए पूरे देश का भ्रमण किया। उन्होंने हिंदी के प्रचार कार्यक्रम को राष्ट्रीय कार्यक्रम के रूप में प्रतिष्ठित किया और सन् 1938 में दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा के अधिवेशन में इसका खुलकर ऐलान भी किया। अपने इसी लक्ष्य पर अडिग रहते हुए उन्होंने अपना संपूर्ण जीवन हिंदी के विकास और प्रचार—प्रसार में लगा दिया।

श्री केशवचन्द्र सेन पहले ऐसे राष्ट्रीय नेता थे जिन्होंने ‘राष्ट्रभाषा हिंदी’ के महत्व को हृदय से समझा और स्वीकार किया। साथ ही, भारत को एकता के सूत्र में बांधने की दृष्टि से सभी से यह आह्वान किया कि सब हिंदी को आत्मसात करें क्योंकि हिंदी हमारे देश की आत्मा है।

राष्ट्रभाषा के प्रहरी के रूप में सेठ गोविन्द दास जी को कौन भुला सकता है ? अपने युवाकाल में ही कई हिंदी पत्रिकाएं प्रारंभ कर सेठजी ने हिंदी के प्रति अपने प्रेम का परिचय दिया था। 18 मई 1949 में जब भारतीय संविधान सभा की बहस चल रही थी तब गोविंद दास जी ने कहा था, “मैं व्यक्तिगत रूप से यह चाहता हूं कि — संविधान मौलिक रूप में हमारी मुख्य भाषा में हो, अंग्रेजी में नहीं, जिससे हमारे भावी न्यायाधीश अपनी भाषा पर निर्भर हो सकें, विदेशी भाषा पर नहीं।” उन्होंने हिंदी की समृद्धि और प्रचार के लिए महत्वपूर्ण योगदान दिया था। इसी कारण से सन् 1963 में सेठ जी को अखिल भारतीय हिंदी साहित्य सम्मेलन का अध्यक्ष चुना गया था।

यहां हमने हिंदी के प्रचार—प्रसार एवं उसे राजभाषा की मंजिल तक पहुंचाने वाले कुछ प्रमुख स्वतंत्रता सेनानियों के योगदान का अत्यंत संक्षिप्त उल्लेख किया है। इसके अतिरिक्त अन्य बहुत से महत्वपूर्ण नेताओं के नाम गिनाए जा सकते हैं, जिन्होंने हिंदी का प्रबल समर्थन किया और हिंदी को विकसित करने में अपना बहुमूल्य सहयोग दिया।

**“हिंदुस्तान की शान है हिंदी,
हर हिंदुस्तानी की पहचान है हिंदी,
एकता की अनुपम परंपरा है हिंदी,
हर हिंदुस्तानी का अरमान है हिंदी।”**

वो मजदूर की बेटी

स्वर्णलता गुप्ता
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी



वो मजदूर की बेटी,
जब देखती मां को तोड़ते हुए पत्थर,
सोचती, क्या मेरी ही खातिर,
भटकती—फिरती है मां दर—बदर ?
उसकी सूनी—सूनी आँखें,
देखती सूने अधूरे से स्वप्न,
जिनका आदि है न अंत,
बस आशाओं का काल्पनिक चमन,
कैसे चुकेगा, मां का ये कर्ज,
विह्वल हो उठता उसका अंतर्मन
वो मजदूर की बेटी,
जब देखती मां को तोड़ते हुए पत्थर,
सोचती, क्या मेरी ही खातिर,
भटकती—फिरती है मां दर—बदर ?

मां के माथे की बूंदें देख,
सोचती सहेज लूं इन्हें अपने पास,
ये जल—बिंदु नहीं, लहू है मां का,
इनमें झलकती मुझे पालने की आस,
फिर सोचा उसके अंतर्मन ने,
जब नाजुक कलाई मां की,
थाम लेती है वज्र सा हथोड़ा,
करती असंभव को संभव,

लक्ष्य पाती, कभी पूरा तो कभी थोड़ा,
वो मजदूर की बेटी,
जब देखती मां को तोड़ते हुए पत्थर,
सोचती, क्या मेरी ही खातिर,
भटकती—फिरती है मां दर—बदर ?

बिन पति, सूना जीवन,
मां की उजड़ी मांग को देखा,
मुझ धरोहर की रक्षा खातिर,
मां को सबला बनते देखा,
जमाने की गिद्ध दृष्टि से बचाने,
आँचल के पंख बिछाते देखा,
संघर्षों से लड़ती मां को,
पत्थरों में खिले फूल—सा देखा,
जीवन के उलझे धागों को,
सहज सुलझाते देखा,
कांटे चुनकर मेरे पथ से,
मां को फूल बिछाते देखा
वो मजदूर की बेटी ,
जब देखती मां को तोड़ते हुए पत्थर,
सोचती, क्या मेरी ही खातिर,
भटकती—फिरती है मां दर—बदर ?

पचमढ़ी : सतपुड़ा की रानी

माधवी मुजुमदार

सहायक पर्यवेक्षक



यात्रा जीवन का एक सुखद अनुभव होता है। मैंने अपने जीवन में यह अनुभव कई बार किया है। विगत वर्ष मेरी पचमढ़ी जिसे लोग 'सतपुड़ा की रानी' के नाम से भी जानते हैं, की यात्रा बहुत ही आनंदमयी एवं यादगार रही। पचमढ़ी घूमने की योजना अचानक ही बनी परंतु उस पर्यटक स्थल पर जाकर यह एहसास हुआ कि यह था मनोरम स्थल एक बार अवश्य ही देखने योग्य है।

मुझे 10 लोगों के फॅमिली टूरिस्ट ग्रुप के साथ मध्य प्रदेश के होशंगाबाद जिले में स्थित पचमढ़ी जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। सर्वप्रथम हम ग्वालियर स्टेशन से ट्रेन से पचमढ़ी के लिए रवाना हुए। पिपरिया पहुंच कर हम टैक्सी से पचमढ़ी के होटल में पहुंचे। पचमढ़ी के होटल का नाम तो याद नहीं बस इतना याद है कि होटल की बुकिंग एम.पी. टूरिज्म से हो गई थी। जून का महीना था, चूंकि पचमढ़ी एक पर्वतीय स्थल है अतः यहां बारिश का सुहावना मौसम था। सुबह तो वहां का दृश्य अत्यंत ही मनोरम था, वह हिल स्टेशन कोहरे की पतली चादर ओढ़े हुए था। बाग-बगीचे एवं प्रकृति का हरा-भरा रूप स्वतः ही उस जगह की शोभा बढ़ाए हुए थे।

मैदानी इलाकों की अपेक्षा पचमढ़ी में मौसम बहुत ही मनभावन और सुहाना था। यहां की वादियों में एक नमी थी जो हमारे दिल और मन को बहुत ही सुखद एहसास दे रही थी। हमने पचमढ़ी घूमने के लिए होटल में पहले ही पर्यटन स्थलों की सूची बना ली थी।

पहले दिन घूमने के लिए हम सभी ने सफेद रंग का ड्रेस कोड तय किया। श्वेत वस्त्र धारण करके हम जटाशंकर मंदिर के दर्शन के लिए निकल पड़े। मंदिर में एक जल कुंड हैं जिसका जल कभी खत्म नहीं होता। कहा जाता है कि इस जल कुंड का जल बहुत ही स्वच्छ होता है एवं कई बीमारियों को दूर करने में कारगर होता है इसीलिए यहां श्रद्धालुओं की बहुत भीड़ होती है। पचमढ़ी में पांच प्रमुख दर्शनीय स्थल हैं पांडव गुफाएं, जटा शंकर, चौरागढ़, महादेव और धूपगढ़। पचमढ़ी की पहाड़ी गुफाओं के अंदर भी कई पवित्र शिव मंदिर हैं जिनमें बड़ा महादेव, छोटा महादेव, गुप्त महादेव आदि प्रमुख हैं। कोई भी आसानी से सतपुड़ा पर्वतमाला के वैभव में खो सकता है।

जटाशंकर मंदिर की गुफा के अंदर एक आश्चर्यजनक प्राकृतिक रूप से निर्मित शिवलिंग है और उसके ऊपर गुफा की छत से टपकते पानी से पत्थर में बनी एक प्रभावशाली सांप जैसी संरचना (शेषनाग, हजार सिर वाला दिव्य सांप) दिखाई देती है। माना जाता है कि यह सांप जैसी संरचना भगवान शिव की जटाएं हैं।

यात्रा का दूसरा दिन बी-फॉल नामक जल प्रपात के नाम रहा। इसे जमुना जलप्रपात के नाम से भी जानते हैं। पचमढ़ी हिल स्टेशन पर बहुत सारे झरने हैं, लेकिन यहां का बी-फॉल झरने का उन तमाम झरनों की अपेक्षा अधिक प्रसिद्ध होने का एक प्रमुख कारण इसके पानी का अत्यधिक ऊंचाई से गिरना है जो कि पचमढ़ी हिल स्टेशन



घूमने आने वाले पर्यटकों के आकर्षण का प्रमुख केंद्र हैं। इस झरने का पानी शहर के लोगों के पीने के काम भी आता है। स्थानीय लोगों के साथ-साथ पर्यटकों के बीच, बी-फॉल एक लोकप्रिय पिकनिक स्पॉट के तौर पर प्रसिद्ध है। बी-फॉल में लोग अक्सर तैराकी के लिए जाते हैं।

पचमढ़ी की खास बात यह है कि यहां गाड़ियां कम चलती हैं तथा दूर-दूर तक चल कर ही जाना पड़ता है जिस वजह से प्राकृतिक दृश्यों का आनंद भरपूर उठाया जा सकता है। उसी दिन हम रीछगढ़ पहुंचे, यहां तक पहुंचने के लिए एक छोटी सी चढ़ाई की जरूरत होती है, यह जगह देखने लायक और मंत्रमुग्ध कर देने वाली है।

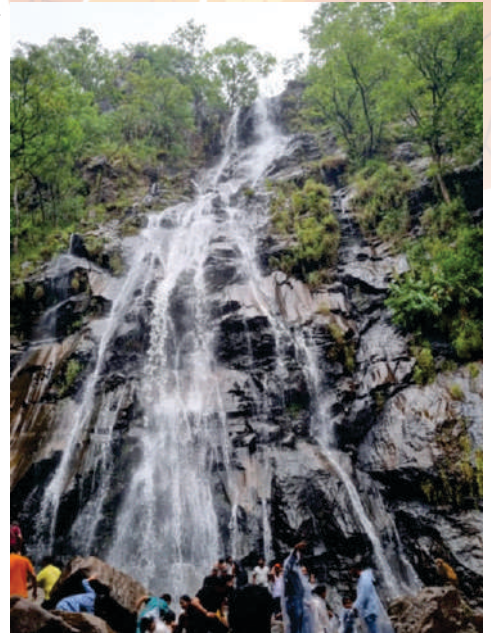
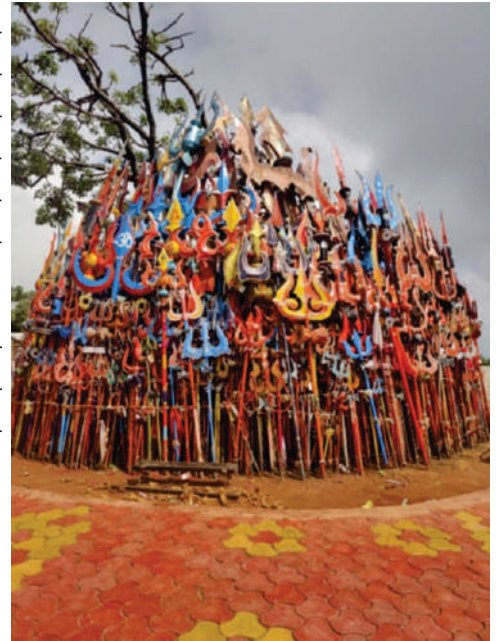
पचमढ़ी में हमने फलों का सेवन किया और यहाँ के सबसे प्रसिद्ध उबले हुए बेर हमने जी भर कर खाए।

पचमढ़ी की खूबसूरत घाटियों और जंगलों के बीच चौरागढ़ के शिखर पर स्थित भगवान भोलेनाथ का मंदिर है। यह पचमढ़ी के सबसे प्रसिद्ध मंदिरों में से एक है। चौरागढ़ मंदिर लगभग 4200 फीट की ऊंचाई पर स्थित है, जिस वजह से यहां से आसपास के जंगलों, घाटियों और सूर्योदय का मनमोहक दृश्य भी देखा जा सकता है। इसी वजह से अक्सर पचमढ़ी की यात्रा पर आने वाले पर्यटक यहां घूमने आते हैं। इसके साथ ही महाशिवरात्रि के दौरान यहां मेला और महाभिषेक का आयोजन किया जाता है। मंदिर तक पहुंचने के लिए भक्तों को बेहद कठिन लगभग 1300 सीढ़ियां चढ़नी पड़ती हैं। हमने अधिकतर मंदिरों के दर्शन पैदल चलकर ही किए।

रात में होटल पहुंचकर हमने शानदार रात्रि भोजन का आनंद लिया और सभी अपने-अपने कमरे में सोने चले गए। मैं पचमढ़ी की खूबसूरत वादियों को याद करते हुए होटल की बालकनी में टहल रही थी और वहां से होटल के आस-पास के रात्रि नजारे का आनंद ले रही थी। पचमढ़ी की सुंदर वादियों में चार दिन कैसे बीत गए मुझे पता भी नहीं चला। ये हमारे सफर का आखिरी दिन था, पर अभी भी मेरा मन यहां से जाने को तैयार नहीं था। खैर अगले दिन सुबह की हमारी टिकट थी तो मैं भी जा कर सो गई और पचमढ़ी की हसीन वादियों के सपनों के साथ कब नींद आ गई, मुझे पता ही नहीं चला।

पचमढ़ी पूरी तरह से जंगल और पहाड़ों से घिरा हुआ है, यहां पर आपको बहुत खूबसूरत प्राकृतिक दृश्य देखने को मिलते हैं, यहां पर वादियों का मनोरम दृश्य देखने को मिलता है। यदि आपको थकान भरे जीवन से सुकून चाहिए तो एक बार पचमढ़ी अवश्य जाएं।

**“सैर कर दुनिया की गाफिल जिंदगानी फिर कहां,
जिंदगी गर कुछ रही तो ये जवानी फिर कहां।”**



आओ, थोड़ा मनन करें

विजय सुगंधी

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी



धर्म की रक्षा हेतु,
मर्यादा की प्रतिष्ठा हेतु,
थोड़ा क्रोध संवरण करें,
आओ, थोड़ा मनन करें ॥ 1 ॥

स्वयं की पुष्टि हेतु,
सृष्टि के उत्थान हेतु,
थोड़ा सेवन कम करें,
आओ, थोड़ा मनन करें ॥ 6 ॥

भेदभाव दूर करने हेतु,
कुरीति के हरण हेतु,
थोड़ा व्यवहार सौम्य करें,
आओ, थोड़ा मनन करें ॥ 2 ॥

देश की रक्षा हेतु,
सीमा की सुरक्षा हेतु,
थोड़ा सैनिकों को नमन करें,
आओ, थोड़ा मनन करें ॥ 7 ॥

पृथ्वी के संरक्षण हेतु,
प्रदूषण से मुक्ति हेतु,
थोड़ा प्लास्टिक उन्मूलन करें,
आओ, थोड़ा मनन करें ॥ 3 ॥

स्वयं की शांति हेतु,
देश की उन्नति हेतु,
थोड़ा धन संकलन करें,
आओ, थोड़ा मनन करें ॥ 8 ॥

पर्यावरण की सुरक्षा हेतु,
जल के संवर्धन हेतु,
थोड़ा खनन कम करें,
आओ, थोड़ा मनन करें ॥ 4 ॥

मर्यादा की प्रतिष्ठा हेतु,
न्याय मार्ग की स्थापना हेतु,
थोड़ा कर्तव्य पालन करें,
आओ, थोड़ा मनन करें ॥ 9 ॥

पृथ्वी की रक्षा हेतु,
वायु प्रदूषण मुक्ति हेतु,
व्यर्थ दहन न करें,
आओ, थोड़ा मनन करें ॥ 5 ॥

कश्मीर की यात्रा

शाहमीर खान
लेखापरीक्षक



विश्व के सभी देशों की अपनी-अपनी विशेषताएं हैं। कोई देश समुद्र के लिए प्रसिद्ध है तो कोई रेगिस्तान के लिए, किसी देश के पहाड़ प्रसिद्ध हैं तो किसी देश में बर्फ, किंतु भारत एक ऐसा देश है जिसके चारों दिशाओं में अलग-अलग मौसम एवं पर्यावरण हैं। पूर्व में पहाड़ तो पश्चिम में रेगिस्तान, उत्तर में बर्फ और दक्षिण में समुद्र। असम से राजस्थान और कश्मीर से अंडमान तक अलग-अलग मौसम और वातावरण वाला एक मात्र देश भारत है। ऐसे ही अनेक लुभावने राज्यों में से एक सबसे खूबसूरत राज्य है जिसका नाम है जम्मू एवं कश्मीर।

जहां के नजारों से नजर नहीं हटती, जहां सिंध और झेलम बहतीं, जहां आसमान से बर्फ गिरती, जहां डल झील है जमती, हां, वही कश्मीर है, हां वही कश्मीर है जिसको दुनिया 'जन्नत' कहती है। कश्मीर की वादियां, बर्फ से ढके पहाड़, चिनार के पेड़, बहती नदियां, अद्भुत मौसम सब कुछ मनमोहक एवं लुभावना है। यूं तो कश्मीर में हर जगह घूमने लायक है किंतु आज चर्चा करते हैं कश्मीर के उन प्रसिद्ध स्थानों की जिन्हें देखो तो बस देखते ही रह जाओ।

सबसे पहले शुरुआत करते हैं कश्मीर की राजधानी "श्रीनगर" से। यूं तो पूरा कश्मीर बहुत खूबसूरत है किंतु श्रीनगर में स्थित "डल लेक" कश्मीर का सबसे चर्चित स्थान है। लगभग प्रत्येक पर्यटक की इच्छा होती है कि वो डल लेक की हाउसबोट में कुछ समय गुजारे। हाउसबोट में रुकना एक अलग ही अनुभव है। अपने आप में खूबसूरती समेटे हुए यहां पर स्थित हाउसबोट बहुत ही आकर्षक है। लकड़ी के ऊपर इतनी ज्यादा कारीगरी की गई है कि नजर हटाई ही नहीं जाती और फिर चारों तरफ से डल झील का पानी इसमें और अधिक उत्साहवर्धन का कार्य करता है। प्रातः से ही डल झील में नौकायान की शुरुआत हो जाती है एवं ऐसा प्रतीत होता है जैसे कि

प्रातः झील में से ही सूरज उगता हो एवं सायं के समय ऐसा लगता है कि झील में ही सूरज डूबता हो। इसके अतिरिक्त झील के बीचोबीच ही बाजार लगता है जिसमें कश्मीर की स्थानीय चीजों को खरीदा जा सकता है।

इसके अतिरिक्त श्रीनगर में इंदिरा गांधी ट्युलिप बाग, निगीन झील, निशात बाग, परी महल, मुगल बाग, शालीमार बाग, चश्म-ए-शाही एवं अन्य कई स्थान भी देखने लायक हैं।

इसके पश्चात अगला स्थान है सोनमर्ग, जिसका अर्थ है 'सोने का मैदान'। इसकी पृष्ठभूमि के रूप में, नीले आसमान के नीचे बर्फीले पहाड़ हैं। इन बर्फ से ढके पहाड़ों के बीच से उगता हुआ सूरज देखकर ऐसा लगता है मानो सारे संसार की खूबसूरती यहीं समा गई हो। पहाड़ों से बहती हुई जलधारा और मैदान में दौड़ते हुए घोड़े, इसे पर्यटकों के लिए सर्वश्रेष्ठ पर्यटन स्थल बनाते हैं। सोनमर्ग, कश्मीर की राजधानी "श्रीनगर" से 80 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। कार द्वारा दो घंटे में श्रीनगर से सोनमर्ग पहुंचा जा सकता है। यह रास्ता बहुत ही खूबसूरत है एवं रास्ते भर पहाड़ों में उड़ते हुए बादल देखने को मिलते हैं। सड़क के दाहिनी ओर बहती हुई सिंध नदी बहुत ही आकर्षक लगती है। रास्ते में, किनारे पर बने हुए ढाबे ठण्ड के मौसम में गर्म-गर्म नाश्ता उपलब्ध कराते हैं एवं पहाड़ों के नीचे, नदी के किनारे बैठकर नाश्ता आनंदमयी लगता है। सोनमर्ग में जीरो पॉइंट तक ही बाहर की गाड़ियां जाती हैं, उसके बाद का सफर घोड़े पर सवारी करके किया जाता है। लगभग 08 किलोमीटर तक घोड़े पर सवारी करना भी अत्यंत आनंदमय होता है। मैदान, पहाड़ी, नदी का किनारा एवं संकरी पगडंडी के बीच से चलते हुए घोड़े, सफर को हर्ष और उल्लास से भर देते हैं। झीलों के अलावा थजिवास ग्लेशियर एक अन्य पर्यटन स्थल है जो सोनमर्ग ग्लेशियर की तलहटी में स्थित है। यह पर्वत श्रेणी देवदार के घने जंगलों से ढकी हुई है जो इसे कैंप के लिए एक आदर्श पर्यटन स्थल बनाते हैं। यह ग्लेशियर पूरे वर्ष बर्फ से ढका रहता है, जब घोड़े ग्लेशियर के पास ले जाते हैं तो तापमान बिलकुल नीचे चला जाता है किंतु रोमांच चरम सीमा पर पहुंच जाता है। दोनों तरफ बर्फ से ढके हुए पहाड़ और बीच में बहती हुई सिंध, खेमों में मिलती हुई गरमा-गरम चाय और मैगी, इस सफर को हमेशा-हमेशा के लिए यादगार बना देती है। ग्लेशियर की चोटी पर पहुंच कर बर्फ पर स्लेजिंग करने में जो आनंद है उसका विवरण शब्दों में व्यक्त कर पाना संभव नहीं है। सोनमर्ग में मौजूद दूर गाइड के अनुसार बॉलीवुड की मशहूर फिल्म "बजरंगी भाईजान" की शूटिंग भी यहीं पर हुई थी। यहां के नजारे एवं सफर बहुत ही खूबसूरत, लुभावने एवं आनंदमय हैं।

सोनमर्ग का लुत्फ उठाने के बाद गुलमर्ग की तरफ प्रस्थान किया जा सकता है। "फूलों का प्रदेश" नाम से मशहूर यह स्थान बारामूला जिले में स्थित है। यह देश के प्रमुख पर्यटक स्थलों में से एक है। इसकी सुंदरता भव्य है एवं यह स्थान सिर्फ सुंदरता ही नहीं अपितु एक अन्य कारण से भी प्रसिद्ध है, और वो कारण है "विंटर गेम्स"। ऊंची-ऊंची बर्फ से ढकी हुई पहाड़ी एवं उसके सामने फैला हुआ बर्फ का मैदान दुनिया भर से खिलाड़ियों को आमंत्रित करता है। यहां फरवरी माह में विंटर गेम्स का आयोजन किया जाता है जिसमें स्कीईंग, स्नो बोर्ड, एटीवी राइड, स्लेजिंग आदि शामिल हैं। यहां खिलाड़ी ही नहीं, आम नागरिक भी इन सबका लाभ ले सकते हैं एवं एक आनंदमय रोमांचक अनुभव ले सकते हैं।

गुलमर्ग सिर्फ खेलों के लिए ही नहीं बल्कि एक और वजह से प्रसिद्ध है और वो है दुनिया की सबसे ऊंची गोंडोला राइड। जी हां, विश्व की सबसे ऊंची गोंडोला राइड भारत में गुलमर्ग में ही है। इसकी ऊंचाई पर पहुंच कर बर्फ से ढके हुए पहाड़ एवं सामने फैला हुआ बर्फ का मैदान और उस पर पर्यटकों का सैलाब एक देखने

लायक दृश्य है। इतनी ऊंचाई पर ठंड भी चरम सीमा पर होती है एवं इतनी ठंड में गरमा-गरम कश्मीरी कहवे का सेवन, आनंद को कई गुना बढ़ा देता है।

इसके अतिरिक्त गुलमर्ग के पास ही डंग झरना है, सर्दी के मौसम में यह जम जाता है और ऐसा प्रतीत होता है कि झरने से पानी के बदले बर्फ गिर रही हो। जमीन से लेकर पहाड़ तक बर्फ की परत देखने में बहुत ही आकर्षक लगती है एवं बहुत ही कम स्थानों पर ऐसे दृश्य देखने को मिलते हैं।

यूँ तो कश्मीर की हर जगह खूबसूरत एवं देखने लायक है किंतु सबसे ज्यादा प्रसिद्ध है “पहलगाम”। पहलगाम के बारे में यह भी कहा जाता है कि कश्मीर के मूल निवासी भी पर्यटन हेतु पहलगाम की ही यात्रा करते हैं। यह कश्मीर की राजधानी से 90 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। श्रीनगर से पहलगाम का रास्ता अत्यधिक सुंदर और लुभावना है एवं इस रास्ते पर सबसे ज्यादा आकर्षित करने वाली चीज मिलती है जिसका नाम है “केसर”। बहुमूल्य केसर की खेती सिर्फ इसी स्थान पर देखने को मिलती है। इससे आगे चलने पर क्रिकेट बल्ले की फैक्ट्रियां मिलती हैं एवं यहां बहुत अधिक मात्रा में बल्ले बनाए जाते हैं। यहां की लकड़ी इसके लिए बहुत अच्छी मानी जाती है

पहलगाम पहुंचने के पहले सड़क के दोनों तरफ सेब के बगीचे देखने को मिलते हैं। कश्मीरियों के लिए यह एक आम चीज है किंतु पर्यटकों के लिए एक यादगार नजारा है। लगभग 6-8 फीट की ऊंचाई वाले ये पेड़ सेबों से भरे पड़े हैं एवं स्वाद में भी यह बहुत लजीज होते हैं। यहां स्थित बागों में सेब का मुरब्बा, अचार, चटनी जूस आदि बहुत से खाद्य पदार्थ बेचे जाते हैं।

पहलगाम में बहुत से स्थल दर्शनीय हैं, किंतु इनमें सबसे ज्यादा प्रसिद्ध है “बेताब वैली”। यह बहुत ही सुंदर और मनमोहक जगह है। दरअसल इस स्थान पर बॉलीवुड की मशहूर फिल्म “बेताब” की शूटिंग हुई थी और तभी से इस स्थान का नाम “बेताब वैली” पड़ गया। यहां पहाड़ों के बीच से बहती हुई स्वच्छ जलधारा अत्यधिक लुभावनी लगती है। बहते हुए पानी में घोड़े पर सवारी करना रोमांचित कर देता है। बेताब वैली के अलावा “आरू वैली” भी ऐसा ही दर्शनीय स्थल है।

पहलगाम में एक और स्थान अत्यधिक प्रसिद्ध है जिसका नाम है “मिनी स्विट्जरलैंड”। यह पहाड़ों की चोटी पर बैसरन वैली में स्थित एक मैदान है जिसके चारों ओर बड़े-बड़े पेड़ लगे हैं। यह पूरा मैदान बर्फ से ढका रहता है एवं यहां भी कई प्रकार के खेलों का आयोजन किया जाता है। घोड़े पर बैठ कर पहाड़ की चोटी तक चढ़ाई करना एवं ऊपर पहुंच कर मनोरम प्राकृतिक दृश्य देखने का ऐसा अद्भुत अनुभव है जिसका विवरण शब्दों में किया जाना संभव नहीं है।

इनके अतिरिक्त कश्मीर में और भी बहुत से स्थान घूमने के लिए बहुत ही अच्छे हैं। कश्मीर की हवा भी प्रदूषण मुक्त है एवं भोजन भी बहुत ही जायकेदार होता है। यहां घर भी बहुत सुंदर तरीके से बने हैं और पर्यटकों को बहुत ही अच्छी मेहमाननवाजी का अनुभव होता है। यदि कोई भी घूमने का थोड़ा भी शौक रखता है तो उसे एक बार कश्मीर की यात्रा अवश्य करनी चाहिए।

नारी

शिवानी गुप्ता
आशुलिपिक



नारी! तू है सबसे प्यारी, तू है सबसे न्यारी,
तेरी पायल की खनक, पूरे घर को है खनकाती।
तेरी मुस्कान, पूरे घर को है महकाती,
नारी तू ही तो घर को स्वर्ग है बनाती।
सहनशीलता की मूरत है तू,
फूलों की पंखुड़ियों जितनी कोमल है तू,
समय आने पर अलग-अलग रूप है दिखाती,
कभी बनती है फूल, तो कभी शूल भी बन जाती, पर
नारी! तू है सबसे प्यारी, तू है सबसे न्यारी।

नारी! तू है इस संसार को जन्म देने वाली,
फिर क्यों रह जाती, इस समाज में बन कर बेचारी ?
हे पुरुष! नारी ने ही तुझे चलना सिखाया,
फिर भी क्यों तेरे ही डर से, अकेली चल नहीं पाती ?
क्यों घर में ही खुद को असुरक्षित है पाती,
डरी-सहमी सी अबला बन कर रह जाती।
जिसे तूने बनाया, उसी ने तुझे डराया, पर
नारी! तू है सबसे प्यारी, तू है सबसे न्यारी।

जिसे मानकर पूजा जाता है देवी,
वही क्यों बन कर रह जाती है कैदी ?
कल्पना अधूरी है, बिन नारी इस संसार की,
जिससे संसार का अस्तित्व है,

क्यों उसी का कोई अस्तित्व नहीं ?
उसे भी मान-सम्मान चाहिए,
उड़ने को खुला आसमान चाहिए, क्योंकि,
नारी! तू है सबसे प्यारी, तू है सबसे न्यारी।



क्यों न बनाएं एक ऐसा समाज,
जिसमें नारी का हो सच में सम्मान।
पुरुष के बिना नारी को अधूरा नहीं,
पूरा समझा जाए,
नारी अबला नहीं, सबला बन जाए,
वह भी गर्व से कहे 'नारी हूं मैं' और
सबसे प्यारी हूं मैं, सबसे न्यारी हूं मैं।

मेरी अंडमान यात्रा

अशोक कुमार यादव

वरिष्ठ लेखापरीक्षक



दिसंबर का महीना था, कड़ाके की ठंड से हाथ-पैर सुन्न हो रहे थे। मन में ख्याल आया कि कहीं घूमने जाते हैं, पर कहां? मैंने अपनी पत्नी के साथ विचार करना शुरू किया। उत्तर से दक्षिण एवं पूर्व से पश्चिम तक देश के चारों कोनों तक नजर दौड़ाने के बाद अंडमान जाने का निश्चय किया, और हमने इससे संबंधित जानकारी एकत्रित करना शुरू कर दी।

लगभग 572 छोटे-बड़े द्वीपों से मिलकर बना अंडमान निकोबार द्वीप समूह भारत का एक केंद्र शासित प्रदेश है, यह बंगाल की खाड़ी के दक्षिण में हिंद महासागर में स्थित है जिनमें से कुछ पर ही लोग रहते हैं। अंडमान प्रकृति का एक अद्भुत आश्चर्य है। यह द्वीप समूह पर्यटकों के लिए बहुत सारे आकर्षण प्रदान करता है। अंडमान में मन को प्रसन्न कर देने वाला अनोखा सूर्यास्त और इस जगह का एक दिलचस्प इतिहास, ये सभी कारण हमारी अंडमान यात्रा की योजना बनाने के लिए पर्याप्त थे।

हमारी उत्सुकता बढ़ने लगी। हमने जनवरी माह में अंडमान जाने का फैसला कर लिया और राजधानी एक्सप्रेस के सेकंड एसी कोच में दो टिकट बुक कर लिए और वहां जाने के लिए जरूरी कपड़ों की शॉपिंग और उनकी पैकिंग करना शुरू कर दिया।

जनवरी का महीना था। ठंड अपने चरम पर थी। हमारी अंडमान यात्रा में ग्वालियर से चेन्नई तक का सफर हमें ट्रेन से तय करना था। इस यात्रा के लिए मैं और मेरी पत्नी ने अपनी जरूरत के सारे सामान पैक कर लिए और तैयार होकर रेलवे स्टेशन के लिए निकल पड़े। ट्रेन शाम को थी, हम ट्रेन आने से लगभग एक घंटा पहले स्टेशन पहुंच गए और कड़ाके की ठंड में स्टेशन पर लगे एक स्टाल पर हमने गरमा-गरम चाय पी। थोड़ी देर बाद स्टेशन के प्लेटफार्म पर ट्रेन आने का सिग्नल हुआ और ट्रेन आने के साथ ही हमारी यात्रा की शुरुआत हो गई।

राजधानी एक्सप्रेस के सेकंड एसी कोच के साइड लोअर सीट पर बैठकर खाते-पीते और बाहर के खूबसूरत नजारों को देखते हुए लगभग 25 घंटे की उत्सुकता भरी यात्रा के बाद हम चेन्नई पहुंच गए। ट्रेन से उतरकर हम अपने बुक किए गए होटल में विश्राम के लिए चले गए, क्योंकि पोर्ट ब्लेयर के लिए हमारी फ्लाइट अगले दिन सुबह की ही थी।



चेन्नई पहुंच कर हमने सोचा कि थोड़ा चेन्नई का इतिहास भी जान लेते हैं। दक्षिण भारत के सबसे बड़े सांस्कृतिक, आर्थिक और शैक्षणिक केन्द्रों में से प्रमुख चेन्नई, बंगाल की खाड़ी के कोरोमंडल तट पर स्थित है। चेन्नई से पोर्ट ब्लेयर की फ्लाइट सुबह 9:00 बजे की थी और सुबह 07:00 बजे हम एयरपोर्ट के लिए निकल पड़े। लगभग 2 घंटे की हवाई यात्रा के पश्चात हम पोर्ट ब्लेयर पहुंच गए, जिसका हमें बेसब्री से इंतजार था। पोर्ट ब्लेयर पहुंचकर हमने अपने होटल में चेक-इन किया। हमने अपना सामान होटल में रखा एवं लंच करके हमने सेल्यूलर जेल का भ्रमण करने का निश्चय किया।

यह जेल अंग्रेजों द्वारा भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के सेनानियों को कैद रखने के लिए बनाई गई थी जो कि भारतीय मुख्य भूमि से हजारों किमी दूर स्थित है। यह "कालापानी" नाम से जानी जाती थी। कालापानी शब्द अंडमान के बंदी उपनिवेश के लिए "देश निकाला" का पर्याय है। कालापानी शब्द का अर्थ मृत्यु जल या मृत्यु के स्थान से है, जहां से कोई वापस नहीं आता। कालापानी यानि स्वतंत्रता सेनानियों को उन अनकही यातनाओं और तकलीफों का सामना करने के लिए जीवित नरक में भेजना जो मौत की सजा से भी बदतर था।

सेल्यूलर जेल में अंदर जाने के लिए टिकट खरीदने के बाद हम मुख्य गेट से अंदर गए और अंदर जाते ही लगभग डेढ़ सौ वर्ष पुराने वृक्ष के दर्शन हुये, तत्पश्चात् हमने जेल की कोठरियों को देखा, जोकि बहुत छोटी थीं। उन्हें कुछ इस तरह से डिजाइन किया गया था कि कोई कैदी एक दूसरे से बात करना तो क्या, देख भी न सके। कुछ समय दीवारों के बीच बिताया तो लगा मानो यह स्वतंत्रता सेनानियों की सारी पीड़ा की दास्तान खुद बयां कर रही हों, और रात्रि का लाइट और साउंड शो "स्वतंत्रता सेनानियों की दास्तान" आंखों में आंसू ला देने वाला था।

रात्रि में ही हमने अगले दिन सुबह बाराटांग जाने का फैसला किया। सुबह 5:00 बजे बस में सवार होकर हम बाराटांग के लिए निकल गए। यह लगभग 100 किमी दूर था।

हम जंगल के उस प्रवेश द्वार पर पहुंचे जिसमें जारवा, शोम्पेन, सेंटिलीज, ऑंगेस और अंडमानी जनजातियों का मूल निवास स्थान था। लगभग सौ से अधिक गाड़ियों का काफिला अन्ततः एक साथ जंगल में प्रवेश करता है। भयानक जंगल के बीचों-बीच से गुजरते वक्त डर भी लग रहा था और उत्सुकता भी थी कि काश हम उन जनजातियों को देख पाते जो दुनिया के संपर्क से दूर अपनी आदिमानव जैसी जिंदगी जी रहे हैं, और अचानक हमें वे दिख ही गए। वे हमारी गाड़ी के सामने आ गए। गाड़ी रोक ली, बिल्कुल नाममात्र के कपड़ों में, हाथ में धनुष बाण और कुल्हाड़ी देखकर हम सब बहुत डर गए। गाइड ने बस के कांच बंद करवा दिए और उनसे नजर न मिलाने को कहा परंतु अंत में उन्होंने बिना नुकसान पहुंचाए हमें जाने दिया।

फिर हम पहुंचे उस खाड़ी के पास जिसके उस पार मड ज्वालामुखी और लाइमस्टोन गुफा थी। भारी भरकम जहाज पर हमारी बस, यात्रियों सहित सवार हुई और तेज लहरों के साथ हम खाड़ी के उस पार पहुंच गए। फिर हमने उनके होटल में लंच कर मड ज्वालामुखी देखा, धरती चीर कर कीचड़ बाहर आता हुआ। तत्पश्चात मोटर बोट से लाइमस्टोन गुफा पहुंच गए। प्रकृति का अद्भुत नमूना देखते ही बनता है ऐसे सफेद पत्थरों से बनी हुई गुफा मानो किसी जौहरी ने चांदी से तराशी हो, इन यादों के साथ हम वापस अपने होटल पोर्ट ब्लेयर आ गए।

रात्रि में हमने अगले दिन का प्लान रॉस आइलैंड और नॉर्थवे आइलैंड भ्रमण निश्चित किया। सुबह के नाश्ते के पश्चात् हम मोटर बोट से रॉस आइलैंड गए, जहां ब्रिटिश और जापानी युद्ध की दास्तान, वहां की क्षतिग्रस्त इमारतों को देखकर लगाया जा सकता है और तत्पश्चात् हम वहां से नॉर्थवे आइलैंड अपनी मोटर बोट

से चले गए। वहां जाते ही हमने देसी अंदाज में भोजन किया, लगा मानो वहां कुछ भी खाने को मिल जाए वह काफी है, और वहां समुद्री रत्नों से बने आभूषण खरीदे और वापस अपने होटल पोर्ट ब्लेयर आ गए।

अगले दिन हमें अपनी अंडमान यात्रा की सबसे खूबसूरत जगह हैवलॉक के लिए निकलना था। हम सुबह के नाश्ते के पश्चात् जेटी पहुंच कर अपने जहाज मकरुज पर सवार हो गए। क्या शानदार जहाज था, मानो किसी सिनेमा हॉल में बैठे हों और अंदर खाना खाते-खाते हम लगभग दो घंटे की यात्रा के पश्चात् हैवलॉक आइलैंड पहुंच गए। वहां पहुंचते ही मौसम देखकर मन प्रसन्न हो गया, ऐसा लगा मानो हम प्रकृति की गोद में आ गए हो, और हम पहुंचे राधा नगर समुद्र तट। यह समुद्र तट एशिया के सबसे खूबसूरत समुद्र तटों में से एक है। यह आश्चर्यजनक समुद्र तट अपने शांत वातावरण और रोमांचक गतिविधियों के लिए दुनिया भर में प्रसिद्ध है, जो बड़ी संख्या में भारतीय पर्यटकों के साथ-साथ विदेशी पर्यटकों को भी अपनी ओर आकर्षित करता है।

राधा नगर समुद्र तट का नीला पानी और सफेद रेत एक विशेष अनुभव है जहां आप आराम कर सकते हैं और अपने साथी या परिवार के साथ इत्मीनान से समय व्यतीत कर सकते हैं साथ ही समुद्र तट पर सूर्यास्त के मनोरम दृश्य आप को अपनी अंडमान यात्रा की कुछ बेहतरीन यादों को कैद करने पर मजबूर कर देंगे।

एलिफेंटा समुद्र तट स्कूबा डाइविंग एवं वॉटर एक्टिविटीज के लिए सबसे पसंदीदा समुद्र तट है जिसका पर्यटकों द्वारा खूब लुप्त उठाया जाता है। इस समुद्र तट पर जाने के लिए ट्रैकिंग सबसे अच्छा तरीका है, इस समुद्र तट की ट्रैकिंग लगभग 2 किमी की है जिसे लगभग 30 मिनट में तय किया जा सकता है। इसके साथ सूर्योदय के लिए काला पत्थर समुद्र तट पर्यटकों का सबसे बड़ा आकर्षण का केंद्र है, इस द्वीप का कोना-कोना किराए पर मिलने वाली स्कूटी से देखा जा सकता है और इस द्वीप की यादों को अपने साथ ले जाया जा सकता है। यहां का खाना लाजवाब है, और नारियल पानी तो मानो किसी अमृत से कम नहीं।

इस तरह से हम अपनी इस द्वीप की अद्भुत यादों को लेकर उत्साह और उमंग के साथ ग्वालियर के लिए निकल पड़े। वापस आने के बहुत दिनों बाद भी अंडमान की यादें रोमांचित कर देती हैं। वहां बिताए समय को याद करके ऐसा लगता है कि जीवन में हर व्यक्ति को यहां की यात्रा एक बार जरूर करनी चाहिए।

पर्यटकों की बढ़ती तादाद के साथ द्वीप पर गंदगी का भी अंबार लग रहा है एवं इस द्वीप को स्वच्छ रखने की जिम्मेदारी भी हम सब की है। अतः मेरा व्यक्तिगत अनुरोध है कि जो भी व्यक्ति कहीं भी घूमने जाएं तो वहां पर सफाई बनाए रखने में सहयोग करें। खुद भी गंदगी न फैलाएं और दूसरों को भी रोकें जिससे कि एक स्वच्छ भारत का निर्माण किया जा सके।

मेरा पहला स्कूल

निधि गौतम

कनिष्ठ हिंदी अनुवादक



एक दिन अचानक सुबह
हम उमस भरी गर्मी में,
बिस्तर से उठ गए,
उठे क्या, उठा दिये गए
कुछ समझ नहीं पाए
कंधे पर बैठा कर
भवन भीतर पहुंचाए गए
वहां का ये हाल था
मत पूछिए कमाल था,
सीट पर और भी थे,
फर्श पर भी थे, गेट पर भी थे,
और तो और कुर्सी के पास भी थे,
वो तो वहां वालों ने
उसके अलावा कोई जगह ही नहीं बनाई,
वरना हम वहां भी होते भाई
कौन जाने किस पर टेके था
कौन जाने किस पर बैठा था
सब एक दूसरे से सटे थे
सब साथ-साथ सांस ले रहे थे
सब साथ-साथ ऊंघ रहे थे
एक साथ सब कुछ कर रहे थे
जो भी कुछ गड़बड़ करता



या गड़बड़ करा दिया जाता
उसे फौरन सबक सिखा दिया जाता
हमारे आगे वाला तो हंसता ही रहता
या शायद हंसा दिया जाता
कुछ खाने को लाया था,
या उसे खिला दिया गया था
और पता नहीं क्या-क्या हुआ
शायद भूल गया या भुला दिया गया
हमसे खड़ा ही नहीं हुआ जाता था
हम वहीं मेज पर ही सो गए
या शायद सुला दिए गए
किसी की पीठ पर लद कर घर पहुंचे
या शायद पहुंचा दिए गए
समझ में आ गया वह मेरा पहला स्कूल था
जहां से मैं निकला या निकाल दिया गया
पर मुझे यह समझ में आया
या समझा दिया गया
चोरी करना पाप है,
यह रटा दिया गया।
कर्तव्य ही पूजा है,
यह भाव भर दिया गया।

किस्सा-ए-कचहरी

अंशुमान अग्निहोत्री

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी



आइए, आपको एक किस्सा सुनाते हैं,
जो आंखों से देखा वो शब्दों से दिखाते हैं,
जो गलतियां हों उनके लिए क्षमा करिएगा,
थोड़ा लिखा है पर आप पूरा समझिएगा।

तो हुआ यूं कि दिन मंगलवार का था,
कचहरी का माहौल कुछ खुशगवार सा था,
कल ही रात एक वयोवृद्ध अधिवक्ता गुजरा था,
किसी खेमे में खुशी, तो किसी में गम पसरा था।

बहरहाल दिन को बढ़ना था तो बढ़ गया,
जिला जज की कोर्ट तक एक मामला पहुंच गया,
सिपाही के हाथों से बंधा एक आरोपी,
तन कर चल रहा था,
उसके हाथ तो बंधे थे पर मुँह चल रहा था,
न जाने कौन सा राग था जो बज रहा था।

जज ने आंखे तरेर कर पूछा,
चोरी करता है और तन कर चलता है,
मैंने विधि के साथ समाजशास्त्र भी पढ़ा है,
क्या तेरे काम से समाज का कुछ भी भला हुआ है ?
तेरे काम से किसी का भी घर भरा है ?
क्या किसी एक के भी घर का चूल्हा जला है ?

चोर जो अब तक शांत था,
सारी कार्यवाही से कुछ अंजान था,
सिर उठा कर शान से बोला,
हुजूर! आप जितना हम नहीं पढ़े हैं,
न कानून, न समाजशास्त्र रटे हैं

मानते हैं कि हमने नहीं किया किसी का भला,
किसी का चूल्हा भी हमारे कर्मों से नहीं जला।

पर इतना तो हम भी समझते हैं,
ये कचहरी, ये कमरा,
ये घंटी, ये कटघरा,
ये आपकी अलमारी के मोटे-मोटे ग्रंथ,
ये सारे थानेदार मुस्तंज,
हुजूर! आप खुद और ये आपका चौबेदार
हम जैसे न हों तो कैसे चलेगा ये कारोबार
हमसे ही तो चल रहा है आप सबका घरबार।

हुजूर! आज हम नहीं, गीता पर हाथ रख कर
आप कसम खाइए,
विधि का चश्मा उतारकर समाजशास्त्री का
चश्मा चढ़ाइए, और जो हकीकत है
वही सबको बताइए।

क्या किसी मां ने आज तक कोई चोर जना ?
क्या आप यह नहीं पूछेंगे मैं चोर कैसे बना ?
क्या आपने न्याय के साथ सदा न्याय ही किया ?
यहां बैठे समाज के सभी ठेकेदार,
क्या नहीं हैं आप भी हमारे भागीदार ?

पूरे कमरे में अब एक सन्नाटा पसरा था,
जज साहब को कोई उत्तर नहीं मिल रहा था,
एक वरिष्ठ अधिवक्ता के गुजर जाने से,
कचहरी परिसर में बायकॉर्ट-बायकॉर्ट का शोर
उठ रहा था।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस : सही या गलत

अमित कुमार

लेखापरीक्षक



आज के समय में हर व्यक्ति कार्य को कम समय, कम खर्च और कम मेहनत द्वारा करना चाहता है और बेहतर परिणाम चाहता है तो क्या कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) उसके इस लक्ष्य को पूरा करने में मदद कर सकती है ? कृत्रिम बुद्धिमत्ता, डेटा सेट के भीतर पैटर्न और विसंगतियों को पहचानने और समझने के लिए एल्गोरिदम का लाभ उठाती है, जोखिम के क्षेत्रों को अधिक कुशलता से पहचानती है और कार्यों को तेज गति से निष्पादित करती है ।

अपने उद्देश्यों के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता पर पूर्ण निर्भरता से गलत निष्कर्ष निकल सकते हैं, यह जो काम कर सकती है उसमें कार्य को बेहतर प्रभावशीलता, बेहतर गुणवत्ता, कम लागत बेहतर विश्लेषिकी, बेहतर जोखिम, मूल्यांकन के साथ ही आने वाली चुनौतियों में पारदर्शिता, निष्पक्षता सुनिश्चित करना और पूर्वाग्रह से बचना शामिल हैं । पुराने आंकड़ों को डिजिटल करना, कागज पर लिखे आंकड़ों को सीधा डाटा में रूपांतरित करना, शब्दों को अक्षरों में बदलना, बहुत सारे विकल्पों में से बेहतर को चुनना तथा वर्चुअल रियलिटी द्वारा घर बैठे ऑफिस का काम करना इत्यादि कार्य, यह कुछ ही समय में संपादित कर सकती है ।

जिम्मेदार कृत्रिम बुद्धिमत्ता नैतिक और समावेशी होनी चाहिए जो पूर्ण रूप से विश्वसनीयता, विश्वास और मापनीयता जोड़ सकती हो । डेटा सेट, पूर्ण समय पर एकत्रित, सटीक, उपलब्ध और प्रासंगिक होने चाहिए । यदि डेटा फ़ील्ड की अखंडता सुनिश्चित नहीं की जाती है, तो हमारे पास गलत निष्कर्ष होंगे जो आने वाले परिणाम को भी प्रभावित कर सकते हैं जैसे डेटा सुरक्षा के लिए खतरा, थोड़ा मानव नियंत्रण, पारदर्शिता की कमी, डेटा हेरफेर और असंभावित परिणाम प्राप्त हो सकते हैं ।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के पास एक शानदार भविष्य खोलने की कुंजी है, जहां हमारी दुनिया को समझने वाले डेटा द्वारा संचालित होकर, हम सभी अधिक जानकारी पूर्ण निर्णय ले सकेंगे । निस्संदेह कृत्रिम बुद्धिमत्ता एक उभरती हुई तकनीक है । जो दिन-प्रतिदिन बहुत तेजी से बढ़ रही है, और मशीनों को मानव मस्तिष्क की नकल करने में सक्षम बना रही है । अपने उच्च प्रदर्शन के कारण, यह मानव जीवन को आसान बना रही है हालांकि कृत्रिम बुद्धिमत्ता के साथ कुछ चुनौतियां और समस्याएं भी हैं । दुनिया भर में कई लोग अभी भी इसे एक जोखिम भरी तकनीक के रूप में सोच रहे हैं, क्योंकि उन्हें लगता है कि अगर यह इंसानों से आगे निकल गई, तो भविष्य में मानवता और रोजगार के लिए खतरा बन सकती है । हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि यह एक नवीन तकनीक है, प्रत्येक तकनीक का उपयोग सीमित तरीके से किया जाना चाहिए । बिना किसी नुकसान के प्रभावी ढंग से उपयोग करने पर हर तकनीक उपयोगी एवं विकास में सहायक होती है ।

अभिलाषा

नीतू दीक्षित
अतिथि रचनाकार



कांटों के साथ रहकर भी
मुस्कराना चाहती हूं।
जीवन की हर एक डाली पर
चहचहाना चाहती हूं।

जीवन के वट वृक्ष पर
मेरी खुशियों का संसार,
शाखाएं देती इसकी मुझको
नित नई खुशियां अपार।
इसकी हर एक शाखा पर
अपना आशियाना चाहती हूं
कांटों के साथ रहकर भी...

जीवन जब बादल बन आता
मेरे सूने आंगन में,
हर कोना तब नम हो जाता
भीगे भीगे सावन में।
रंगीन महकते गुलशन सा मैं
एक ठिकाना चाहती हूं
कांटों के साथ रहकर भी...

मंद पवन का झोंका आता
छू जाता मन का आंचल
बलखाती पुरवइया आती
और बजाती है पायल।
हरी शाख पर कलियों सी मैं
खिलखिलाना चाहती हूं
कांटों के साथ रहकर भी
मुस्कुराना चाहती हूं।
जीवन की हर एक डाली पर
चहचहाना चाहती हूं।



मेरी अविस्मरणीय रेल यात्रा

अभिषेक त्रिपाठी

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी (तदर्थ)



दीपावली के त्यौहार से मेरा बड़ा लगाव रहा है। घर कैसे पहुंचा जाए और परिवार के लोगों के साथ कैसे दीपोत्सव मनाया जाए, बस इसी उधेड़बुन में त्यौहार के कुछ दिन पहले से घर जाने के लिए मन व्याकुल रहता है। इस बार विधान सभा चुनावों में ड्यूटी होने के कारण पहले से ट्रेन का रिजर्वेशन कराना संभव नहीं था। चुनाव ड्यूटी, दिवाली के दो दिन पहले तक की ही थी। जैसे तैसे ड्यूटी पूरी करके, हम अपना बैग पैक करने लगे।

हमारा पैतृक आवास उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ से लगभग 200 कि.मी. दूर बस्ती मंडल (वशिष्ठी प्रस्तावित नाम) में पड़ता है, मगर वहां जाने वाली मात्र एक ट्रेन है और वह भी दिन में 12 बजे, जिसमें त्यौहार के समय पर रिजर्वेशन मिलना बहुत मुश्किल होता है। हमने अधिक सामान होने के कारण अपनी यात्रा को तीन हिस्सों में बांट लिया। रात्रि में शहर ग्वालियर (जहाँ हम कार्यरत हैं) से बनारस, फिर दो घंटे के अंतराल के बाद बनारस से गोरखपुर, फिर गोरखपुर से बस्ती, कुल मिलाकर जो सफर लगभग 600 कि.मी. का था, वह अब करीब 1100 कि.मी. में परिवर्तित हो गया, परंतु दीपावली की भीड़ को देखते हुए हमें यह लंबी रेल यात्रा तो मंजूर थी, परंतु अनारक्षित टिकट के साथ रात्रि जागरण स्वीकार नहीं था। हम पहले भी धोखा खा चुके थे, एक तो कार्यालय

से अवकाश भी अधिक दिनों का स्वीकृत नहीं होता है, दूसरा ऐसी यात्रा में शरीर का कोई कोना दर्द से अछूता नहीं रहता है।

खैर, हम अपने यात्रा के प्रथम चरण अर्थात् ग्वालियर से बनारस रवाना होने के लिए नियत समय से ग्वालियर रेलवे स्टेशन पहुंच गए। रेलगाड़ी का प्रारंभ और गंतव्य (ग्वालियर से बनारस) स्थान ही हमारी यात्रा का पहला चरण था। इसलिए हम निश्चित थे। यह तो बढ़िया था कि रेलवे विभाग ने हमारा आर.ए.सी. वाला टिकट कन्फर्म कर दिया था, वरना इस रेलगाड़ी में सरसों बहाने का भी स्थान नहीं था। हमने अपना सारा सामान व्यवस्थित करके कोच अटेंडेंट साहब से अपना कंबल और तकिया मांग लिया और अपना भोजन का डिब्बा निकाल लिया। डिब्बे में बंद पूड़ी-सब्जी भी मानो हमारी ही राह देख रहे थे। हमने कोच के वातानुकूलित होते ही अपने डिब्बे का भोजन समाप्त किया और सोने की तैयारी में जुट गए। मगर नींद कहां आनी थी, रेल यात्रा का अधिक अनुभव होने के कारण हमारी आंखें टी.टी.ई. महोदय की राह देखने लगीं। टी.टी.ई. महोदय झांसी स्टेशन (वीरांगना लक्ष्मीबाई झांसी) से चढ़े और हमारा टिकट पूछा, हम भी उनकी ओर हसरत भरी निगाहों से देखते हुए, अपनी सीट का नंबर बताकर, बेखौफ अपनी सीट पर सोने चले गये। चुनावी थकान होने के कारण नींद भी अच्छी आई और जब सुबह हुई तो हम प्रयागराज में थे। अपने उत्तर प्रदेश की अवधी भाषा सुनकर मन को बड़ी प्रसन्नता हुई। वहां स्टेशन पर हमने अपनी प्रातः कालीन चाय का सेवन किया और वापस अपनी सीट पर बैठ गये। ट्रेन ज्यादा लेट नहीं थी, एक और झपकी लेते ही हम 11:20 बजे बनारस स्टेशन पहुंच गए।

अगली यात्रा हमें वाराणसी जंक्शन, जो कि बनारस स्टेशन से 5 कि.मी.की दूरी पर है, से दोपहर 01:30 पर आरंभ करनी थी। हमने अपनी अगली ट्रेन की अद्यतन स्थिति जानने के लिए "Where is my train" app खोला तो उसमें हमारी अगली ट्रेन 4 घंटे विलंब से प्रदर्शित हो रही थी। हम भी निश्चित होकर अखबार पढ़ने लगे और करीब एक घंटे बाद हमें याद आया कि अब निकलना चाहिए क्योंकि ट्रेन तो दूसरे स्टेशन से पकड़नी थी। हम एक ऑटोरिक्षा में बैठे और वाराणसी जंक्शन की ओर चल पड़े। App के अनुसार ट्रेन आने में अभी और देर थी इसलिए हम स्टेशन से बाहर टैक्सी-स्टैंड पर ही खड़े रहे। वहीं हमें एक चाय और बंद-मखन का टेला दिखा, जिसे देख कर हमसे रहा नहीं गया। हम एक प्याला चाय और बंद-मखन का सेवन करते हुए वाराणसी स्टेशन की सुंदरता निहारने लगे। तभी एकाएक हमें सूझा कि क्यों न रेलवे पूछताछ काउंटर पर जाकर ट्रेन की वास्तविक स्थिति का संज्ञान लिया जाए। पूछताछ काउंटर पर गोरखपुर की गाड़ी के बारे में जानते ही हम हतप्रभ रह गए और ऐसा लगा मानो हमारे पैरों तले जमीन निकल गई हो। खबर यह थी कि हमारी गोरखपुर जाने वाली ट्रेन पांच मिनट पहले प्रस्थान कर चुकी थी। दरअसल रेलमार्ग में मार्ग परिवर्तन (डायवर्जन) हो जाने के कारण ट्रेन की वास्तविक स्थिति के बारे में app पर सही जानकारी प्राप्त नहीं हो पा रही थी। हमने जब app पुनः चेक किया तो ट्रेन वाराणसी जंक्शन से कुछ दूर आगे वाराणसी सिटी पार कर रही थी। परंतु उसका अगला पड़ाव वहां से 80 कि.मी. दूर मउ जंक्शन था। हमें अपने ऊपर बहुत क्रोध आया और दुःख भी हुआ। फिर कुछ देर विलाप करते हुए भोलेनाथ का नाम लेकर हमने आगे की यात्रा करने का निर्णय लिया।

अब वाराणसी से गोरखपुर जाने के लिए अगली रेलगाड़ी शाम 05:30 बजे सारनाथ रेलवे स्टेशन से थी, तो पुनः कोई गलती न हो जाए इसलिए हम तत्काल सारनाथ रेलवे स्टेशन के लिए रवाना हो गए। ऑटो वाले भैया ने अधिक किराया तो अवश्य मांगा, परंतु वाराणसी जंक्शन से सारनाथ तक 8 कि.मी. का सफर मात्र 30 मिनट में पूरा किया। वहां पहुंचकर हम अपनी अगली रेलयात्रा के लिए ऑनलाइन आरक्षण करने में जुट गए। हमें ट्रेन छूटने की बहुत ग्लानि थी। मन में एक ख्याल आया, कि जो हमारी ट्रेन छूटी है उसकी वर्तमान स्थिति की जानकारी एक बार फिर देख लूं। जब हमने देखा तो पाया कि वह ट्रेन सारनाथ स्टेशन से कुछ कि.मी. पहले आउटर में खड़ी थी।

अंतर्मन में एक उम्मीद जाग उठी, परंतु सोचना बेकार था क्योंकि इस ट्रेन का ठहराव इस स्टेशन पर नहीं था और इसकी अपेक्षा करना भी व्यर्थ था। मन में एक और विचार आया कि क्यों न अपनी छूटी हुई ट्रेन को अंतिम विदाई दे दूं, उसके पश्चात ही अपनी अगली यात्रा की बुकिंग करूं। थोड़ी ही देर में उसी ट्रेन को 40 कि.मी. प्रति घंटा की गति से बीच के रेलवे ट्रैक पर (जहाँ कोई प्लेटफार्म नहीं होता है) गुजरता पाया। मैं अपना बी-2 कोच ध्यान से देखने के लिए उत्सुक था। ट्रेन भी स्टेशन आते ही अधिक गति पकड़ने लगी। सहसा तभी हमें हमारा बी-2 कोच गुजरता हुआ दिखा। हम नम आँखों से उसे विदा कर ही रहे थे कि ट्रेन अचानक रुकने लगी, पता लगा किसी सज्जन ने चेन खींच दी थी। हमारे अंदर अचानक साहसी सैनिक जैसा रक्त-बहाव होने लगा और हमने अपना एक पिछू बैग पीछे और बाकी दोनों बैगों को अपने दाएं और बाएं कंधे पर लादकर ट्रैक को लांघते हुए ट्रेन की ओर दौड़ लगाई। हमारा यह साहस बहुत ही जानलेवा और गैर-कानूनी था, परंतु आपदा में अवसर बार-बार नहीं मिलता है। बी-6 कोच के सामने वाला गेट खुला था, हम उसमें चढ़ने लगे, उसमें सवार यात्रियों ने कहा “यह आरक्षित डिब्बा है और ए.सी. है”, इस पर हमने उत्तर दिया कि हमारा इस ट्रेन में आरक्षण है, यात्री हैरान दिखे कि जिस स्टेशन पर ठहराव ही नहीं, वहां से भला आरक्षण कैसे हो सकता है? परंतु हमारे मुखमंडल पर हमारी दुर्दशा को देख उन्होंने हमें भीतर आने का मार्ग दे दिया। ट्रेन गुजरात से आ रही थी और दीपावली के कारण खचाखच भरी हुई थी। अब हमें अपने तीन सामानों के साथ बी-6 कोच से बी-2 कोच तक की यात्रा भी ट्रेन के अंदर से गुजरते हुए करनी थी। ट्रेन के सकरे रास्ते से अपना सामान और स्वयं को निकालने में बहुत कठिनाई हो रही थी। एक ही कोच पार करने में हम पसीने से तर-बतर हो चुके थे और बदन टूट चुका था। हमने अपना एक सामान एक सह-यात्री को सौंप दिया और उसे बी-2 कोच में पहुंचकर अपना सामान वापस ले जाने का बताकर आगे बढ़ने लगे। बी-2 कोच में जब हम अपनी सीट पर पहुंचे तो देखा एक महाशय हमारी सीट पर लेटे हुए थे। हमने उन महानुभाव को उनकी निद्रा से जगाकर, अपनी सीट होने के संबंध में जानकारी दी। उन्होंने कहा फिर आप वाराणसी जंक्शन से क्यों नहीं चढ़े, इस पर हमने उन्हें अपने साथ बीती हुई यात्रा का पूर्ण विवरण दिया। वे महानुभाव रेलवे के स्टाफ के थे और हमारी व्यथा सुनकर उन्होंने हमारे लिए सीट खाली कर दी। तभी उन्होंने बताया की टी.टी.ई. महोदय द्वारा इस कोच का निरीक्षण किया जा चुका है और उन्होंने ही हमारी सीट उन्हें प्रदान की थी। इस पर हम टी.टी.ई. महोदय को खोजने और अपना बचा हुआ सामान वापस लेने के लिए एक बार फिर यात्रियों की भीड़ में घुस गए। बी-4 कोच में टी.टी.ई. महोदय के दर्शन हुए, हमने उन्हें अपना टिकट बताया, हमें डर था कि उन्होंने अपनी कंप्यूटर टेबलेट में शायद हमें **absent** करार कर दिया होगा। परंतु अभी तक शायद उन्होंने ऐसा नहीं किया था, उन्होंने हमारी सीट हमें आवंटित कर दी और हमारी सीट पर बैठे

महानुभाव को बी-4 कोच की किसी अन्य सीट पर बैठने का निर्देश दिया। हम अपना बाकी सामान लेकर अपनी निर्धारित सीट पर पहुंच गए और उन महानुभाव से टी.टी.ई. महोदय के निर्देशानुसार प्रस्थान करने का अनुरोध किया। दोनों पक्षों के बीच समस्या का समाधान हो चुका था। अपनी सीट पर लेटते हुए हमें आनंद की अनुभूति हो रही थी, मानो कोई युद्ध जीतकर आए हों। अपनी गोरखपुर तक की यात्रा हमने सोकर ही पूरी की। इस तरह हमारी यात्रा का दूसरा चरण पूरा हुआ।

गोरखपुर स्टेशन पर छठ पूजा में बिहार जाने वाले यात्रियों का तांता लगा हुआ था। यात्रा का तीसरा चरण गोरखपुर से बस्ती तक का था। यात्रा अब मात्र 70 कि.मी. की ही शेष थी, सुखद बात यह थी कि हमें यात्रा बिहार की ओर न जाकर, लखनऊ की ओर करनी थी। बिहार की ओर जाने वाली रेलगाड़ियों में तो भीड़ थी परंतु बिहार से आने वाली रेलगाड़ियों में भीड़ कम थी। हमारी तीसरी ट्रेन भी बिहार से अंबाला जा रही थी और लगभग खाली थी। ट्रेन नियत समय से आधे घंटे की देरी से पहुंची और डेढ़ घंटे की सुखद यात्रा में हम अपने गृह जिला बस्ती पहुंच चुके थे। स्टेशन पर परिवार के सदस्यगण हमें लेने आए हुए थे, हम उन्हें देखकर बहुत आनंदित थे। इस तरह हमारी यात्रा का तीसरा चरण भी पूरा हुआ। यद्यपि हमारी संपूर्ण यात्रा बहुत थका देने वाली और हैरतंगेज रही तथापि इसका अनुभव अविस्मरणीय था।

“संघर्ष से कभी डरना नहीं चाहिए
क्योंकि यह भी एक कहानी है
जो सफल होकर सबको सुनानी है।”

जनसंख्या नियंत्रण-एक जन अभियान

विद्यानंद वर्मा
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी



➤ उद्देश्य:

जनसंख्या नियंत्रण-एक जन अभियान का मुख्य उद्देश्य भारत की बढ़ती आबादी को नियंत्रित कर देश की आगामी पीढ़ी को एक विकसित और सशक्त देश सौंपना है, जो विश्व पटल पर मानव कल्याण और विकास के हर क्षेत्र में भारत की गौरवमयी भागीदारी सुनिश्चित करने में सक्षम हो। इसके लिए जहां एक ओर भारत को आर्थिक, आधारभूत संरचनाओं के विकास, शिक्षा, स्वास्थ्य, आंतरिक एवं बाह्य सुरक्षा में आत्म निर्भर होना होगा वहीं दूसरी ओर सृढ़ न्याय व्यवस्था, मजबूत लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं एवं सामाजिक सद्भाव की निरंतरता को सुनिश्चित करना होगा।

➤ भारत की दशकवार जनसंख्या वृद्धि की स्थिति:

(जनसंख्या: करोड़ में)

जनगणना वर्ष	जनसंख्या	पुरुष	महिला	जनसंख्या वृद्धि दर प्रतिशत में	
				पुरुष	महिला
1951	36.11	18.55	17.56	-	-
1961	43.92	22.63	21.29	21.99	21.24
1971	54.82	28.41	26.41	25.54	24.05
1981	68.33	35.33	33.00	24.36	24.95
1991	84.64	43.93	40.71	24.34	23.36
2001	102.87	53.22	49.65	21.15	21.96
2011	121.09	62.33	58.76	17.12	18.35

(स्रोत: भारत सरकार के जनगणना आंकड़े)

➤ अनियंत्रित जनसंख्या वृद्धि के दुष्प्रभाव:

अनियंत्रित जनसंख्या वृद्धि न केवल परिवार की आवश्यकताओं में वृद्धि कर परिवार को कमजोर करती है बल्कि देश, समाज और प्राकृतिक संतुलन को भी प्रभावित करती है। अत्यधिक जनसंख्या भार, मानव विकास के हर मानक के विरुद्ध कार्य करता है। परिणामतः महंगाई, बेरोजगारी, पोषण संबंधी आवश्यकताओं में विषमता, पर्यावरण असंतुलन, निम्न जीवन स्तर इत्यादि का कारक बनता है।

➤ नियंत्रित जनसंख्या के लिए प्रभावी कदम

➤ शासकीय भागीदारी

भारत एवं राज्य सरकारों द्वारा समेकित रूप से स्वप्रेरित जनसंख्या नियंत्रण जन अभियान को प्रभावी बनाने के लिए इसे व्यापक प्रचार-प्रसार के साथ आरंभ किया जाना चाहिए। जनसंख्या नियंत्रण

जन अभियान एक आह्वान है, आएँ, कदम मिलाएँ और एक साथ पूरा देश आगे बढ़े। यह अभियान एक धर्म-निरपेक्ष अभियान है, जिसमें सभी की भागीदारी आवश्यक ही नहीं अपितु अनिवार्य भी है। देश को सुदृढ़, समर्थ, आत्मनिर्भर और सुरक्षित बनाने के लिए आपका एक कदम आपके आने वाली पीढ़ियों की खुशियों के लिये मील का पत्थर साबित होगा।

➤ **अभियान का क्रियान्वयन**

➤ **समितियों / इकाइयों का गठन और रूप-रेखा:**

- केंद्र और राज्य स्तर
- जिला और विकासखंड स्तर
- कॉलोनी और ग्राम स्तर
- प्रचार-प्रसार
- प्रत्येक स्तर पर सतत मूल्यांकन एवं मासिक डेटा जारी करना।

➤ **जन भागीदारी**

- प्रत्येक महिला को यह दृढ़ संकल्प लेना होगा कि मेरा परिवार छोटा ही होगा।
- प्रत्येक पुरुष को उसके महिला साथी के दृढ़ संकल्प को पूरा करने में पूर्ण सहयोग देना होगा।
- स्वप्रेरित रूप से शादी का पंजीयन कराना एवं संकल्प पत्र जमा कराना।
- प्रत्येक महिला एवं पुरुष न्यूनतम पांच अन्य परिवारों को छोटे परिवार हेतु प्रेरित करें। इस प्रकार एक श्रृंखला का निर्माण होगा जो भारत के “जनसंख्या नियंत्रण-एक जन अभियान” की संकल्पनाओं और उद्देश्यों को पूर्ण करेगा।

अभियान का नारा

जनसंख्या नियंत्रण-एक जन अभियान
घर-घर तक पहुंचाना है।

छोटा परिवार-सुखी परिवार युक्त समाज
और देश बनाना है।

आइए संकल्प लें और विकसित भारत का सपना पूर्ण करें।

हर स्त्री एक बहती नदी सी है

ज्योति जौहरी
पत्नी श्री अनुशील जौहरी



हर स्त्री एक बहती नदी सी है
इस जीवन चक्र में
बस वही एक निश्छल
धारा सी बही है,
हर स्त्री एक बहती नदी सी है।

सूखे पड़े हों चाहे सरोवर हृदय के
भीतर समाई वेदना मौन हो
साहस कितना उसमें
स्वयं नहीं जानती मगर
जीवन पथ की हर बाधा में
पत्थर का भी हृदय चीरती
वो हरदम आगे ही बढ़ी है,
हर स्त्री एक बहती नदी सी है।

चाहे उतर आए तपते
सूर्य की अग्नि सिर पर
पैरों की बिवाइयां फटी हों
दर्द भरी पीर उसने सही हो
पर बिना रुके, बिना थके
नियति से बहती हुई
उसी से सबकी प्यास बुझी है,
हर स्त्री एक बहती नदी सी है।

राह की चट्टान, बालू ना
पत्थर रोक पाएं उसे कभी
वह तो जीवन का राग गुनगुनाती
कभी सागर में तो कभी
खुद में सागर को समाती रही है,
हर स्त्री एक बहती नदी सी है।

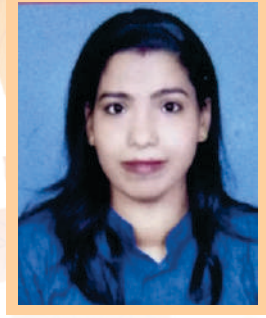
देह उसकी कोमल है मगर
विचलित नहीं, भयभीत नहीं
संतुलित धारा के साथ
जिंदगी के हर मोड़ पर
पूरी निडरता के साथ बाहें पसारे
वह सदा खड़ी रही है,
हर स्त्री एक बहती नदी सी है।

सबको पता है वह
सदियों से प्यासी एक नदी है
फिर भी पूरी ईमानदारी के साथ
अमृत धारा बनकर सदा बही है क्योंकि,
हर स्त्री एक बहती नदी सी है।

ये कहां आ गए हम...

अर्चना मानव

लेखापरीक्षक



ये कहां आ गए हम यूं ही साथ चलते—चलते,
ये जमीं से आसमां तक का सफर करते—करते,
गांव की यादें छोड़कर शहर की ओर आते—आते,
देश छोड़ परदेस जाकर अपना बसेरा बसाते—बसाते,
एक रूपए की आमदनी से डॉलरों में कमाते—कमाते,
ये कहां आ गए हम यूं ही साथ चलते—चलते।

सुबह को निकले हो गई शाम, घर पहुंचते—पहुंचते,
सुकून खो गया है आधुनिकता की ओर आते—आते,
आज वर्षों जमाना हो गया, अपनों के पास बैठे,
न वक्त की खबर है, न खुद का कोई ठिकाना,
जाने कहां खो गया है, बीता हुआ पुराना जमाना,
ये कहां आ गए हम यूं ही साथ चलते—चलते।

हमारे जीवन में बहुत सी ऐसी घटनाएं घटित होती हैं, जिसे देखने, पढ़ने और सुनने के बाद दिल बेचैन हो उठता है और सोचने पर मजबूर कर देता है कि वाकई हम जो कर रहे हैं वो कितना सही है और कितना गलत। अगर कुछ गलत है तो किस हद तक और उसे सही करने की कोशिश करें तो क्या ऐसा करना वर्तमान परिप्रेक्ष्य में सही होगा। कहते हैं कि परिवर्तन संसार का नियम है, जो बदलते जमाने के साथ खुद को नहीं बदलते वो कहीं दूर पीछे रह जाते हैं। लेकिन दूसरी तरफ जेहन में ये भी सवाल उठता है कि क्या परिवर्तन की आड़ में हम अपनी संस्कृति, अपनी सभ्यता, अपने संस्कार, अपने कर्तव्य इन सभी से अपना मुख तो नहीं मोड़ रहे? आज के युग में हर कोई एक—दूसरे से बेहतर बनने की कोशिश में लगा है। हर कोई सर्वश्रेष्ठ बनना चाहता है, स्वयं से किसी को आगे निकलता देखना रास नहीं आता, अपनी झूठी शानो—शौकत की शेखी बघारने के लिए उस हद तक चले जाते हैं जहां अपने से कमजोर वर्ग को नीचा दिखाने में संकोच भी नहीं होता। जैसा कि हर सिक्के के दो पहलू हैं वैसे ही हमारी जिंदगी में हो रही घटनाओं के भी दो पहलू होते हैं। परंतु समस्या अब यह है कि हम इसमें कितना भी संतुलन बैठाना चाहें परंतु लाख कोशिशों के बावजूद भी सब असंतुलित हो ही जाता है।

आज मैं बात कर रही हूं “दिखावे और नखरे वाले इस कलयुग की”। शायद ऐसा कहना गलत नहीं होगा।

कि आज आधुनिकता के दावानल की ओर हम इतने आकर्षित हो गए हैं कि चाहे हमारे रहन-सहन का ढंग हो, चाहे आदर-सत्कार का तरीका हो, चाहे बातचीत करने का लहजा हो, सभी तौर-तरीकों में आधुनिकता की झलक स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगी है। शायद इसके बीजारोपण की प्रक्रिया हमारे बचपन से ही शुरू हो जाती है, जैसा कि एक मां अपने बच्चों से प्रेम वश यही कहती है कि मेरा बेटा बड़ा होकर अफसर बनेगा, बड़ी-बड़ी गाड़ियों में घूमेगा वहीं दूसरी ओर पिता अपने बच्चों से यही कहते हैं कि तुम्हें अपनी जिंदगी में कुछ बड़ा करना है, दूसरों से बेहतर बनना है, अपने परिवार का नाम रोशन करना है। यही बातें बचपन से सुनते-सुनते बच्चों की भी वही मानसिकता बनती चली जाती है। बच्चों के मन में भी यही बातें बैठ जाती हैं और वो अपना पूरा ध्यान सिर्फ इस बात पर केंद्रित कर देते हैं कि उन्हें दूसरों से बेहतर बनना है। उन्हें अपने परिवार का नाम रोशन करना है लेकिन परिवार के लिए करना क्या है यह उन्हें न तो कभी बताया जाता है और न ही सिखाया जाता है। जाहिर सी बात है कि माता-पिता अपने बच्चों को सफलता की ऊंचाइयों को छूता देख फूले नहीं समाते और दूसरों के सामने उनकी प्रशंसा के पुल बांधते रहते हैं, कि देखो आज मेरा बेटा मल्टीनेशनल कंपनी में नौकरी करता है, विदेश में उसने अपना घर बना लिया, आज उसके पास पैसा, नाम, शोहरत सब कुछ है, और न जाने कितने लोग आए दिन ऐसी तारीफों के कसीदे सुनाते रहते हैं। लेकिन दुःखदायी तो यह है कि वही बच्चे अपने मां-बाप की वृद्धावस्था में उनका सहारा नहीं बन पाते। क्योंकि वे अपने जीवन में इतने व्यस्त हो चुके होते हैं, या यूं कहें कि शायद उन्हें अपने कैरियर (आजीविका) से इतना लगाव या पैसे कमाने का पागलपन और अपने भविष्य का विश्लेषण करने की सोच इतनी हावी हो जाती है कि वे रिश्ते-नाते, यहां तक कि मां-बाप के अंतिम समय में भी उनका साथ देने की नहीं सोच पाते। कोई भी मां-बाप हों, उनकी चाहे कितनी भी संतानें हो, उनका पालन-पोषण मां-बाप किसी न किसी तरह से कर ही लेते हैं लेकिन जब वक्त मां-बाप की देख-रेख का आता है तो पांच बच्चे मिलकर भी एक मां-बाप की देख-रेख नहीं करना चाहते। या तो वो अपने मां-बाप को बोझ समझते हैं, या तो इस मंहगाई के दौर में मां-बाप समेत दो लोगों का अतिरिक्त खर्च वहन नहीं करना चाहते और इसी वजह से मां-बाप का आपस में ही बंटवारा कर लेते हैं। इस प्रकार अप्रत्यक्ष रूप से अपने कर्तव्य निर्वहन से विमुक्त हो जाते हैं। अगर आने वाले समय में वृद्धाश्रम की संख्या में बढ़ोतरी हो जाए तो कोई ताज्जुब की बात नहीं होगी क्योंकि जैसा आज का समय है एक परिवार में मां-बाप दोनों ही नौकरी पेशा होते हैं, दोनों ही अपने बच्चों को आया या बच्चों के झूलाघर में दूसरों के भरोसे छोड़कर पैसे कमाने में व्यस्त हो जाते हैं। उस वक्त जब बच्चों को अच्छी परवरिश, प्यार और समय की जरूरत होती है वो उन्हें पूरी तरह से मिल नहीं पाती और बच्चे कम ही उम्र में आत्मनिर्भर या अकेले रहना सीख जाते हैं और उनके मन में भी 'पैसा ही सबकुछ है' जैसी मानसिकता पनपने लगती है। यही बच्चे जब बड़े होकर उच्च पदों पर आसीन होते हैं तो उन्हें भी अपने मां-बाप के लिए पर्याप्त वक्त नहीं मिल पाता। वो भी अपने मां-बाप की देखभाल के लिए केयरटेकर रख लेते हैं अथवा मां-बाप को वृद्धाश्रम भेज देते हैं और कभी-कभार इच्छा जाग गई तो चंद पलों की मुलाकात के लिए वृद्धाश्रम में मिलने चले जाते हैं। अगर पूरे कथनों पर गौर करें तो गलती किसकी है ? पैसे कमाने की चाहत, स्त्री एवं पुरुष दोनों का आत्मनिर्भर होना, वक्त की कमी, जमाने का दोष, मंहगाई की मार, या सही संस्कारों से वंचित रह जाना।

आजकल हर रिश्ते में सामंजस्य बिठाना पड़ता है क्योंकि न अब वो माहौल रहा और न पहले की तरह संयुक्त परिवार रह गए जहां जिंदगी की पढ़ाई घर में ही हो जाती थी। पारिवारिक नैतिक मूल्यों में गिरावट के और भी कई कारण हैं:-

- 1) अब हर जगह एकल परिवार हो गए हैं, जिसमें माता—पिता और ज्यादा से ज्यादा दो बच्चे होते हैं।
- 2) माता—पिता दोनों कामकाजी हैं तो स्कूल के बाद बच्चों का समय या तो आया के साथ बीतता है या झूलाघर में, जहां पर बच्चों की देखभाल तो हो जाती है, परंतु वे सामाजिक तथा पारिवारिक संस्कार सही तरीके से नहीं सीख पाते हैं।
- 3) शेयर या केयर की बातें भी बच्चे सीख नहीं पाते हैं। उनका जीवन खेल, खिलौनों, दोस्तों के बीच ही ज्यादा बीतता है, तो उन्हें हर समय अपना महत्व ही समझ में आता है।
- 4) माता—पिता भी अपना समय देने के बदले उन्हें उनकी पसंदीदा चीजें (उचित अथवा अनुचित) लाकर देते हैं। क्या करें, समय की कमी होने के कारण उनकी भी मजबूरी होती है।
- 5) घर के बुजुर्ग कभी—कभार ही आकर साथ रह पाते हैं, तो बच्चों को बस यही पता होता है कि ये हमारे दादा—दादी अथवा नाना—नानी हैं, लेकिन चूंकि साथ नहीं रहते हैं इसलिए उनसे भावनात्मक जुड़ाव नहीं हो पाता है। दादा—दादी अथवा नाना—नानी के वात्सल्य प्रेम का स्वाद इन्हें पता ही नहीं होता है।
- 6) लोगों में सहनशीलता और धैर्य की भी कमी हो गई है। ज्यादातर लड़कियां पहले घर संभालती थीं, अब वो भी नौकरी पेशा हो गई हैं तो उनमें भी आत्मनिर्भरता आ गई है, वो पहले सही—गलत सब सुन लेती थीं। अब गलत बात बिल्कुल नहीं सुन सकती हैं।

ऐसे और भी कई कारण हैं जो आज के हिसाब से सही हैं लेकिन साथ ही कुछ पारंपरिक चीजें छूटती भी जा रही हैं। ऐसा नहीं है कि इनमें बदलाव या सुधार नहीं हो सकता है। कुछ बातों पर अमल किया जाए तो आज भी लोगों में सामंजस्य बिठा कर उन्हें सिखाया जा सकता है।

- 1) सबसे पहले तो अगर आपके घर में बुजुर्ग हैं तो आप उन्हें अपने साथ रखें। इससे आपके बच्चे अच्छी बातें भी सीखेंगे और कामकाजी माता—पिता को अपने बच्चों की सुरक्षा के लिए सोचना नहीं पड़ेगा।
- 2) छुट्टियों में अपने बच्चों को परिवार के सदस्यों से जरूर मिलवाएं ताकि वे साथ में समय बिताकर, साथ रहने का महत्व समझें। ऐसे में बच्चे बहुत सारी बातें सीखते हैं जो आगे चलकर उनको आपस में सामंजस्य बिठाना सिखाती हैं।
- 3) परिवार में कोई कार्यक्रम हो तो वहां जरूर जाएं। पारिवारिक माहौल में मिल—जुल कर रहने से बच्चों में आत्मीयता की भावना आती है जो उन्हें एक अलग माहौल देती है। सच मानिए तो जो बच्चे अकेले रहते हैं, उन्हें यह सब बहुत अच्छा लगता है। किसी भी इंसान को प्यार या इज्जत मिले तो उसे बहुत अच्छा लगता है।
- 4) माता—पिता चाहे कितने भी व्यस्त क्यों न हों, यह बात सबसे महत्वपूर्ण है कि वो अपने बच्चों के साथ समय बिताएं। रात में सोने के पहले माता—पिता हर दिन अपने बच्चों के साथ एक घंटे का समय जरूर बिताएं। उनकी बातें सुनें, उन्हें अपनी सुनाएं। सही—गलत से अवगत कराएं। घर की हर बात/चीज बच्चों से साझा करें। उनका मार्गदर्शन करें। अगर बच्चे माता—पिता में ये गुण देखते हैं तो वह भी इनसे प्रभावित होते हैं और फिर जब वो हर तरह से पढ़—लिख कर योग्य बनते हैं तो जिंदगी के हर पहलू से परिचित हो जाते हैं।

अत्यधिक पैसे कमाने की लालसा और राजशाही जीवन जीने की आकांक्षा ने लोगों को गांव से शहरों की ओर और शहरों से विदेशों की ओर पलायन हेतु प्रेरित किया है और फिर उनका वापस मुड़कर कभी न देखना, तो वो दिन भी दूर नहीं, जब रिश्ते—नाते सिर्फ बचपन की कहानियां बनकर रह जाएंगे। आज जरूरत है कि बच्चों को किताबी ज्ञान के साथ—साथ जिंदगी जीने की कला का भी ज्ञान हो। लोगों में परिवार और कैरियर दोनों में सामंजस्य स्थापित करने की क्षमता विकसित हो। अपने परिवार से लगाव बरकरार रहे। नहीं तो वो समय भी ज्यादा दूर नहीं जहां बच्चे पढ़—लिख कर अपने मां—बाप से अलग रहकर जीवन—यापन करेंगे और मां—बाप को देखने वाला कोई भी नहीं होगा।

भले ही हम दुनिया की चमक—दमक देखकर, हवाओं के रुख के साथ अपना रास्ता बदल लें लेकिन ये भी सत्य है कि जब तकलीफ आती है तो सबसे पहले अपना परिवार, अपना शहर, अपना गांव, अपने ही लोग याद आते हैं। इसलिए जरूरी है कि भले ही हम आसमां की बुलंदियों को छूने की आस रखते हों परंतु अपनी जमीन से जुड़े रहना भी जरूरी है, क्योंकि अगर जड़े जमीं से जुड़ी नहीं रहेंगी, तब कितना भी विशालकाय वृक्ष हो या गगनचुंबी इमारत हो, उसका गिरना तय है। बेशक जिंदगी में बदलाव जरूरी है, लेकिन बदलाव इतना भी नहीं होना चाहिए कि हम अपना मूल अस्तित्व ही भूल जाएं।

“मैं दुनिया की सभी भाषाओं की
इज्जत करता हूँ,
पर मेरे देश में हिंदी की इज्जत न हो,
ये मैं सह नहीं सकता”

— आचार्य विनोबा भावे

लेखापरीक्षा इकाइयों (ऑडिट यूनिवर्स) को वन आई.ए.ए.डी. वन सिस्टम (ओ.आई.ओ.एस.) में संग्रहित करना

सिद्धांत दिवाकर

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी



भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का कार्यालय जो कि सर्वोच्च लेखापरीक्षा संस्था है, के द्वारा लेखापरीक्षा कार्य को आधुनिक तकनीकी के साथ करने के उद्देश्य से वन आई.ए.ए.डी. वन सिस्टम (ओ.आई.ओ.एस.) को अपनाया गया है। वर्तमान में भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग की समस्त प्रकार की लेखापरीक्षा से संबंधित कार्य ओ.आई.ओ.एस. के माध्यम से किए जा रहें हैं। इसी क्रम में इस सिस्टम से विभाग के कार्मिकों को अवगत कराने एवं दक्षता विकसित करने के उद्देश्य से वन इंडिया वन सिस्टम की चरणबद्ध तरीके से जानकारी प्रकाशित की जा रही है। इसी कड़ी के तारतम्य में इस चरण में लेखापरीक्षा इकाइयों (ऑडिट यूनिवर्स) की जानकारी दी गई है।

ऑडिट यूनिवर्स उन सभी संस्थाओं का समूह है जो भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक के लेखापरीक्षा क्षेत्राधिकार के अंतर्गत आते हैं। इसके बारे में अनुपालन लेखापरीक्षा दिशानिर्देश 2016 में विस्तृत रूप से वर्णन किया गया है। सभी क्षेत्रीय कार्यालय ऑडिट यूनिवर्स के लिए ऑडिट यूनिवर्स रजिस्टर/साइकिल इंडेक्स रजिस्टर (सी.आई.आर.) बनाते हैं, जिसे समय-समय पर अद्यतन किया जाता है। इस डाटा को ओ.आई.ओ.एस. में ऑडिट यूनिवर्स मॉड्यूल पर अपलोड किया जाता है जिसका संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार है—

नई लेखापरीक्षा इकाई को ऑडिट यूनिवर्स में शामिल करना :

जब भी किसी लेखापरीक्षा इकाई से संबंधित नई जानकारी प्राप्त होती है तो इसे निम्नलिखित बिंदुओं को ध्यान में रखते हुए कार्यालय के योजना (प्लानिंग) अनुभाग के प्रभारी अधिकारी या संबंधित लेखापरीक्षक द्वारा ओ.आई.ओ.एस. में जोड़ा जाता है :

- एक नई लेखापरीक्षा इकाई को ओ.आई.ओ.एस. में जोड़ने से पहले, समूह अधिकारी की स्वीकृति प्राप्त की जानी चाहिए, और इकाई से संबंधित दस्तावेज संलग्न किए जाने चाहिए।
- लेखापरीक्षा इकाई की आईडी अद्वितीय (यूनिक) होनी चाहिए जैसा कि निम्नलिखित उदाहरण द्वारा समझा जा सकता है:

लेखापरीक्षा इकाई आई.डी.	लेखापरीक्षा इकाई का नाम	पदनाम	जिला
OBCM ¹ -AD ² -BPL ³	सहायक संचालक, अन्य पिछड़ा वर्ग एवं अल्पसंख्यक कल्याण विभाग, भोपाल	सहायक संचालक	भोपाल

1. विभाग का संक्षिप्त नाम,
2. पद का संक्षिप्त नाम
3. जिला कोड

- कार्यान्वयन इकाइयों की संख्या बहुत अधिक एवं उनके नाम में समानता होती है (आम तौर पर संख्या हजारों-लाखों में होती है)। इस प्रकार की इकाइयों में, लेखापरीक्षा इकाई आई.डी. निम्नलिखित उदाहरण के अनुसार बनाई जा सकती है:

लेखापरीक्षा इकाई आई डी	लेखापरीक्षा इकाई का नाम (कार्यान्वयन इकाई)	पद	जिला
WCD-AWC-BPL-1	राजभवन आंगनवाड़ी (महिला एवं बाल विकास विभाग)	आंगनवाड़ी कार्यकर्ता	भोपाल
WCD-AWC-BPL-2	बरखेड़ी बरामद आंगनवाड़ी (महिला एवं बाल विकास विभाग)	आंगनवाड़ी कार्यकर्ता	भोपाल
PHFW-CHC-BPL-1	सी.एच.सी. गांधी नगर (लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग)	चिकित्सा अधिकारी	भोपाल
PHFW-CHC-BPL-2	सी.एच.सी. कोलार रोड (लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग)	चिकित्सा अधिकारी	भोपाल

- इकाइयों का पूरा नाम उल्लिखित किया जाना चाहिए।
- लेखापरीक्षा इकाई का नाम (हिंदी एवं अंग्रेजी दोनों में), इकाई का प्रकार, पदनाम, उच्च प्राधिकारी (जिसे रिपोर्ट करते हैं), धारा (जिसके अंतर्गत लेखापरीक्षा की जा रही है), लेखापरीक्षा इकाई का वर्गीकरण, इकाई का पता और ई-मेल आईडी इत्यादि को संबंधित फील्ड में भरा जाना चाहिए।
- ऑर्गेनाइजेशन मीनू में डी.डी.ओ. का विवरण भी उल्लिखित किया जाना चाहिए।

लेखापरीक्षा इकाई को ओ.आई.ओ.एस. में जोड़ने हेतु निम्न प्रक्रिया का अनुसरण किया जाना चाहिए:

ऑडिट यूनिवर्स → क्रिएट ऑडिट एंटिटी → उपर्युक्त बुलेट में दिए गए सभी फील्ड में संबंधित डाटा ओ.आई.ओ.एस. में भरें (ऑडिट एंटिटी आई.डी., ऑडिट एंटिटी का नाम (हिंदी एवं अंग्रेजी), ऑडिट एंटिटी टाइप एवं पद इत्यादि) → कंटिन्यू → फिनिश

ऑडिट यूनिवर्स में लेखापरीक्षा इकाई की जानकारी को अद्यतन करना:

यदि लेखापरीक्षा इकाई का नाम, पदनाम, उच्च प्राधिकारी, वर्गीकरण, संपर्क जानकारी (पता और ईमेल आई.डी.) आदि जैसे किसी डाटा में बदलाव होता है तो इसे योजना (प्लानिंग) अनुभाग के प्रभारी अधिकारी द्वारा समय-समय पर अद्यतन करना चाहिए। अद्यतन करने से पूर्व समूह अधिकारी की अनुमति लेनी चाहिए एवं उससे संबंधित दस्तावेज भी संलग्न किए जाने चाहिए।

लेखापरीक्षा इकाई को ओ.आई.ओ.एस. में अद्यतन करने हेतु निम्न प्रक्रिया का अनुसरण करें:

ऑडिट यूनिवर्स → एडवांस सर्च → दिए गए विकल्पों में से किसी एक विकल्प को भर कर सर्च बटन पर क्लिक करें → खोजे हुए परिणामों में जिस लेखापरीक्षा इकाई को अद्यतन करना है उसकी लेखापरीक्षा इकाई आई.डी. पर क्लिक करें → अपडेट → संबंधित फील्ड में डाटा अद्यतन करें → कंटिन्यू → फिनिश।

ऑडिट यूनिवर्स में लेखापरीक्षा इकाई को निष्क्रिय (बंद) करना:

यदि किसी इकाई को विभाग द्वारा निष्क्रिय या किसी अन्य के साथ विलय कर दिया गया है तो इस इकाई को ओ.आई.ओ.एस. से निष्क्रिय किया जाना चाहिए। संबंधित फील्ड में "इकाई बंद करने की तारीख" और "निष्क्रिय करने के कारण" को भरा जाना चाहिए और समूह अधिकारी की अनुमति लेकर संबंधित दस्तावेज भी इसके साथ संलग्न करने चाहिए।

लेखापरीक्षा इकाई को ओ.आई.ओ.एस. में निष्क्रिय करने हेतु निम्न प्रक्रिया का अनुसरण करें:

ऑडिट यूनिवर्स → एडवांस सर्च → दिए गए विकल्पों में से किसी एक विकल्प को भर कर सर्च बटन पर क्लिक करें → खोजे हुए परिणामों में जिस लेखापरीक्षा इकाई को निष्क्रिय/बंद करना है उसकी लेखापरीक्षा इकाई आई.डी. पर क्लिक करें → अपडेट → स्टेट्स फील्ड को ओपन से बदलकर क्लोज करें → कंटिन्यू → फिनिश।

इस प्रकार ऑडिट यूनिवर्स को ओ.आई.ओ.एस. में शामिल करने, अद्यतन करने एवं बंद करने की प्रक्रिया अपनाई जानी चाहिए। ओ.आई.ओ.एस. की आगे की प्रक्रिया अगले अंक में दी जाएगी।

**“हिंदी भाषा एक ऐसी सार्वजनिक
भाषा है, जिसे बिना भेद-भाव
प्रत्येक भारतीय ग्रहण कर सकता है।”**

- पं. मदन मोहन मालवीय

वास्तविकता की ध्वनि

अखिलेश चंद्र वाजपेयी

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी



गुप्ता अंकल, गुप्ता अंकल, मैंने जोर से आवाज दी।
आवाज सुनकर वृद्ध वय ने एक्किटा धीरे-धीरे करके रोक़ी और हेलमेट हटाया।
हेलमेट हटाते ही मुझे देखकर बड़ी जोर से आवाज लगाई "अखिलेश"
हां, मैं। मैं तुरंत उनके पास पहुंचा और उनको प्रणाम किया।
उन्होंने मुझे गले लगा लिया और प्यार से पूछा, "कैसे हो अखिलेश?"
मैं भाव विभोर हो गया, "अंकल, मैं ठीक हूँ आप कैसे हैं?"
"सब ठीक है", वह बोले।

उन्होंने इधर-उधर देखा। सामने एक चाय की दुकान को देखकर बोले "चलो, चाय पी जाए।" हाथ पकड़ कर दुकान पर ले गए और मुस्करा कर बोले, "बड़ी खुशी हुई, बहुत दिनों बाद मुलाकात हुई।"

गुप्ता अंकल और हम अगल-बगल के मकान में किराए पर रहते थे इसीलिए हमारे और उनके परिवार के बीच आत्मीय संबंध थे। बाद में उन्होंने अपना मकान बना लिया और हम अपने फ्लैट में रहने आ गए।

फिर बातों का सिलसिला शुरू हो गया। राजनीति से लेकर खेल तक सभी विषयों पर बातें हुईं। बातों ही बातों में परिवार की बातें शुरू हो गईं। "अभी कहां से आ रहे हैं?" मैंने पूछा, वह बोले, "कुछ नहीं गुल्लू का लड़का बल्ले के लिये ज़िद कर रहा था वही लेने जा रहा हूँ।" अंकल बताने लगे कि वह सेवानिवृत्त हो गए हैं और गुल्लू की पदोन्नति हो गई है। कार्यालय में अब उसे ज़्यादा देर तक बैठना पड़ता है।

हमने पूछा कि सेवानिवृत्ति के बाद आपकी दिनचर्या क्या रहती है? अंकल जी थोड़ा संयत होकर बताने लगे कि सुबह गुल्लू के लड़के को चौराहे तक स्कूल बस में बिठाने के लिए जाते हैं, फिर नाश्ता-पानी करते हैं, घर का, कोई बाहर का काम होता है उसको कर आते हैं, दोपहर में बच्चे को लेने जाते हैं। शाम को सब्जी आदि लेने के लिए घर से निकलते हैं कोई मिल गया तो ऐसे ही मुलाकात हो जाती है और बस दिन कट जाता है। अंकल जी अपने मन से सब बताने लगे, मुझे ऐसा लगा कि वह कुछ और कहना चाहते हैं। मैंने पूछा, "अंकल जी, घर में सब ठीक है?" वह बोले, हां, गुल्लू और बहू सब ठीक ही हैं। वैसे तो सब ठीक-ठाक है लेकिन कभी-कभी एक पुरानी फिल्म का गाना याद आ जाता है—

रामचंद्र कह गए सिया से, ऐसा कलयुग आएगा,
बात-बात पर माता-पिता को, बेटा आंख दिखाएगा।

उनके यह कहने पर हम एक-दूसरे का चेहरा देखने लगे और शायद उनके चेहरे पर उभर रहे शब्द उनकी अनकही बात को पूरा कर रहे थे।

हम क्या हो गए हैं

मदन गोपाल शर्मा
सेवानिवृत्त वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी



बदलाव का समय है, जमाने बदल गए हैं,
आदर्श सिद्धांत सब, पुराने हो गए हैं,
हम कहां थे, अब कहां पहुंच गए हैं,
परंपरा निभाना, अब बहाने हो गए हैं।

पहले सुकून से रहने को घर हुआ करता था,
आधुनिक दुनिया में आशियाने हो गए हैं,
आज शायद एक चेहरे से काम नहीं चलता,
चेहरे बदलना प्रगति के मायने हो गए हैं।

अपना सब कुछ गंवा, हाथ खाली कर बैठे हैं,
दूसरों की सभ्यता, संस्कृति पर दीवाने हो गए हैं,
माता-पिता, भाई-बहन से किनारा कर लिया है,
आत्मीयता, होड़ दिखाने भर को नाते-रिश्ते हो गए हैं।

मतलबी रिश्ते कठिन समय में कभी काम नहीं आते,
यह जानकर भी हम सभी स्वार्थ में मतवाले हो गए हैं,
सब कुछ समझ कर भी अनजान बन रहे हैं हम,
पानी सिर से ऊपर जा रहा है फिर भी अनजाने हो गए हैं।

कार्यालयीन गतिविधियां

भारत के स्वतंत्रता संग्राम में अपने प्राणों की आहुति देने वाले शहीदों की स्मृति में दिनांक 30.01.2024 को प्रातः 11.00 बजे 2 मिनट का मौन कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा अपने-अपने अनुभागों में किया गया।

मनोरंजन गतिविधियां

गणतंत्र दिवस के उपलक्ष्य में विभागीय टेनिस वॉल क्रिकेट प्रतियोगिता एवं कार्यालयीन अधिकारियों/कर्मचारियों (महिला/पुरुष) हेतु विभिन्न मनोरंजक खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इन प्रतियोगिताओं के विजेता प्रतिभागियों को 26 जनवरी 2024 को गणतंत्र दिवस समारोह में पुरस्कृत किया गया।



**वर्ष 2023-24 (सितम्बर 2023 से फरवरी 2024) में कार्यालय से
सेवानिवृत्त हुए कर्मिकों की सूची**

स.क्र.	नाम सर्व श्री	स्थाई क्र.	पदनाम	सेवानिवृत्ति तिथि
1.	किशन लाल	01 / 6191	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	31.12.2023
2.	राजेश सराफ	01 / 10542	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	29.02.2024
3.	विनोद कुमार दीक्षित	01 / 6202	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	29.02.2024
4.	प्रकाश चंद्र	03 / 4945	सहायक पर्यवेक्षक	29.02.2024
5.	महेश कुमार करोसिया	05 / 10020	एम.टी.एस.	29.02.2024

**वर्ष 2023-24 (सितम्बर 2023 से फरवरी 2024) में कार्यालय में
नियुक्त हुए कर्मिकों की सूची**

स.क्र.	नाम सर्व श्री/श्रीमती/सुश्री	स्थाई क्र.	पदनाम	नियुक्ति तिथि
1.	नरेंद्र मीना	04 / 11540	लेखापरीक्षक	04.09.2023
2.	गोपाल मोहन शर्मा	04 / 11541	लेखापरीक्षक	01.09.2023
3.	विशाल महावर	04 / 11542	लेखापरीक्षक	29.09.2023
4.	रोहित सिंह राजपूत	05 / 11543	डाटा एंट्री ऑपरेटर	19.10.2023
5.	प्रियालता	05 / 11544	लिपिक	23.10.2023
6.	आनंद मोहन	03 / 11545	वरिष्ठ लेखापरीक्षक	11.12.2023
7.	गौरव सिंह कुशवाह	04 / 11546	लेखापरीक्षक	11.12.2023
8.	चंद्रपाल सिंह यादव	04 / 11547	लेखापरीक्षक	20.12.2023
9.	जय सिंघल	04 / 11548	लेखापरीक्षक	20.12.2023
10.	प्रशांत कुमार तिवारी	04 / 11549	लेखापरीक्षक	20.12.2023
11.	ऋषिकेश शुक्ला	04 / 11550	लेखापरीक्षक	20.12.2023
12.	ललित बत्रा	04 / 11551	लेखापरीक्षक	20.12.2023

स.क्र.	नाम सर्व श्री/श्रीमती/सुश्री	स्थाई क्र.	पदनाम	सेवानिवृत्ति तिथि
13.	निरंजन चौहान	04 / 11542	लेखापरीक्षक	20.12.2023
14.	शुभम मौर्य	04 / 11553	लेखापरीक्षक	21.12.2023
15.	शिवम नामदेव	04 / 11554	लेखापरीक्षक	21.12.2023
16.	नीरज राठौर	04 / 11555	लेखापरीक्षक	21.12.2023
17.	शुभम जायसवाल	04 / 11556	लेखापरीक्षक	21.12.2023
18.	शुभम अहिरवार	04 / 11557	लेखापरीक्षक	21.12.2023
19.	सुरेंद्र कुमार पटेल	04 / 11558	लेखापरीक्षक	21.12.2023
20.	अभिषेक रावत	04 / 11559	लेखापरीक्षक	22.12.2023
21.	दुर्गेश अग्रवाल	04 / 11560	लेखापरीक्षक	22.12.2023
22.	शिवानी यादव	05 / 11561	स्टेनो ग्रेड-2	22.12.2023
23.	प्रीति	05 / 11562	स्टेनो ग्रेड-2	26.12.2023
24.	ब्रजेश कुमार यादव	04 / 11563	लेखापरीक्षक	26.12.2023
25.	राजेश कुमार अहिरवार	04 / 11564	लेखापरीक्षक	26.12.2023
26.	अमित कुमार	04 / 11565	लेखापरीक्षक	26.12.2023
27.	बिपिन कुमार	04 / 11566	लेखापरीक्षक	26.12.2023
28.	महेंद्र कुमार	04 / 11567	लेखापरीक्षक	26.12.2023
29.	हार्दिक श्रीवास्तव	04 / 11568	लेखापरीक्षक	26.12.2023
30.	पुष्पांजलि विश्वकर्मा	04 / 11569	लेखापरीक्षक	26.12.2023
31.	सौरभ	04 / 11570	लेखापरीक्षक	29.12.2023
32.	विनीत राठौर	04 / 11571	लेखापरीक्षक	01.01.2024
33.	वर्मा हर्ष श्री रामसेवक	04 / 11572	लेखापरीक्षक	01.01.2024
34.	युवराज वर्मा	04 / 11573	लेखापरीक्षक	03.01.2024
35.	मदन कुमार	04 / 11574	लेखापरीक्षक	03.01.2024
36.	प्रिंस गुप्ता	04 / 11575	स्टेनो ग्रेड-2	05.01.2024
37.	सौरभ गोस्वामी	05 / 11576	स्टेनो ग्रेड-2	05.01.2024
38.	प्रचंड यादव	05 / 11577	स्टेनो ग्रेड-2	05.01.2024
39.	अनन्य गुप्ता	04 / 11578	लेखापरीक्षक	15.01.2024
40.	रितेश नेगी	04 / 11579	लेखापरीक्षक	19.01.2024
41.	शिवानी गुप्ता	05 / 11580	स्टेनो ग्रेड-2	02.02.2024

संयुक्त हिंदी पखवाड़ा 2023 के अंतर्गत आयोजित प्रतियोगिताओं के परिणाम

1. काव्य पाठ प्रतियोगिता

प्रथम	सुश्री अर्चना मानव (04/11389)
द्वितीय	श्री उपेंद्र सिंह यादव (02/6823)
तृतीय	श्री गौरव शर्मा (03/11321)

2. हिंदी अनुवाद प्रतियोगिता

प्रथम	श्री आशीष कुमार विश्वकर्मा (03/10671)
द्वितीय	सुश्री दीक्षा चौहान (02/11240)
तृतीय	सुश्री बुलबुल गर्ग (04/11457)

3. हिंदी टंकण (मंगल फोंट) प्रतियोगिता

प्रथम	सुश्री बुलबुल गर्ग (04/11457)
द्वितीय	श्री किरनपाल सिंह (02/11234)
तृतीय	सुश्री दीक्षा चौहान (02/11240)

4. निबंध लेखन प्रतियोगिता

प्रथम	श्री भागीरथी (03/11957)
द्वितीय	श्री दीपक कुमार मीना (03/10681)
तृतीय	आशीष कुमार विश्वकर्मा (03/10671)

5. वाद-विवाद प्रतियोगिता

प्रथम	सुश्री अर्चना मानव (04/11389)
द्वितीय	श्री अनुपम मिश्रा (03/11192)
तृतीय	श्री उपेंद्र सिंह यादव (02/6823)

6. पत्र लेखन प्रतियोगिता

प्रथम	श्री शाहमीर खान (04/11223)
द्वितीय	सुश्री दीक्षा चौहान (02/11240)
तृतीय	श्री किरनपाल सिंह (02/11234)

7. प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता

प्रथम	श्री जितेंद्र अग्रवाल (03/11080)
द्वितीय	श्री राहुल कुमार (04/11319)
तृतीय	सुश्री अर्चना मानव (04/11389)

8. श्रुत लेखन प्रतियोगिता

प्रथम	सुश्री निधि गौतम (03/11523)
द्वितीय	श्री गौरव शर्मा (03/11321)
तृतीय	श्री संतोष कुमार तिवारी (03/11302)

9. अंताक्षरी प्रतियोगिता

विजेता	सुश्री रूपाली मालवीय (02/10353) श्री गौरव शर्मा (03/11321)
उपविजेता	श्री किरनपाल सिंह (02/11234) श्री जितेंद्र अग्रवाल (03/11080)

आपके अभिमत आपके पत्र...



महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी गृह पत्रिका "गोपाद्री" के 28वें अंक की ई-संस्करण की प्रति ईमेल के माध्यम से प्राप्त हुई है। सर्वप्रथम इसके लिए सहर्ष आभार व्यक्त करते हैं। राजभाषा हिंदी के विकास में योगदान स्वरूप पत्रिका "गोपाद्री" के 28वें अंक का ई-संस्करण डिजिटल रूप में आज सहजता से सभी पाठकों के हाथों में पहुंच चुका है। पत्रिका की साज-सज्जा, विषय एवं आवरण पृष्ठ स्वतः ही पाठकों का ध्यान आकर्षित करने वाली हैं। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं न केवल उच्चकोटि की हैं बल्कि ज्ञानवर्धक व प्रेरणादायी भी हैं। रचना "पत्थर का भाग्य" और "मनचली" काफी रुचिकर हैं। आशा है कि यह पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों के हिंदी की मौलिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक भूमिका निभाएगी।

पत्रिका के उत्तम संपादन हेतु पत्रिका परिवार बधाई के पात्र हैं। पत्रिका के सतत प्रकाशन एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाओं सहित।

भवदीय— हिंदी अधिकारी (हिंदी अनुभाग)
महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) का कार्यालय, बिहार, पटना

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित पत्रिका "गोपाद्री" का 28वां अंक प्राप्त हुआ। इस पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं रुचिकर, भावयुक्त एवं उद्देश्यपूर्ण हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ आकर्षक है। कार्यालयीन गतिविधियों से संबंधित छायाचित्र भी मनमोहक हैं।

श्री धनंजय कुमार की "मनचली", श्री अभिषेक त्रिपाठी की "सच्चा सपूत", सुश्री ज्योति जौहरी की "वो बूढ़ा बरगद का पेड़", श्री विद्यानंद शर्मा की "आशीर्वाद", सुश्री अर्चना मानव की "एडिक्शन—एक जुनून, एक नशा" रचनाएं विशेष रूप से प्रशंसनीय हैं।

पत्रिका को सुरुचिपूर्ण एवं उपयोगी बनाने के लिए संपादकीय मंडल को बधाई। पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं।

भवदीया— एकता (हिंदी अधिकारी)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
पंजाब, चंडीगढ़-160017

महोदय / महोदया,

आपके कार्यालय का पत्र ई-मेल द्वारा दिनांक 06.10.2023 को प्राप्त हुआ। ई-मेल द्वारा आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित कार्यालयीन पत्रिका "गोपाद्री" के 28वें अंक की ई-प्रति सधन्यवाद प्राप्त हुई। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं उच्चस्तरीय, ज्ञानवर्धक एवं प्रशंसनीय हैं। आवरण पृष्ठ बहुत ही आकर्षक एवं मनोहारी है। इसमें "मध्यप्रदेश के वन्यजीव अभ्यारण्य" मध्य प्रदेश वन्यजीव अभ्यारण्यों का वर्णन करता है जो बहुत ही ज्ञानवर्धक है। पत्रिका में समाविष्ट सुश्री निधि गौतम का लेख "रंगोली" एवं श्री अभिषेक त्रिपाठी का लेख "सच्चा सपूत" तथा सुश्री अर्चना मानव का लेख "एडिक्शन एक जुनून, एक नशा" बहुत ही ज्ञानवर्धक लेख है। इसके अतिरिक्त सुश्री ज्योति जौहरी की कविता "वो बूढ़ा बरगद का पेड़" एवं श्री विजय सुगंधी की कविता "पत्थर का भाग्य" पठनीय हैं।

पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक-मंडल बधाई के पात्र हैं। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीया— हिंदी अधिकारी
प्रधान महालेखाकार (ले. व हक.) हरियाणा का कार्यालय
लेखा भवन, प्लॉट नं. 4 व 5, सेक्टर 33-बी, चंडीगढ़-160020

आदरणीय महोदय / महोदया,

आपके कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका "गोपाद्री" के 28वें अंक की एक ई-प्रति प्राप्त हुई है। सरस्नेह धन्यवाद। पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाएं, मूलतः लेख, कविताएं, प्रेरक-प्रसंग इत्यादि अत्यंत मनोहर, सुपाठ्य, बोधगम्य तथा रुचिकर हैं। यह पत्रिका निस्संदेह राजभाषा के उन्नयन का प्रतीक है। राजभाषा कार्यान्वयन के प्रति आप सभी का यह समर्पण एक उज्ज्वल भविष्य की ओर इशारा कर रहा है। पत्रिका में मुद्रित चित्र और इसकी साज-सज्जा वास्तव में चित्ताकर्षक है।

हमें विश्वास है कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य तथा आगामी अंक के लिए हार्दिक शुभेच्छाएं।

भवदीया— हिंदी अधिकारी
प्रधान महालेखाकार (ले.प.-2) का कार्यालय, कर्नाटक, बेंगलूरु

महोदय / महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका "गोपादी" के 28वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, तदर्थ धन्यवाद। पत्रिका आवरण पृष्ठ से अंतिम पृष्ठ तक अत्यंत आकर्षक है। पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाएं रुचिकर एवं ज्ञानप्रद तथा उच्च कोटि की हैं। "रंगोली", "सच्चा सपूत", "एक कप चाय", "बचपन की यादें", "बाज बनो, जांबाज बनो", "एडिक्शन... एक जुनून, एक नशा", "पत्थर का भाग्य" विशेष रूप से सराहनीय हैं। पत्रिका में सम्मिलित विभिन्न विषयों से संबंधित रचनाएं भिन्न-भिन्न विषयों के संबंध में जानकारी प्रदान करती हैं। विभिन्न गतिविधियों से संबंधित छायाचित्रों का प्रस्तुतीकरण सराहनीय है।

पत्रिका प्रकाशन के उज्ज्वल भविष्य की कामना के साथ पत्रिका के कुशल संपादन एवं प्रकाशन के लिए संपादक मंडल को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

भवदीया— विद्या मुरलीधरन, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी / प्रशासन
कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा, मुंबई

महोदय / महोदया,

संदर्भित पत्र के साथ आपकी पत्रिका "गोपाद्री" का नवीन अंक प्राप्त हुआ। आपकी पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए हार्दिक शुभकामनाएं एवं इसके प्रेषण के संबंध में आभार स्वीकार करें। विभागीय पत्रिकाएं अपने कार्यालय एवं अपने राज्य की संस्कृति और कार्यप्रणाली का उत्तम चित्रण करती हैं। इनके माध्यम से हमें कार्यालय एवं समाज में हो रही घटनाओं का सुंदर चित्रण प्राप्त होता है। आपकी पत्रिका में संकलित सभी रचनाएं समान रूप से सरल, सहज, रोचक एवं ज्ञानवर्धक तो हैं ही, इसके अतिरिक्त पत्रिका की साज सज्जा एवं मुद्रण भी अति उत्तम है, जिसके लिए लेखकों एवं संपादक मंडल के सदस्यों को विशेष बधाई।

पत्रिका के सम्मानित संपादक मण्डल के सदस्यों और हिंदी की सार्थकता के लिए प्रयासरत आपकी राजभाषा पत्रिका "गोपाद्री" के उज्ज्वल भविष्य के लिए हमारी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय— सहायक लेखा अधिकारी (हिंदी कक्ष)
कार्यालय—प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी),
जम्मू एवं कश्मीर, श्रीनगर

महोदय / महोदया,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका "गोपाद्री" के 28वें संस्करण की ई—प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद! पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख, कविताएं उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक हैं। विशेषकर श्री विजय सुगंधी, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी की कविता "पत्थर का भाग्य", श्रीमती स्वर्णलता गुप्ता, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी का लेख "वन्यजीव", सुश्री निधि गौतम, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक का लेख "रंगोली" आदि उल्लेखनीय एवं सराहनीय हैं।

पत्रिका का मुख पृष्ठ अत्यंत आकर्षक है। पत्रिका के रचनाकारों एवं संपादक मंडल को सफल संपादन तथा प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हमारे कार्यालय की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय— हिंदी अधिकारी
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा)—2
महाराष्ट्र, नागपुर—440001

महोदय / महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित होने वाली हिंदी पत्रिका "गोपाद्री" के 28वें अंक की ई—प्रति प्राप्त हुई। एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका की साज—सज्जा अत्यंत ही मनमोहक है। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं सराहनीय एवं उच्च कोटि की हैं। श्री धनंजय कुमार की रचना "मनचली", श्री संजीव कुमार झांजी की रचना "एक कप चाय", सुश्री निधि गौतम की रचना "बचपन की यादें", श्रीमती अर्चना मानव की रचना "एडिक्शन..... एक जुनून, एक नशा" विशेष रूप से प्रशंसनीय है।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना सहित सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल संपादन हेतु हार्दिक बधाई।

भवदीय— वरिष्ठ लेखा अधिकारी (राजभाषा)
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) ओडिशा, भुवनेश्वर—751001

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका "गोपाद्री" के 28वें अंक की प्रति प्राप्त हुई। सर्वप्रथम इसके लिए सहर्ष धन्यवाद। "गोपाद्री" राजभाषा के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों की हिंदी मौलिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक भूमिका निभा रही है। विशेषकर निधि गौतम का आलेख "रंगोली", शाहमीर खान का आलेख "पन्ना: राष्ट्रीय उद्यान", विद्यानन्द वर्मा का आलेख "आशीर्वाद", अर्चना मानव की कविता "बाज बनो, जाबांज बनो", विजय सुगंधी की कविता "पत्थर का भाग्य" और अनुपम मिश्रा की कविता "याद है मुझे", अत्यंत ही उत्कृष्ट एवं सराहनीय हैं। पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख, कविताएं उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक तथा पठनीय हैं। इससे सरकारी कामकाज में राजभाषा हिंदी के प्रति लोगों में निश्चित ही प्रेरणा और उत्साह का संचार होगा। पत्रिका की साज-सज्जा और अंतर्निहित फोटो आकर्षक एवं मनोरम है।

हिंदी की सार्थकता के लिए प्रयासरत आपकी पत्रिका "गोपाद्री" के उज्ज्वल भविष्य के लिए "आकांक्षा" परिवार की हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय— वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (राजभाषा)
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा,
पर्यावरण एवं वैज्ञानिक विभाग, कोलकाता शाखा

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिंदी पत्रिका, "गोपाद्री" के 28वें अंक की प्राप्ति हुई। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं ज्ञानवर्धक एवं रोचक हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं पत्रिका में प्रकाशित छायाचित्र अत्यंत आकर्षक और मनमोहक हैं। साथ ही पत्रिका का कलेवर भी अत्यंत आकर्षक है। कविताएं एवं लेख भी भावपूर्ण, सार्थक तथा चित्ताकर्षक हैं। इनमें से जो रचनाएं अति उत्तम लगीं, वो हैं— "मध्य प्रदेश के राष्ट्रीय उद्यान" "एक कप चाय", "मध्य प्रदेश के वन्यजीव अभ्यारण्य", और "एडिक्शन... एक जुनून, एक नशा", आदि।

आशा करता हूं कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य तथा आगामी अंकों के लिए बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

भवदीय— वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी कक्ष
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-2), पश्चिम बंगाल

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित पत्रिका "गोपाद्री" के 28वें अंक की प्रति प्राप्ति हुई। पत्रिका की साज-सज्जा एवं विषयवस्तु का सुंदर प्रस्तुतीकरण अत्यंत प्रशंसनीय है। पत्रिका में समाविष्ट रंगोली (निधि गौतम), याद है मुझे (अनुपम मिश्रा) और पत्थर का भाग्य (विजय सुगंधी) जैसी रचनाएं उत्कृष्ट, ज्ञानवर्धक और संग्रहणीय हैं। पत्रिका में मौलिक सोच और सृजनात्मक अभिव्यक्ति की गहनता समाहित है।

पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं। कृपया अपना यही सार्थक प्रयास निरंतर जारी रखें।

भवदीय— महेश कुमार वर्मा, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (राजभाषा अनुभाग)
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-द्वितीय)
राजस्थान, जयपुर

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित वार्षिक गृह हिंदी पत्रिका "गोपाद्री" के 28वें अंक की एक प्रति इस कार्यालय में प्राप्त हुई। धन्यवाद।

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं सुरुचिपूर्ण तथा ज्ञानप्रद हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं इसमें प्रकाशित छायाचित्र अत्यंत आकर्षक हैं। पत्रिका का कलेवर भी अत्यंत लुभावना है एवं पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख, कहानियां, कविताएं एवं यात्रा-वृत्तांत भावपूर्ण, सार्थक तथा मन को छू लेने वाली हैं, विशेषकर सुश्री निधि गौतम द्वारा कृत "रंगोली", श्री धनंजय कुमार द्वारा कृत "मनचली" एवं श्री विद्यानंद वर्मा द्वारा कृत "आशीर्वाद" अत्यंत प्रशंसनीय एवं सराहनीय हैं। सभी रचनाकार एवं पत्रिका के सुंदर प्रकाशन के लिए संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं। पत्रिका की निरंतर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए इस कार्यालय की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय— वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन)
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) चेन्नै का कार्यालय
लेखापरीक्षा भवन, 361, अण्णा सालै, तेनामपेट, चेन्नै

महोदय/महोदया,

ई-मेल दिनांक 06.10.2023 के द्वारा आपके कार्यालय की वार्षिक राजभाषा पत्रिका "गोपाद्री" के 28वें संस्करण की प्रति प्राप्त हुई है। एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं उच्च कोटि की हैं। पत्रिका का वन्य जीवों से संबंधित आवरण पृष्ठ अति सुंदर है। बाज बनो जांबाज बनो, वो बूढ़ा बरगद का पेड़, याद है मुझे, बचपन की यादें आदि कविताएं बहुत प्रशंसनीय हैं। मध्यप्रदेश के राष्ट्रीय उद्यान, एक कप चाय, एडिक्शन... एक जुनून, एक नशा, आशीर्वाद, विश्व वन्यजीव दिवस आदि रचनाएं विशेष रूप से सराहनीय एवं रुचिकर हैं। उत्तम संयोजन एवं संपादन के लिए संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं। पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय— हिंदी अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा),
हरियाणा, प्लॉट नं. 5, सेक्टर-33बी— दक्षिण मार्ग, चंडीगढ़

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका "गोपाद्री" के 28वें अंक की ई प्रति प्राप्त हुई। पत्रिका प्रेषण हेतु सादर आभार। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं पत्रिका में प्रकाशित छायाचित्र अत्यंत मनमोहक एवं आकर्षक हैं। पत्रिका के इस अंक में समाविष्ट सभी रचनाएं पठनीय, ज्ञानवर्धक एवं प्रेरणादायक हैं। श्री शाहमीर खान का लेख "पन्ना राष्ट्रीय उद्यान", श्री अभिषेक त्रिपाठी की कहानी "सच्चा सपूत", सुत्री अर्चना मानव की कविता "बाज बनो, जांबाज बनो" तथा श्री अनुपम मिश्रा की कविता "याद है मुझे" विशेष रूप से सराहनीय है।

पत्रिका को सुरुचिपूर्ण एवं उपयोगी बनाने के लिए संपादक मंडल को बधाई। पत्रिका की निरंतर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य हेतु हमारी हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय— रविन्द्र सिंह बिष्ट (वरिष्ठ लेखाअधिकारी/प्रशासन)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) द्वितीय
मध्य प्रदेश, ग्वालियर

महोदय / महोदया,

“गोपाद्री” के 28वें अंक के ई—संस्करण की प्राप्ति हुई, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका का कलेवर एवं साज—सज्जा आकर्षक है। साथ ही पत्रिका की विषय वस्तु सराहनीय, पठनीय एवं संग्रहणीय है। पत्रिका में समाहित समस्त लेख विचार प्रधान, प्रेरक एवं जीवनोपयोगी हैं। एक ही पत्रिका में इतने सारे विषयों को समाहित करना अतुलनीय है। समस्त रचनाएं एक से बढ़कर एक हैं। विशेषतः श्री विद्यानन्द वर्मा की कहानी “आशीर्वाद”, सुश्री निधि गौतम की कहानी “रंगोली”, श्री विजय सुगंधी की कविता “पत्थर का भाग्य”, सुश्री ज्योति जौहरी की कविता “वो बरगद का पेड़”, विचार प्रधान, रोचक एवं प्रेरणादायक हैं।

पत्रिका के सफल संपादन हेतु संपादक मंडल को साधुवाद तथा पत्रिका की निरंतर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय— गिरिराज (हिंदी अधिकारी)

कार्यालय—प्रधान महालेखाकार (ले. प.—1), ओडिशा भुवनेश्वर

महोदय / महोदया,

उपर्युक्त संदर्भित पत्र के साथ आपके कार्यालय द्वारा “गोपाद्री” के 28वें अंक की ई—प्रति प्राप्त हुई, तदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में सभी रचनाएं प्रशंसनीय हैं विशेष तौर पर बचपन की यादें, बाज बनो जांबाज बनो, पत्थर का भाग्य, याद है मुझे, आशीर्वाद आदि रचनाएं सारगर्भित एवं सराहनीय हैं।

पत्रिका की साज—सज्जा उत्तम है। कार्यालयीन चित्रों ने पत्रिका की सुंदरता को और निखारा है। पत्रिका के कुशल तथा सफल संपादन हेतु संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई। पत्रिका के निरंतर उज्ज्वल भविष्य हेतु शुभकामनाएं।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी / हिंदी कक्ष

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा—2) म.प्र.

53, अरेरा हिल्स, होशंगाबाद रोड, भोपाल—462011

महोदय / महोदया,

आपके कार्यालय का ई—मेल, दिनांक 09.10.2023 के माध्यम से आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी ई—पत्रिका “गोपाद्री” के 28वें अंक की प्राप्ति हुई। धन्यवाद। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं आंतरिक साज—सज्जा काफी सुंदर एवं आकर्षक है। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं रोचक एवं ज्ञानवर्धक हैं। आशा है कि यह पत्रिका हिंदी के प्रचार—प्रसार के लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका के उत्तरोत्तर प्रगति की शुभकामनाएं।

भवदीय— वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिंदी)

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा—1)

पश्चिम बंगाल, 2. गवर्मेन्ट प्लेस (पश्चिम), ट्रेजरी बिल्डिंग्स

कोलकाता—700 001

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिंदी पत्रिका "गोपात्री" का 28वां अंक प्राप्त हुआ। सहर्ष धन्यवाद।

पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं उच्चकोटि की एवं ज्ञानवर्धक हैं। प्रस्तुत अंक सराहनीय, पठनीय एवं संग्रहणीय है एवं राजभाषा की उत्तरोत्तर प्रगति हेतु एक सार्थक प्रयास है।

पत्रिका के उत्तम संयोजन, संपादन हेतु संपादक मण्डल को बधाई तथा पत्रिका की अविरल प्रगति तथा विकास हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

हिंदी अधिकारी
कार्यालय महालेखाकार (ले. एवं हक.) उत्तराखण्ड,
महालेखाकार भवन, कौलागढ़ देहरादून-248195

महोदय/महोदया,

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-प्रथम) मध्य प्रदेश, ग्वालियर द्वारा प्रकाशित कार्यालयीन पत्रिका "गोपात्री" के 28वें अंक की प्रति प्राप्त हुई। पत्रिका में समाविष्ट रचनाएं सराहनीय हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ भी अत्यंत मनोहर है। राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए व पत्रिका के प्रकाशन हेतु आपका पत्रिका परिवार विशेष बधाई का पात्र है।

"गोपात्री" पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाओं सहित।

भवदीया— मौसमी चौधरी (हिंदी अधिकारी)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार
(लेखापरीक्षा), असम

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका "गोपात्री" के 28वें संस्करण की एक ई-प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में सम्मिलित रचनाएं लेख, कविताएं, प्रेरक प्रसंग इत्यादि उत्कृष्ट, पठनीय और सरल भाषा में हैं। पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी के प्रगतिशील उत्थान हेतु आपके कार्यालय के समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा किया गया प्रयास अति सराहनीय है। पत्रिका में संकलित चित्र और इसकी साज सज्जा भी आकर्षक है।

आशा है कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य तथा आगामी अंक के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीया— वी. चित्रा, हिंदी अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-2),
तमिलनाडु एवं पुदुचेरी, चेन्नई— 600 018

महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित वार्षिक हिंदी पत्रिका "गोपात्री" के 28वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई है। पत्रिका का यह अंक साज-सज्जा एवं मुद्रण स्पष्टता के कारण बहुत ही आकर्षक एवं मनोहारी बन पड़ा है साथ ही पत्रिका में समाविष्ट रचना "पन्ना राष्ट्रीय उद्यान", "वो बूढ़ा बरगद का पेड़" एवं "विश्व वन्यजीव दिवस" बहुत ही आकर्षक हैं। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं अत्यंत रुचिकर एवं ज्ञानवर्धक हैं। पत्रिका के प्रकाशन हेतु संपादक मंडल एवं रचनाकारों का हार्दिक अभिनंदन एवं शुभकामनाएं।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/प्रशासन
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) लखनऊ

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका "गोपात्री" के 28वें अंक की प्राप्ति हुई, जिसके लिए आपको धन्यवाद।

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में मध्य प्रदेश राज्य से संबंधित कई महत्वपूर्ण सूचना सम्मिलित हैं जिससे निश्चित रूप से पाठक-गण लाभान्वित होंगे। प्रत्येक पृष्ठ में दिए गए चित्र पत्रिका को और सुंदर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। पत्रिका की साज-सज्जा अत्यंत आकर्षक है तथा "गोपात्री" के आगामी अंकों के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय- हिंदी अधिकारी
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय), बंगलूरु

महोदय,

उपरोक्त विषय पर आपके द्वारा प्रेषित कार्यालय को वार्षिक हिंदी पत्रिका "गोपात्री" के 28वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई है जिसमें प्रकाशित सभी रचनाएं उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक हैं। आशा है पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ साथ कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के मौलिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक भूमिका निभाएगी। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं।

भवदीय- वरिष्ठ लेखाअधिकारी (हिंदी कक्ष)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले. व ह.)
हिमाचल प्रदेश, शिमला-171 003

महोदय / महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित की गई हिंदी गृह पत्रिका "गोपात्री" के 28वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में सभी लेख, रचनाएं और विचार सरल, पठनीय एवं प्रशंसनीय हैं।

इस पत्रिका को सफल एवं उच्चकोटि की बनाने में योगदान देने वाले सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को हमारे कार्यालय आईसीसा नोएडा की तरफ से हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय— वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी (प्रशासन)
अंतर्राष्ट्रीय सूचना पद्धति एवं लेखापरीक्षा केंद्र
भारत के नियंत्रक और महालेखापरीक्षक का अंतर्राष्ट्रीय प्रशिक्षण केंद्र

महोदय / महोदया,

आपके कार्यालय की वार्षिक हिंदी ई पत्रिका "गोपात्री" के 28वें अंक की प्रति इस कार्यालय को सहर्ष प्राप्त हुई है। पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाएं पठनीय एवं प्रशंसनीय हैं। विभिन्न प्रकार की रचनाओं से सजी आपकी पत्रिका हिंदी कार्यान्वयन की दिशा में एक स्वर्णिम प्रयास है।

पत्रिका के प्रकाशन के सफल प्रयास हेतु शुभकामनाएं।

भवदीय— सरिता (हिंदी अधिकारी)
प्रधान निदेशक रक्षा—वाणिज्यिक लेखापरीक्षा
का कार्यालय, बेंगलूर — 560001

गणतंत्र दिवस 2024 की झलकियां



राज्य लेखापरीक्षा सलाहकार बोर्ड की बैठक की झलकियां



संयुक्त हिंदी परबवाड़ा 2023 की झलकियां



संयुक्त हिंदी पखवाड़ा 2023 की झलकियां



सतर्कता एवं जागरूकता सप्ताह 2023 की झलकियां



कार्यालय में महिला कार्मिकों के सम्मान में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस की झलकियां



कार्यालय में महिला कार्मिकों के सम्मान में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस की झलकियां



गणतंत्र दिवस 2024 पर आयोजित रंगोली प्रतियोगिता की झलकियां



निधि गौतम



माधवी मुजुमदार



अर्चना मानव



वंदना



दीक्षा चौहान



स्वर्णलता गुप्ता



शिवानी यादव



शिखा मलिक





गऊघाटी, नरसिंहगढ़